दैनिक

जयपुर टाइम्स

जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, चुरू, नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

नई सोच नई रफ्तार

jaipurtimes.org
twitter.com/JaipurTimes2
dainikjaipurtimes
youtube.com/c/JaipurTimes
instagram.com/jaipurtimesjt

वर्ष : 10 | अंक : 29 | ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 | जयपुर, मंगलवार 18 फरवरी, 2025 | ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 | ■ मूल्य : 1.5 रुपए | ■ पृष्ठ : 8+2

न्यूज़ इनबॉक्स

दिल्ली में भूकंप के झटके

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-एनसीआर में सोमवार सवेरे भूकंप के तेज भटके महसूस किए गए। भूकंप सवेरे 5.36 बजे आया। भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत भूकंप के रिकॉर्ड करने वाली संस्था- नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के मुताबिक इसकी तीव्रता 4.0 मापी गई।

दहशत में आकर लोग घरों से बाहर निकल आए। भूकंप के झटके इतनी तेज थे कि घरों से बर्तन नीचे गिरने लगे और घरों में जबरदस्त कंपन हुआ। दिल्ली की कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी ने भूकंप के झटकों के बाद अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर सलामती की कामना की।

रोक के बावजूद बुलडोजर कार्रवाई पर 'सुप्रीम' फटकार

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार को नोटिस जारी किया है। इस नोटिस में सुप्रीम कोर्ट ने पूछा है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने कुशीनगर में मस्जिद में तोड़फोड़ करके उनके 13 नवंबर 2024 के आदेश का उल्लंघन किया है। 13 नवंबर 2024 को दिए आदेश में सुप्रीम कोर्ट ने बिना पूर्व नोटिस और दूसरे पक्ष को सुने बिना तोड़फोड़ कार्रवाई पर रोक लगा दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल कुशीनगर मामले में आगे किसी भी तरह की तोड़फोड़ कार्रवाई पर रोक लगा दी है।

सुप्रीम कोर्ट ने कार्रवाई से जताई नाराजगी

जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस एजी मसीह की पीठ ने उत्तर प्रदेश सरकार को कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए पूछा कि क्यों ने संबंधित अधिकारियों के खिलाफ अदालत की अवमानना करने के लिए कार्रवाई की जाए? सुप्रीम कोर्ट ने

याचिका पर आदेश पारित करते हुए कुशीनगर मामले में आगे किसी भी तरह की तोड़फोड़ कार्रवाई पर रोक लगा दी है। गौरतलब है कि कुशीनगर जिले में प्रशासन ने मदनी मस्जिद के एक हिस्से में तोड़फोड़ की है। आरोप है कि मस्जिद का निर्माण जमीन पर अतिक्रमण करके किया गया।

इस महीने की शुरुआत में प्रशासन ने बुलडोजर से मस्जिद के कथित अवैध हिस्से को गिरा दिया। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि जांच में पता चल गया था कि मस्जिद के निर्माण में कोई अतिक्रमण नहीं हुआ है और एसडीएम की रिपोर्ट में इसका जिक्र है। इसके बावजूद कार्रवाई की गई। याचिकाकर्ता का आरोप है कि उस पर दबाव बनाने के लिए उसके खिलाफ फर्जी एफआईआर दर्ज की गई। याचिकाकर्ता ने याचिका में दावा किया कि प्रशासन ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवमानना की है। साथ ही तोड़फोड़ से पहले प्रशासन ने याचिकाकर्ता को अपना पक्ष रखने का भी मौका नहीं दिया। याचिकाकर्ता ने किसी भी तोड़फोड़ कार्रवाई पर तत्काल रोक लगाने और तबाह किए गए हिस्से के पुनर्निर्माण या मुआवजा देने की मांग की है।

मध्य, पश्चिम व उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

हिंदी राजभाषा के साथ ही हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय एकता की है प्रतीक : भजनलाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि हिंदी को बढ़ावा देना हम सभी की जिम्मेदारी है क्योंकि यह हमारे मन की अभिव्यक्ति का स्वरूप है। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय एकता की प्रतीक भी है। हम सभी का कर्तव्य है कि हम हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हर संभव प्रयास करें क्योंकि यह केवल एक संवैधानिक निर्देश ही नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय आवश्यकता भी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की ओर से जयपुर के सीतापुरा स्थित जेईसीसी में आयोजित मध्य पश्चिम व उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी के सम्मान, प्रयोग और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करते हुए हमें हर स्तर पर, हर क्षेत्र में इसे प्रोत्साहित करना चाहिए। यही हमारी असल पहचान है। उन्होंने कहा कि हिंदी भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकती है।

केन्द्रीय गृहमंत्री के नेतृत्व में देश की आन्तरिक सुरक्षा हुई मजबूत

हिंदी भाषा हमारी संस्कृति, सोच और विचारों का सशक्त रूप

मुख्यमंत्री ने डिजिटल युग में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के तकनीकी युग में हिंदी को डिजिटल प्लेटफार्मों पर भी समाहित करना आवश्यक है। इस सम्मेलन में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के नवीनतम तरीकों और सुविधाओं के बारे में जानकारी प्रदान की जा रही है, जो सराहनीय कार्य है। उन्होंने कहा कि हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति, सोच और विचारों का सशक्त रूप है। हमारे प्रदेश में हिंदी का प्रशासनिक क्षेत्र में व्यापक प्रयोग हो रहा है। राजकीय विभागों में हिंदी के मानक प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। शर्मा ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय के नेतृत्व में गृह मंत्रालय ने देश की आंतरिक सुरक्षा और सामाजिक समरसता के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किए हैं। इनके नेतृत्व ने न केवल हमारी सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ किया है बल्कि देश में आंतरिक सुरक्षा को लेकर अगाध विश्वास पैदा किया है। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने वाले पुरुस्कृत सभी संस्थानों और व्यक्तियों को बधाई देते हुए कहा कि इन सभी का योगदान हिंदी के प्रति हमारे लगाव को और मजबूत करता है।

उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि हिंदी भारत में ही नहीं नेपाल, सूरीनाम, फिजी, मारीशस, और गुयाना के साथ ही दूसरे बहुत से देशों में समान रूप से लोकप्रिय है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी ने पूरे देश में राष्ट्र प्रेम और स्वाभिमान की भावना जागृत करने में अमूल्य योगदान दिया था। उन्होंने भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों का अनुवाद हिंदी में और हिंदी की श्रेष्ठ कृतियों का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में किए जाने पर बल दिया जिससे भाषा सद्भाव के साथ राष्ट्रीय एकता की भावना और मजबूत किया जा सके। सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाएं और राजभाषा हिंदी एक-दूसरे के प्रतिद्वंदी नहीं बल्कि एक-दूसरे की पूरक हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए जिससे जनहित की योजनाओं का लाभ आमजन तक सही मायने में पहुंचे। उन्होंने सम्मेलन का जयपुर में आयोजन करने के लिए जयपुर वासियों की ओर से आभार प्रकट भी किया।

केन्द्रीय राजभाषा विभाग की सचिव अंशुली आर्या ने कहा कि क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों के आयोजन का उद्देश्य देश में राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि और भारतीय भाषाओं की समृद्धि से आत्मनिर्भर और विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि लोगों को अब यह अहसास होने लगा है कि हमारा स्वाभिमान, संस्कृति और भाषा परस्पर जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन हमें अपनी विशिष्ट भाषाई विरासत पर गर्व करते हुए अपने संविधान निर्माताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का माध्यम भी बना है। इस अवसर पर सरकारी कामकाज में हिंदी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले मध्य, पश्चिम तथा उत्तर भारत के केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत भी किया गया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने राजभाषा विभाग की ओर से आयोजित प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव डॉ. मीनाक्षी जौली, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष सहित 16 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों से केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों व उपक्रमों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

राजभाषा हिंदी देश की एकता की सूत्रधार

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने अपने संबोधन में कहा कि हमें देश की सभी भाषाओं का मान-सम्मान रखते हुए हिन्दी को राष्ट्रीय बोलचाल की भाषा बनाने के लिए प्रयास करना होगा। राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारी एकता का सूत्रधार है। उन्होंने कहा कि भाषा मानव समाज और देश की अंतः शक्ति है। यदि हम भाषा को उसके सीमित रूप में देखें तो यह केवल संप्रेषण का माध्यम मात्र है लेकिन यदि राष्ट्र के संदर्भ में देखा जाए तो भाषा और संस्कृति किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है जिसमें देशवासी संवाद करते हैं।

केन्द्र सरकार राजभाषा को समृद्ध और सक्षम बनाने के लिए कर रही निरंतर काम

राय ने कहा कि जनकल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों को आखिरी सिरे तक पहुंचाना सरकारी तंत्र की सफलता की कसौटी है। हमारा लोकतंत्र तभी फल फूल सकता है जब हम जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुंचाएं और इसमें कोई संदेह नहीं कि राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा हिंदी इस जिम्मेदारी को बखूबी निभा रही है। उन्होंने कहा कि हमें व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जन भाषा के बीच दूरी को पाटना होगा ताकि देश का हर नागरिक देश की प्रगति से जुड़ सके। उन्होंने कहा कि देश भर में राजभाषा को समृद्ध और सक्षम बनाने एवं भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ाने के लिए बीते 10 वर्षों में महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं।

दिया कुमारी कल करेगी बजट पेश, सरकार इन चुनौतियों का रखेगी ध्यान

जयपुर टाइम्स

जयपुर (कासं.)। प्रदेश की भजनलाल सरकार 19 फरवरी को अपने कार्यकाल का दूसरा बजट पेश करेगी। प्रदेश की वित्त मंत्री दीया कुमारी विधानसभा में बजट पेश करेंगी। प्रदेश के इस बजट में कई अन्य चुनौतियों के बीच पांच ऐसी बड़ी चुनौतियां होंगी, जिनके लिए सरकार को खासी मशक्कत करनी पड़ सकती है।

युवाओं को रोजगार

भजनलाल सरकार ने 5 साल में 4 लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने का वादा किया है। पहले साल में करीब 60 हजार वैकेंसी निकाली गई हैं लेकिन जिस रफ्तार से बेरोजगारी बढ़ रही है, रोजगार के अवसर और ज्यादा बढ़ाने होंगे। सरकार के सामने सबसे पहली और सबसे बड़ी चुनौती यही है।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कमी

प्रदेश में पेट्रोल डीजल की कीमतों को लेकर मुद्दा अब भी कायम है। पड़ोसी राज्यों के मुकाबले राजस्थान में पेट्रोल-डीजल की कीमतें काफी अधिक हैं। बजट में इसमें राहत मिलती है या नहीं यह देखने वाली बात होगी। यदि इस पर कोई बदलाव नहीं आता है तो विपक्ष इस मामले में सरकार को घेर सकता है।

कर्ज की बढ़ती रफ्तार को रोकना

राजस्थान तेजी से कर्ज की राह पर बढ़ रहा है। प्रदेश में साढ़े 6 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का कर्ज हो चुका है।

सरकारी कंपनियों पर ही 1 लाख करोड़ से ज्यादा का कर्ज है। यानी कुल मिलाकर प्रति व्यक्ति लगभग 85 हजार रुपए का कर्ज है। इसे कैसे कम किया जाए, यह बड़ी चुनौती होगी।

पेंडिंग भुगतानों को पूरा करना

मौजूदा भजनलाल सरकार में पुराने भुगतानों की पेंडेंसी भी बड़ा मुद्दा रही है। चाहे सोशल सेक्टर में पेंशन हो, बेरोजगारी भत्ता हो या फिर पंचायतों को मिलने वाली ग्रांट हो। सभी भुगतान डिले हो रहे हैं।

लॉरेंस गैंग ने दी जिला परिषद सदस्य को जान से मारने की धमकी !

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर क्षेत्र के जिला परिषद सदस्य तिलोकाराम कस्वां को जान से मारने की धमकी मिली है। पुलिस के अनुसार तिलोकाराम कस्वां ने थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है कि मोबाइल न. 88171-00438 से किसी अजनबी व्यक्ति का कॉल आया उसने शुरूआत में मुझे कहा कि तिलोकाराम बोल रहे हो क्या, तो मेरे हां करते ही उसने गाली गलौज से शुरुआत की। उसने कहा कि सन्तोष मठिया कोहिणा के खिलाफ आप दूसरे पक्ष के लडको को पक्ष में लेकर मुकदमें में फंसाना चाह रहे हो, आप सम्भल जाओ वरना इसका परिणाम भुगतना पडेगा। मैने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम गोविन्द सिह विश्नोई लॉरेंस गैंग का बताया। बाद में वह बोला कि तु कहां है, तुम्हारे सभी हिसाब करेंगे तो मैने कॉल काट दी। फिर 5 मिनट बाद में दुबारा कॉल आई। मैने कॉल रिसिव की तो उसने गाली देते हुए मारने की धमकी दी, मैने फिर कॉल काट दी। उसके बाद मेरे मोबाईल पर कई कॉल आई परन्तु मैने कॉल रिसीव नही किए, पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

तहसीलदार और बैंक मैनेजर भ्रष्ट, लेकिन एसीबी है उत्कृष्ट

15 लाख रुपए की रिश्वत लेते 2 तहसीलदार, 15 हजार की रिश्वत लेते बैंक मैनेजर गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

जैसलमेर(एजेंसी) । जयपुर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने जैसलमेर में बड़ी कार्रवाई करते हुए जिले के दो तहसीलदारों को रिश्वत लेते हुए ट्रैप किया है। वहीं जोधपुर के ओसियां में एक बैंक मैनेजर को भी रिश्वत लेते पकड़ा है। भणियाणा तहसीलदार सुमित्रा गोदारा और फतेहगढ़ तहसीलदार शिवप्रकाश शर्मा को 15 लाख रुपए की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि दोनों अधिकारियों ने रजिस्ट्री और नामांतरण खोलने की एवज में कुल 60 लाख रुपये की रिश्वत मांगी थी।

ओसियां में बैंक मैनेजर निकला भ्रष्ट, 15 के आंकड़ों पर 17 को हो गया खतराः

सीबीआई की टीम ने जोधपुर के ओसियां में बड़ी कार्रवाई की है। सीबीआई ने यहां एक बैंक मैनेजर को रिश्वत लेते हुए ट्रैप किया है। बताया जा रहा है कि बैंक मैनेजर बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा में कार्यरत है, सीबीआई ने उसे ट्रैप किया है। खबर के मुताबिक, बैंक ऑफ बड़ौदा के ओसियां शाखा के बैंक मैनेजर विवेक देवड़ा को सीबीआई की टीम ने ट्रैप किया है। सीबीआई की टीम ने बैंक मैनेजर को 15 हजार रुपए रिश्वत लेते ट्रैप किया है।

15 के आंकड़ों में फंस गए तीनों भ्रष्ट कार्मिक

खुफ़िया तरीके से दिया कार्रवाई को अंजामः

जानकारी के मुताबिक़ ट्रैप की पूरी कार्रवाई भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की जयपुर टीम ने की है। यहां जैसलमेर की टीम को इस ट्रैप की कोई खबर नहीं थी। पूरे घटनाक्रम को काफी खुफ़िया तरीके से किया गया था। जिसमें दोनों तहसीलदार फंस गए।

सोलर कम्पनी की रजिस्ट्री के लिए रिश्वतः

जानकारी के मुताबिक दोनों तहसीलदारों ने सोलर कम्पनी की रजिस्ट्री करवाने के लिए रिश्वत की मांग की थी। जिसके बाद निजी कम्पनी के मालिक मुकेश ने दोनों अधिकारियों से परेशान होकर एसीबी की शरण ली थी। लम्बे समय से भणियाणा और फतेहगढ़ में सोलर प्लांट लगाने के लिए रजिस्ट्री और नामांतरण खोलने के लिए मुकेश चक्कर काट रहा था।

योजना बना कर बिछाया ट्रैप :

इस कार्रवाई का नेतृत्व एसीबी एएसपी पुष्पेंद्र सिंह ने किया है। जबकि एसीबी डीजी रवि प्रकाश मेहरड़ा के निर्देशन में ऑपरेशन को अंजाम दिया गया। टीम ने पहले से योजना बनाकर ट्रैप बिछाया और रंगे हाथों रिश्वत लेते हुए दोनों तहसीलदारों को गिरफ्तार कर लिया। इस मामले की विस्तृत जांच जारी है और आगे भी एसीबी की ओर से कड़ी कार्रवाई की संभावना जताई जा रही है।

जमीन के एवज में मांगी थी रिश्वतः

बताया जा रहा है कि बैंक ऑफ बड़ौदा के ओसियां शाखा के बैंक मैनेजर विवेक देवड़ा ने जमीन की केसीसी देने के एवज में रिश्वत की मांग की थी। वहीं इसके बारे में सीबीआई को पहले से शिकायत की गई थी। सीबीआई की टीम ने इस मामले में संज्ञान लिया और बैंक मैनेजर विवेक देवड़ा को ट्रैप करने की कार्रवाई की गई। वहीं अब मैनेजर को 15 हजार की रिश्वत लेते पकड़ा गया है। बताया जा रहा है कि अब सीबीआई बैंक मैनेजर समेत अन्य के खिलाफ भी जांच कर रही है। वहीं सीबीआई इस मामले में आय से अधिक संपत्ति के मामले में भी जांच शुरू कर सकती है। बताया जा रहा है कि बैंक मैनेजर के अन्य ठिकानों को भी खंगाला जा

आरपीएससी ने लिया सोशल मीडिया में वायरल वीडियो पर संज्ञान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान लोक सेवा आयोग की ओर से प्रतियोगी परीक्षा के संचालक के सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो के संबंध में संज्ञान लिया गया है। आयोग के मुख्य परीक्षा नियंत्रक आशुतोष गुप्ता ने बताया कि 15 फरवरी को जितेन्द्र यादव नाम

के व्यक्ति की ओर से आरएएस मुख्य परीक्षा पर प्रोफेसर ने किया जबरदस्त खुलासा शीर्षक से एक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित किया गया है। इस वीडियो में तथाकथित विशेषज्ञ को कथित रूप से आरएएस मुख्य परीक्षा का मूल्यांकनकर्ता बताते हुए वार्तालाप किया गया है। यह कृत्य न केवल संबंधित विशेषज्ञ की ओर से आयोग में दिए गए वचन-पत्र का ही उल्लंघन है बल्कि इसी क्रम में आयोग की गोपनीयता को भंग करने से निम्नलिखित धाराओं के अंतर्गत आपराधिक कृत्य भी कारित हुआ है।

(1) राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (मेजर्स फॉर प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स इन रिक्रूटमेंट) अधिनियम, 2022 की धारा 5/10

(2) भारतीय न्याय संहिता की धारा 61 (क्रिमिनल कॉन्सपिरेसी)

(3) भारतीय न्याय संहिता की धारा 316 (क्रिमिनल ब्रीच ऑफ ट्रस्ट)

(4) आईटी एक्ट, 2000 की धारा 67 (सी) सपठित 2 (डब्ल्यू) धारा 72 एवं 72 ए

आयोग की और से सर्वसाधारण एवं कोचिंग संस्थानों को आगाह भी किया जाता है कि भविष्य में इस प्रकार का कृत्य नहीं करें अन्यथा नियमानुसार आपराधिक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

आरएएस मुख्य परीक्षा पर प्रोफेसर ने किया जबरदस्त खुलासा%% शीर्षक से एक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित किया गया है। इस वीडियो में तथाकथित विशेषज्ञ को कथित रूप से आरएएस मुख्य परीक्षा का मूल्यांकनकर्ता बताते हुए वार्तालाप किया गया है। यह कृत्य न केवल संबंधित विशेषज्ञ की ओर से आयोग में दिए गए वचन-पत्र का ही उल्लंघन है बल्कि इसी क्रम में आयोग की गोपनीयता को भंग करने से निम्नलिखित धाराओं के अंतर्गत आपराधिक कृत्य भी कारित हुआ है।

(1) राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (मेजर्स फॉर प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स इन रिक्रूटमेंट) अधिनियम, 2022 की धारा 5/10

(2) भारतीय न्याय संहिता की धारा 61 (क्रिमिनल कॉन्सपिरेसी)

(3) भारतीय न्याय संहिता की धारा 316 (क्रिमिनल ब्रीच ऑफ ट्रस्ट)

(4) आईटी एक्ट, 2000 की धारा 67 (सी) सपठित 2 (डब्ल्यू) धारा 72 एवं 72 ए

आयोग की और से सर्वसाधारण एवं कोचिंग संस्थानों को आगाह भी किया जाता है कि भविष्य में इस प्रकार का कृत्य नहीं करें अन्यथा नियमानुसार आपराधिक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

पांच दिवसीय शिव-पार्वती विवाह महोत्सव 22 से, होंगे अनेक धार्मिक आयोजन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। एकलिंग महादेव मंदिर का अलवर में 5 दिवसीय शिव-पार्वती विवाह महोत्सव 22 फरवरी से 26 फरवरी तक धूमधाम से मनाया जाएगा।

शिव पार्वती परिवार के महंत पुष्कर नारायण त्रिवेदी ने बताया कि 5 दिवसीय शिव-पार्वती विवाह महोत्सव कार्यक्रम की शुरुआत 18 फरवरी मंगलवार को प्रातः 9.15 बजे गणेश गौरी निमंत्रण के साथ होगी। वहीं कार्यक्रम के तहत 22 फरवरी शनिवार को लग्न सायं सवा 5 बजे अट्टा मंदिर के सामने श्री नागेश्वर मंदिर से एकलिंग महादेव मंदिर, मन्नी का बड़, तथा 23 फरवरी रविवार को महाआरती एवं कन्या पूजन सायं सवा 7 बजे (एकलिंग महादेव मंदिर, मन्नी का बड़) 24 फरवरी सोमवार को किन्नर पूजन एवं भोले बाबा का नगर भ्रमण व कंगन डोरे सायं 5.15 बजे ज्योतिराव फुले सर्किल जय अम्बे मैरिज होम मंदिर परिसर से एकलिंग महादेव मंदिर) 25 फरवरी मंगलवार को हल्दी, मेहंदी एवं भजन संगीत सायं 6.15 बजे (एकलिंग महादेव मंदिर, मन्नी का बड़) एवं 26 फरवरी बुधवार को जेगड पूजन प्रातः सवा 9 बजे नयाबास बीज गोदाम के सामने (रितुश ब्यूटी पार्लर) से एकलिंग महादेव मंदिर तक एवं बारात माता चुन्नी स्वागत सायं सवा 6 बजे घंटाघर शिव मंदिर से एकलिंग महोदव मंदिर में किया जाएगा। इसके साथ ही वरमाला महोत्सव रात्रि सवा 9 बजे एकलिंग महादेव मंदिर परिसर में किया जाएगा।

मेडिकल दुकान संचालक पर हमला करने वाले दो पकड़े

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। शहर के शिवाजी पार्क थाना क्षेत्र में तिजारा फाटक पुलिया के पास मेडिकल दुकान संचालक पर हमला करने वाले दो जनों को पुलिस गिरफ्तार किया है। थाने के एएसआई दयाराम ने बताया कि 13 फरवरी को आरोपी अभिनव पुत्र दिनेश बंसल निवासी बुध विहार हाल निवासी एमआईए व कुलदीप पुत्र दिनेश छिपा निवासी तिजारा फाटक जिनकी तिजारा रोड पर एक मेडिकल संचालक से पुरानी रंजिश थी। जिसके चलते मेडिकल संचालक पर हमला किया। बीच बचाव में आए अन्य युवक पर पेपर कटर से हमला कर दिया। जिससे वह गंभीर घायल हो गया। इसके बाद पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। अब रिमांड पर लेकर कोर्ट में पेश किया जाएगा।

अकबरपुर के बस स्टैंड के पास नवजात जिंदा शिशु मिलने से मची अफरा-तफरी

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। अकबरपुर थाना अंतर्गत ममता को शर्मसार करने वाली एक घटना सामने आई है। जब एक कलयुगी मां नवजात शिशु को कचरे में पटक गई जबकि मां को भगवान का दर्जा दिया जाता है। नवजात मासूम की सांसे चल रही है, जिसका उपचार अस्पताल में जारी है।

गाँव वालो ने बताया कि घटना अकबरपुर बस स्टैंड की है जहा पर नवजात शिशु एक पंचर की दुकान के समीप पड़ी हुई मिली थी जहां दुकानदार ने अपना पंचर का खोखा खोला और वह पीछे गया उसे अचानक नवजात शिशु पड़ी हुई दिखाई दी आसपास लोगों को बताने पर वहां भीड़ जमा हो गई ग्रामीण तुरंत पुलिस वाले को सूचना दी जहां अकबरपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर नवजात शिशु को अकबरपुर अस्पताल लेकर पहुंची और उसका उपचार कराया। पुलिसकर्मी राकेश कुमार ने बताया कि सूचना मिली कि पंचर वाले के खोखे के समीप गए लड़की का नवजात शिशु जो जिंदा अवस्था में मिला है। जहां पहुंचे और अकबरपुर अस्पताल में उपचार के लिए ले गए।

महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन मंगलवार को

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय कोटपूतली के स्थानीय सेवा केन्द्र पर मंगलवार को महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। केंद्र प्रभारी बीके लक्ष्मी बहन ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक हंसराज पटेल होगें। वहीं कार्यक्रम में एसडीएम बृजेश कुमार चौधरी, जयपुर सब जोन इंचार्ज राज योगिनी बीके सुषमा बहन समेत अन्य अतिथि भी शिरकत करेगें। इस अवसर पर नन्हें मुन्ने बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायेगें।

नगर निगम ग्रेटर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्यवाही, 2 केन्टर सामान जब्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देषानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में सोमवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में टोंक रोड़ गांधी नगर सर्किल से लेकर एयरपोर्ट होते हुए सीतापुरा इण्डस्ट्रिज एरिया तक एवं जयपुर विकास प्राधिकरण के साथ संयुक्त कार्यवाही करते हुए गांधीपथ पश्चिम तक अस्थाई अतिक्रमण को करने वालों के विरूद्ध 02 केन्टर सामान जब्त किया गया।

उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में उपरोक्त कार्यवाही के दौरान टोंक रोड़ गांधी नगर सर्किल से लेकर एयरपोर्ट होते हुए सीतापुरा इण्डस्ट्रिज एरिया तक 02 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया व मौके पर अस्थाई अतिक्रमण करने वालों से मौके पर कार्यवाही के दौरान सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाईश करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर ग्रेटर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरूद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी।

पीएचसी रघुनाथपुरा को सीएचसी में क्रमोन्नत कराने की माँग, मुख्यमंत्री को भेजा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। ग्राम रघुनाथपुरा अग्रवाल सेवा समिति के अध्यक्ष एड. दिनेश कुमार अग्रवाल ने रघुनाथपुरा पीएचसी को सीएचसी में क्रमोन्नत कराने की मांग को लेकर मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा। ज्ञापन में लिखा है कि रघुनाथपुरा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एनएच 48 पर स्थित है। जिसकी स्थापना सन् 1962 में की गई थी।

रीट पात्रता परीक्षा 2024 की तैयारियों के संबंध में बैठक आयोजित

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर के दिशा-निर्देशों एवं गाइडलाइन की शत-प्रतिशत पालना कराने के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर बीना महावर की अध्यक्षता में कलक्ट्रेट के वीसी कक्ष में रीट पात्रता परीक्षा 2024 के तहत जिले में आयोजित होने वाली परीक्षा के सफल आयोजन की तैयारियों के संबंध में बैठक आयोजित हुई।

इस दौरान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित वीसी में समस्त जिलों को परीक्षा के सफल आयोजन कराए जाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

एडीएम शहर महावर ने कहा कि रीट पात्रता परीक्षा 2024 के तहत 27 एवं 28 फरवरी को जिले में विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर भर्ती परीक्षा आयोजित होगी, अतः परीक्षा के सफल आयोजन के लिए संबंधित अधिकारी आपसी समन्वय स्थापित करते हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर के दिशा-निर्देशों एवं गाइडलाइन की शत-प्रतिशत पालना सुनिश्चित करावें । उन्होंने बताया कि राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा 27 एवं 28 फरवरी को तीन पारियों में सम्पन्न होगी। परीक्षा के लिए अलवर जिला मुख्यालय एवं उपखण्ड मालाखेडा व रामगढ में 74 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें 25 राजकीय परीक्षा केंद्र एवं 49 निजी परीक्षा केंद्र है। इन परीक्षा केंद्रों पर 22 हजार 59 परीक्षार्थियों की बैठक व्यवस्था है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक 10 केंद्रों पर एक एरिया सतर्कता दल, प्रत्येक 5 परीक्षा केंद्र पर एक जोनल सतर्कता दल, 74 पेपर कॉर्डिनेटर दल, 25 ओएमआर कम फ्लाइंग दल एवं 74 फील्ड सुपरवाइजर दल नियुक्त किए गए हैं।

उन्होंने बताया कि परीक्षा नियंत्रण कक्ष मिनी सचिवालय अलवर स्थित अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर कार्यालय के कमरा नं. 122 में 25 फरवरी से 28 फरवरी तक प्रातः 6 बजे से परीक्षा समाप्ति पश्चात परीक्षा सामग्री जिले से रीट कार्यालय अजमेर के लिए रवाना होने तक संचालित होगा। नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नंबर 0144-2345077 हैं। उन्होंने बताया कि परीक्षा केंद्र पर परीक्षार्थियों का एक घण्टे पूर्व प्रवेश बंद कर दिया जाएगा।

बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण डॉ. प्रियंका, सीएमएचओ डॉ. योगेन्द्र शर्मा, डीईओ एवं एडीपीसी समसा मनोज शर्मा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

जलदाय विभाग द्वारा 14 अवैध जल कनेक्शनों को किया विच्छेद

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। अलवर शहर में अवैध जल सम्बन्धों को चिन्हित कर विच्छेद करने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत कुल 14 अवैध जल कनेक्शनों को विच्छेद किया गया। जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियन्ता रमेश सैनी ने बताया कि शहर के विकास पथ व मालन की गली से 3 अवैध जल संबंध, चकलबूंदी मोहल्ला से 5, मोती डूंगरी से 2, दूसर के पास से 2 एवं नयाबास से 2 अवैध जल संबंधों को विच्छेद किया गया।

निःशुल्क कोचिंग हेतु इच्छुक छात्र 23 फरवरी तक करें आवेदन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजनान्तर्गत विभाग के ऑनलाइन पोर्टल पर सूचीबद्ध कोचिंग संस्थानों में निःशुल्क कोचिंग करने हेतु इच्छुक छात्र 23 फरवरी तक आवेदन कर सकते हैं।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक लक्ष्मण सिंह ने बताया कि प्रोफेशनल कोर्स हेतु आयोजित प्रवेश परीक्षाओं एवं सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी उत्कृष्ट ढंग से कराने एवं समान अवसर प्रदान के लिए विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए ऑनलाइन आवेदन कराए जा रहे हैं। इच्छुक छात्र अपना आवेदन एसएसओ पोर्टल के द्वारा SJMS APP पर 23 फरवरी 2025 तक आवेदन कर सकते हैं। आवेदन हेतु पात्रता एवं शर्तें, सामान्य दिशा-निर्देशों का विस्तृत विवरण विभाग की वेबसाइट http://sje.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

दो दिवसीय संत्रात वाकपीठ संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निस)। शिक्षा विभाग की ओर से सोमवार को राउमावि विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की दो दिवसीय संत्रात वाक्पीठ संगोष्ठी का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल विद्यालय खोह दरीबा में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी लीलावती मीना के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुई। वाक्पीठ संगोष्ठी का शुभारंभ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलित व माल्यार्पण तथा स्वामी विवेकानंद की की मूर्ति पर माल्यार्पण कर किया गया। संगोष्ठी में राउमावि राजौरगढ़ के प्रधानाचार्य मनफूल सिंह ने विद्यालय में नकारा एवं अनुपयोगी सामान की नीलामी प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी दी। वहीं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीचंदपुरा के प्रधानाचार्य कमलेश कुमार गुप्ता ने विभिन्न प्रकार की विभागीय जांच के बारे में जानकारी दी। राउमावि भजेड़ा के प्रधानाचार्य मनोज कुमार शर्मा ने आरटीआई तथा राजस्थान संपर्क पोर्टल शिकायत के निस्तारण प्रक्रिया, महात्मा गांधी राजकीय बालिका विद्यालय टहला के प्रधानाचार्य लवकुश शर्मा ने शिक्षा विभाग द्वारा बालिकाओं के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकार, छात्र कल्याण कोष की जानकारी दी।

जिला कलक्टर की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

खैरथल तिजारा(निस)। जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में विभिन्न विभागों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई।

उन्होंने संपर्क पोर्टल पर लंबित चल रहे परिवादों का समय पर निस्तारण कर आमजन को राहत पहुंचाने एवं एवरेज डिस्पोजल टाइम में सुधार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आमजन को बार बार कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़े, यह सुनिश्चित करते हुए स्थानीय स्तर पर ही संवेदनशीलता के साथ नियमानुसार शीघ्र कार्यवाही करते हुए परीवादों का गुणवत्तापूर्ण निपटारा करें व पोर्टल पर भी जानकारी अपडेट करे।

जिला कलक्टर ने बजट घोषणा 2024-25 की सभी घोषणाओं को 28 फरवरी से पूर्व पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान उन्होंने बजट घोषणा 2025-26 हेतु सभी विभागों से आगामी वर्ष हेतु प्रस्तावित कार्यों के प्रस्ताव मांगे। उन्होंने नगर परिषद के अधिकारियों को सफाई अभियान की निरंतर मॉनिटरिंग करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने पशुपालन अधिकारी को मंगला पशु योजना में पंजीकरण की समीक्षा कर निर्धारित लक्ष्य को शत प्रतिशत पूरा करने का निर्देश दिए।

जिला कलक्टर ने पीएचईडी को नियमित रूप से शुद्ध पेयजल आपूर्ति बनाये रखने, जेजेएम के तहत लक्ष्यानुरूप नल कनेक्शन पूर्ण करने के लिए कहा। उन्होंने समाज कल्याण विभाग को पालनहार व पेंशन सत्यापन शत प्रतिशत पूर्ण करने, विद्युत विभाग को विभागीय योजनाओं के अनुसार पात्र लोगों को लाभान्वित करने एवं प्रस्तावित जीएसएस की प्रगति की समीक्षा भी की। उन्होंने बिजली सप्लाई एवं ट्रांसफार्मर बदलने की अवधि की जानकारी प्राप्त कर तय समय सीमा के भीतर ट्रांसफार्मर बदलने एवं सुचारू सप्लाई उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

उन्होंने चिकित्सा विभाग को मौसमी बीमारियों की रोकथाम की निरन्तर मॉनिटरिंग करते हुए अस्पतालों में सुविधाऐं बढाने, मरीजों को सरकारी योजनाओं का लाभ देने के निर्देश दिए।

बैठक के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, अधिशासी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग आदेश, समाज कल्याण अधिकारी रमेश दहमीवाल, नगर परिषद खैरथल आयुक्त मुकेश शर्मा, कोऑपरेटिव, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.अरविंद गेट, एलडीएम अनुपम नैथानी, जेएमएमओ संदीप कुमार मीणा, सहायक अभियंता वाटरशेड छत्रपाल, इरिगेशन, राजीविका, बिजली, कृषि, वन, ट्रांसपोर्ट, शिक्षा, सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

जलदाय मंत्री ने कहा, ग्रामीणों से पूछकर कराएं जाएंगे गांवों में विकास कार्य

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भूजल विभाग मंत्री श्री कन्हैया लाल चौधरी सोमवार को मालपुरा क्षेत्र के दौरे पर रहे। इस दौरान कैबिनेट मंत्री चौधरी ने ग्राम पंचायत देशमा व मलिकपुर में जनप्रतिनिधि आपके द्वार कार्यक्रम के तहत जनसुनवाई की।

जलदाय मंत्री ने ग्रामीणों को मनरेगा में अपना खेत अपना काम, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, पीएम किसान सम्मान निधि योजना, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना, खाद्य सुरक्षा योजना समेत केंद्र व राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए ग्रामीणों को अधिक से अधिक योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि उपखंड मालपुरा के गांवों में शुद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण पेयजल उपलब्ध कराने के लिए 275 करोड़ की पेयजल परियोजना शीघ्र धरातल पर आएगी।

चौधरी ने कहा कि वे क्षेत्र में लोगों की समस्याएं सुनने के लिए आए हैं। ग्रामीण अपनी समस्या लिखित रूप से दें आगामी 15 दिन में इन समस्याओं का समाधान किया जाएगा। जिन समस्याओं का नियमानुसार समाधान किया जाना संभव नहीं होगा, इसकी सूचना परिवादी को दी जाएगी। उन्होंने कहा कि गांवों में विकास कार्यों को ग्रामीणों से पूछकर कराएं जाएंगे। इसलिए प्राथमिकता के आधार पर अपने काम बताएं, ताकि उन्हें चरणबद्ध रूप से पूरा कराया जा सके।

जनसुनवाई के दौरान देशमा में सरपंच रामचरण जाट ने देशमा से बरोल मोड व देशमा से गनवर तक डामरीकरण सड़क बनाने, इस्लाम नगर विद्यालय में खेल मैदान की भूमि का आवंटन करने, डिग्गी से देशमा एवं देशमी गांव की विद्युत लाइनों में बार-बार फॉल्ट आने की समस्या के बारे में बताया।

जनसुनवाई में ग्राम मलिकपुर में ग्रामीणों की ओर से ग्राम विकास अधिकारी पर लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं देने पर कैबिनेट मंत्री ने ग्राम विकास अधिकारी को कार्यप्रणाली में सुधार लाने के निर्देश दिए। इस दौरान तहसीलदार पवन मातवा, विकास अधिकारी अभिमन्यु पूनिया, बीसीएमएचओ डॉ. संजीव चौधरी सहित सभी ब्लॉक स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे। सरपंच रामचरण जाट के नेतृत्व में ग्रामीणों ने कैबिनेट मंत्री का 51 किलो की माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। कैबिनेट मंत्री ने देशमा में ग्राम पंचायत द्वारा बनाई गई लाइब्रेरी एवं विधायक मद से स्वीकृत विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण किया।

विद्यार्थियों को समाज कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। यहाँ के राजकीय एलबीएस पी.जी. महाविधालय में सोमवार को महिला प्रकोष्ठ के अन्तर्गत छात्राओं के हित में समाज कल्याण विभाग द्वारा जारी विभिन्न योजनाओं की जानकारी विद्यार्थियों को दी गई। समाज कल्याण विभाग द्वारा शैक्षिक विकास, आर्थिक विकास, समाज कल्याण, सामाजिक सुरक्षा एवं विशेष सक्षम व्यक्ति क्षेत्र में दी जाने वाली सहायता के बारें में बताते हुये संयोजिका प्रो. शोभा जौहरी ने पात्रता सम्बन्धी जानकारी के बारे में भी विस्तार से समझाया। सम्बन्धित योजनाओं हेतु कब व कैसे आवेदन करना चहिये एवं सहायता राशि की प्राप्त होने की जानकारी प्रो. जौहरी ने पी.पी.टी. के माध्यम से दी। प्राचार्य प्रो. आर. के. सिंह ने छात्राओं का ध्यान इन योजनाओं की ओर आकृष्ट किया एवं आग्रह किया की समाज में पात्र महिला अथवा छात्राओं को इन योजनाओं से अवगत करायें। महिला प्रकोष्ठ समिति सदस्य प्रो. मधु नागर, अनुभा गुप्ता, प्रो. प्रीति गुप्ता, सुमन पूनिया,ज्योति पाठक, डॉ. बबीता, प्रो. पदमा मीणा ने छात्राओं को प्रेरित किया।

जिस क्षेत्र के लोग शिक्षित होंगे, उस क्षेत्र का विकास कोई नहीं रोक सकता - राधा पटेल

- मानवस्थली स्कूल के वार्षिकोत्सव एवं पुरूस्कार वितरण समारोह का आयोजन
- विद्यार्थियों ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। कस्बे के मौहल्ला बड़ाबास स्थित मानवस्थली विद्या मंदिर सीनियर सैकेंडरी स्कूल का वार्षिकोत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह धूमधाम से मनाया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विधायक प्रतिनिधि राधा देवी पटेल ने शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा कि जिस क्षेत्र के लोग शिक्षित होंगे, उस क्षेत्र का विकास कोई नहीं रोक सकता। अध्यक्षता ग्राम खड़ब के बड़ामंदिर महंत महावीर दास त्यागी जी महाराज ने की। प्रधानाचार्य कमलेश कुमार अग्रवाल ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। निदेशक दुर्गाप्रसाद मिश्रा की अगुवाई में शिक्षकों ने सभी अतिथियों का स्वागत-सम्मान किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने एक से बढकर एक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। अतिथियों ने विद्यालय के होनहार विद्यार्थियों समेत सभी टॉपर विद्यार्थियों को सम्मानित किया। संस्था द्वारा कक्षा 10 की टॉपर रही छात्रा ईशा मीणा को 5100 रुपये का चैक व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। अंत में निदेशक दुर्गाप्रसाद मिश्रा ने आगन्तुकों का आभार प्रकट किया। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी रामसिंह यादव, सीबीईओ भागीरथ मीणा, एसीबीईओ दयाराम चौरडिया, भाजपा नेता जयराम गुर्जर, आरपीएस अधिकारी नरेश चनेजा, रमेश पायला, एड. विकास जांगल, पार्षद मनोज गौड़, पार्षद प्रतिनिधि मुखिया पायला, मनोज अग्रवाल, उमेश आर्य, अनुराज वाल्मिकी, विक्रम सिंह मीणा, देशराज पायला, बिड़दीचंद सैनी, बाबूलाल चौधरी, महेश जमालपुरिया, प्रताप, सुभाष, योगेंद्र यादव, पृथ्वी, रामकुमार, रतनलाल, सांवतराम गुर्जर, जितेंद्र जोशी, मनोज भारद्वाज, अविनाश शर्मा, आनंद भारद्वाज, सुरेश मीणा समेत बड़ी संख्या में अभिभावक व विधार्थी मौजूद रहे।

राजधानी जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
18 फरवरी, 2025

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनाः राज्य स्तरीय शिकायत निराकरण समिति की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत राज्य स्तरीय शिकायत निराकरण समिति की बैठक पंत कृषि भवन में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी राजन विशाल ने की। इसमें बीमा कंपनियों और संबंधित अधिकारियों के साथ फसल कटाई प्रयोगों से जुड़ी आपत्तियों के निस्तारण पर चर्चा हुई। शासन सचिव ने हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों के खरीफ 2023 और रबी 2023-24 के फसल कटाई प्रयोगों की समीक्षा की और त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। लापरवाही बरतने पर जालोर, सीकर, श्रीगंगानगर व जैसलमेर के 9 कृषि पर्यवेक्षकों और 17 पटवारियों को चार्जशीट जारी करने के आदेश दिए गए। अब तक खरीफ 2023 में 1,557 करोड़ रुपये और रबी 2023-24 में 898 करोड़ रुपये के बीमा क्लेम किसानों को वितरित किए जा चुके हैं। शेष राशि शीघ्र जारी की जाएगी। सरकार अब तक किसानों को 3,122 करोड़ रुपये वितरित कर चुकी है। बैठक में आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल, विभागीय अधिकारी और बीमा कंपनियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

जयपुर रेलवे स्टेशन पर 'ईट राइट स्टेशन' प्रमाणन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित,

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। सोमवार को रेलवे अस्पताल में ईट राइट स्टेशन प्रमाणन पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। रेलवे अधिकारियों और खाद्य सुरक्षा आयुक्तालय, राजस्थान राज्य द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य जयपुर रेलवे स्टेशन पर खाद्य सुरक्षा मानकों को बढ़ाना था। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जयपुर प्रथम डॉ. रवि शेखावत ने बताया कि प्रशिक्षण में डॉ. लक्ष्मी मीना, संयुक्त खाद्य सुरक्षा आयुक्त (रेलवे), डॉ. अंजू भारती, अभिहित अधिकारी (रेलवे), डॉ. विजय प्रकाश शर्मा और खाद्य सुरक्षा अधिकारी वीरेंद्र चौधरी उपस्थित रहे। वक्ताओं ने प्रशिक्षुओं को खाद्य सुरक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं और ईट राइट स्टेशन दिशानिर्देशों के अनुपालन पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यावहारिक व्याख्यान दिए। इस अवसर पर अधिकारियों द्वारा एक पूर्व-ऑडिट निरीक्षण भी किया गया। गहन निरीक्षण के दौरान, खाद्य संचालकों को सुरक्षा प्रोटोकॉल और स्वच्छता मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के लिए व्यापक मार्गदर्शन और आवश्यक सिफारिशें प्रदान की गई। कार्यक्रम का कुशल प्रबंधन खाद्य सुरक्षा अधिकारी तरुण सैनी और प्रदीप मीना (सीएचआई मुख्यालय उत्तर पश्चिम रेलवे) द्वारा किया गया, जिन्होंने कार्यक्रम के समन्वय और प्रशिक्षण सत्रों को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह सहयोगात्मक प्रयास ईट राइट स्टेशन प्रमाणन प्राप्त करने और जयपुर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के लिए सुरक्षित, स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण खाद्य सेवाएं सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राजस्थान में जल प्रबंधन और बांध सुरक्षा पर राज्य स्तरीय सम्मेलन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि राज्य सरकार जल प्रबंधन और बांध सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि राजस्थान जैसे जल-संकटग्रस्त राज्य में बांधों का प्रबंधन आर्थिक समृद्धि और जनकल्याण से जुड़ा विषय है। उदयपुर में आयोजित बांध सुरक्षा, पुनर्वास एवं बांध सुरक्षा अधिनियम, 2021 पर राज्य स्तरीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मंत्री ने कहा कि पुरानी नदियों को पुनर्जीवित करने और जल भंडारण संरचनाओं की सुरक्षा पर सरकार विशेष ध्यान दे

रही है। उन्होंने अभियंताओं को बांधों की सुरक्षा और जल उपयोग की प्रभावी निगरानी के निर्देश दिए। केंद्रीय जल आयोग के मुख्य अभियंता राकेश कश्यप ने कहा कि राजस्थान बांध सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जल संसाधन विभाग के मुख्य अभियंता रवि सोलंकी ने भी विचार रखे। सम्मेलन में बांध सुरक्षा प्रबंधन, अधिनियम के क्रियान्वयन की चुनौतियां और पुनर्वास कार्यों पर विशेषज्ञों ने मंथन किया। बीसलपुर और माही डैम में डैम रिहैबिलिटेशन से जुड़े अनुभव भी साझा किए गए।

महाकुंभ के लिए आरएसआरटीसी की विशेष बस सेवाएं

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ के अवसर पर राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) द्वारा सुपर लग्जरी, डीलक्स, ए.सी. स्लीपर, नॉन ए.सी. स्लीपर, ए.सी. 2×2 और ब्लू लाइन बसों के माध्यम से यात्रा सुविधा प्रदान की जा रही है। इन बसों का संचालन जयपुर, शाहपुरा, कोटपुतली, बारां, अजमेर, मत्सयनगर, सीकर, हिण्डौन/करौली, धौलपुर, डीडवाना, अलवर, भरतपुर और लोहागढ़ आगार से किया जा रहा है, जिससे श्रद्धालुओं को सुगम यात्रा मिल सके। फरवरी माह में इन सेवाओं के माध्यम से 4.76 लाख कि.मी. यात्रा संचालित कर 239.03 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया गया। साथ ही, 31,600 यात्रियों को यात्रा सुविधा प्रदान की गई। महाकुंभ के लिए संचालित इन विशेष सेवाओं को यात्रियों ने सुविधाजनक और प्रशंसनीय बताया है। RSRTC की यह पहल श्रद्धालुओं की यात्रा को सुरक्षित और आरामदायक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

राजस्थान में 18 फरवरी से 'नक्शा प्रोजेक्ट' की शुरुआत, भूमि रिकॉर्ड होंगे डिजिटल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल इंडिया अभियान के तहत नक्शा प्रोजेक्ट का शुभारंभ 18 फरवरी को किया जाएगा। राजस्थान में इस प्रोजेक्ट के लिए 10 शहरों - भिवाड़ी, किशनगढ़, ब्यावर, सवाई माधोपुर, जैसलमेर, पुष्कर, बगरू, बहरोड़, नवलगढ़ और नाथद्वारा का चयन किया गया है।

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट-2024) के सफल आयोजन के लिए समस्त व्यवस्थाएं हों सुनिश्चित

- ❒ परीक्षा की सुचिता एवं पारदर्शिता के साथ किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्त
- ❒ नकल एवं पेपर लीक को रोकने के लिए हर संभव प्रयास सुनिश्चित करें अधिकारी
- ❒ राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों के उपयोग की रोकथाम) अधिनियम के तहत होगी कड़ी कार्रवाई

जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति की बैठक में जिला कलक्टर ने दिये निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। आगामी 27 एवं 28 फरवरी को आयोजित होने वाली राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट-2024) के सफल आयोजन के लिए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को समस्त आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। सोमवार को कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई जिला स्तरीय परीक्षा संचालन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने परीक्षा के आयोजन की तैयारियों की समीक्षा की। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में अधिकारियों को परीक्षा के आयोजन में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतने की सख्त हिदायत दी गई है। जिला कलक्टर ने अधिकारियों को नकल एवं पेपर लीक को रोकने के लिए संभव प्रयास सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया है।

पुलिस अधिकारियों को भर्ती परीक्षा में किसी भी प्रकार की नकल अथवा अनियमितता की सूचना पर त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई को अंजाम देते हुए परीक्षा का आयोजन पूर्ण सुचिता एवं पारदर्शिता के साथ सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश प्रदान किये गए। पुलिस सहित सभी सुरक्षा एजेंसियां इस दौरान सतर्क एवं मुस्तैद रहेगी एवं परीक्षा का सफल एवं सुचितापूर्ण आयोजन सुनिश्चित करेंगी। जिला परीक्षा संचालन समिति के नोडल अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर (पूर्व) गोपाल सिंह शेखावत ने जानकारी दी कि परीक्षा के आयोजन के दौरान पेपर लीक एवं नगल सहित अन्य प्रकार की विधि विरुद्ध गतिविधियों में संलिप्त आरोपियों के खिलाफ राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों के उपयोग की रोकथाम) अधिनियम के कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों के उपयोग की रोकथाम) अधिनियम के यह हैं प्रावधान राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम के अध्युपाय) अधिनियम-2022 (2022 का अधिनियम संख्याक 6) एवं संशोधन अधिनियम 2023 (2023 का अधि. संख्याक-17) की धारा 10 (1) के अन्तर्गत 3 वर्ष का कारावास और एक लाख रूपये का जुर्माना से दण्डित किया जाएगा, जुर्माना नहीं होने पर 9 माह के कारावास से दण्डित किया जाएगा। इसी तरह धारा 10 (2) के अन्तर्गत 10 वर्ष का कारावास जो आजीवन कारावास तक का हो सकेगा और जुर्माना 10 लाख रूपये जो 10 करोड़ तक का हो सकेगा से दण्डित किया जाएगा, जुर्माना नहीं देने पर 5 वर्ष का कारावास और हो सकेगा। इस प्रकार के संगीन अपराध करने पर दोषी व्यक्तियों की सम्पत्ति की कुर्की और अधिहरण भी किया जा सकेगा।

बैठक में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त डॉ. राजेश्वर सिंह, अतिरिक्त जिला कलक्टर (द्वितीय) आशीष कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर (चतुर्थ) देवेन्द्र कुमार जैन, अतिरिक्त जिला कलक्टर (दक्षिण) संतोष कुमार मीणा सहित पुलिस विभाग, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर नगर निगम, परिवहन विभाग, शिक्षा विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

माल की ढाणी रोड पर दर्दनाक हादसा, प्रशासन की लापरवाही पर उठा सवाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। सांगानेर विधानसभा के वार्ड 92-94 के बीच माल की ढाणी रोड पर सड़क दुर्घटना में 65 वर्षीय ग्यारसी लाल महावर की मौत हो गई। 15 फरवरी दोपहर 2:30 बजे भोमिया जी के चबूतरे से अपने घर लौट रहे महावर को तेज रफ्तार क्रेन ने पीछे से टक्कर मार दी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। स्थानीय लोगों ने क्रेन चालक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। मौके पर पहुंचे मालपुरा गेट थाना अधिकारी मुनेंद्र सिंह ने शव को महात्मा गांधी अस्पताल भिजवाया। अगले दिन पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

सीवर और गंदे पानी से बनी फिसलन, दुर्घटनाओं का कारण

स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क पर सीवर और नालियों का पानी बहता रहता है, जिससे सड़क फिसलन भरी हो गई है। कई बार शिकायतों के बावजूद जेडीए और सांगानेर नगर निगम ने कोई समाधान नहीं किया।

प्रशासन पर गहरी नाराजगी

दुर्घटना के बाद इलाके में आक्रोश है। स्थानीय लोग जल्द से जल्द पानी निकासी की मांग कर रहे हैं और लापरवाह अधिकारियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। थाना अधिकारी मनिंदर सिंह ने बताया कि क्रेन चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने का मामला दर्ज कर जांच जारी है। यह हादसा फिर से सड़क सुरक्षा और प्रशासनिक लापरवाही की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

विधानसभा अध्यक्ष की पहल से गतिरोध समाप्त, सदन सुचारू संचालन पर बनी सहमति

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की अध्यक्षता में सोमवार को विधानसभा संचालन को लेकर विभिन्न दलों की बैठक आयोजित हुई। बैठक में सत्तापक्ष और विपक्ष के वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया और सदन की गरिमा बनाए रखने पर सहमति व्यक्त की। देवनानी ने कहा कि विधानसभा लोकतंत्र का पवित्र स्थल है और इसकी गरिमा बनाए रखना सत्ता और विपक्ष दोनों की जिम्मेदारी है। उन्होंने हाल ही में सदन में उत्पन्न गतिरोध पर दुख व्यक्त किया और भविष्य में सदन को सुचारू रूप से चलाने पर जोर दिया। बैठक में विपक्ष को शांतिपूर्वक मुद्दे उठाने और सरकार द्वारा उनका जवाब देने की व्यवस्था करने पर सहमति बनी।

19 फरवरी को बजट प्रस्तुति पर विशेष जोर देते हुए अध्यक्ष ने कहा कि बजट प्रदेश की जनता के लिए महत्वपूर्ण होता है, इसलिए इसे सभी दलों को शांतिपूर्वक और मर्यादित ढंग से सुनना चाहिए। उन्होंने सदन संचालन में नियमों, परंपराओं और मर्यादाओं के पालन की अपील की।

बैठक में तय किया गया कि प्रश्नकाल शांतिपूर्वक चलेगा, विपक्ष नियमों के तहत ही अपनी बात रखेगा, और सत्तापक्ष एवं विपक्ष एक-दूसरे का सम्मान करेंगे। देवनानी ने कहा कि बजट सत्र में सार्थक बहस होनी चाहिए ताकि प्रदेश की जनता के सामने विधानसभा की गरिमा प्रस्तुत की जा सके। इस बैठक में संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा, सरकारी मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, विपक्ष के मुख्य सचेतक रफीक खान, रालोद के डॉ. सुभाष गर्ग और विधानसभा के प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे।

इस बैठक के बाद सदन को शांतिपूर्ण तरीके से चलाने पर सभी दलों की सहमति बनी, जिससे राजस्थान विधानसभा का गतिरोध समाप्त हो गया।

भाजपा कार्यकर्ताओं की पार्टी, राष्ट्रहित सर्वोपरि : भागीरथ चौधरी

जयपुर टाइम्स

टोंक(निस)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी सोमवार को भाजपा संगठन पर्व के तहत टोंक प्रवास पर पहुंचे। इस दौरान भाजपा जिला कार्यालय में आयोजित निर्वाचन बैठक में चंद्रवीर सिंह चौहान को टोंक जिलाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। केंद्रीय मंत्री चौधरी ने चौहान को बधाई देते हुए कहा कि भाजपा का बल उसका संगठित ढांचा और समर्पित कार्यकर्ता हैं।

उन्होंने कहा कि भाजपा सत्ता के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रहित और विचारधारा के लिए कार्य करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश निरंतर प्रगति कर रहा है।

चौधरी ने भाजपा की नीति 'सबका साथ, सबका विकास' को दोहराते हुए कार्यकर्ताओं से संगठन को और मजबूत करने का आह्वान किया। बैठक में पूर्व सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया, संगठन पर्व चुनाव प्रभारी हरिन्द्र शर्मा, निवर्तमान जिलाध्यक्ष अजित सिंह मेहता सहित कई पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खान विभाग ने 7513 करोड़ रुपये का राजस्व संग्रहित, 23% की विकास दर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। राजस्थान खान एवं भूविज्ञान विभाग ने वित्तीय वर्ष 2023-24 की तुलना में 23% विकास दर के साथ अब तक 7513 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व संग्रहित किया है। प्रमुख शासन सचिव खान, टी. रविकान्त ने कहा कि विभाग बकाया वसूली में सख्ती बरतेगा और न्यायालयों से स्टे हटवाकर वसूली बढ़ाने के प्रयास करेगा। रविकान्त खनिज भवन में फील्ड अधिकारियों के साथ वर्चुअल संवाद कर रहे थे। उन्होंने बकाया एसेसमेंट कार्य प्राथमिकता से निपटाने, 100त्र वसूली सुनिश्चित करने और वित्तीय वर्ष समाप्ति तक राजस्व संग्रहण बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने विधानसभा प्रश्नों और विशेष उल्लेख मामलों के शीघ्र निपटान, एमओयू संस्थाओं से समन्वय, तथा जिला कलक्टर की अध्यक्षता में बनी माइनिंग समितियों की मासिक बैठकें सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। निदेशक माइंस दीपक तंवर ने कहा कि मुख्यालय स्तर पर निगरानी को और प्रभावी बनाया जा रहा है और रॉयल्टी एसेसमेंट एवं अन्य प्रक्रियाओं को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। संयुक्त सचिव आशु चौधरी ने विधानसभा प्रकरणों के त्वरित निपटारे और सरकार द्वारा मांगी गई सूचना शीघ्र भेजने पर बल दिया।

झीलों की नगरी में 'जल मंथन': उदयपुर में बांध सुरक्षा पर राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित

जयपुर टाइम्स

उदयपुर(निस)। बांध सुरक्षा, पुनर्वास एवं बांध सुरक्षा अधिनियम, 2021 पर राज्य स्तरीय सम्मेलन सोमवार को अनंता रिसॉर्ट, उदयपुर में आयोजित हुआ।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गैस रिसाव से प्रभावित बच्चों का जाना हाल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर सोमवार को कोटा के जे.के. लोन अस्पताल पहुंचे, जहां उन्होंने गैस रिसाव से प्रभावित बच्चों का हालचाल जाना। उन्होंने डॉक्टरों से बच्चों के स्वास्थ्य की जानकारी ली और समुचित इलाज सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बिरला ने प्रशासन को घटना की विस्तृत जांच कर रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवारों को हरसंभव सहायता मिलेगी और ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए फैक्ट्री मालिकों को दिशा-निर्देश जारी किए जाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि सभी संबंधित विभागों की जांच रिपोर्ट के आधार पर आवश्यक कार्रवाई होगी।

ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने बताया कि बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए मेडिकल बोर्ड काम कर रहा है और उनकी निगरानी की जा रही है। उन्होंने कहा कि बच्चों को पूरी तरह स्वस्थ होने के बाद ही अस्पताल से छुट्टी दी जाएगी। गैस रिसाव के लक्षणों में आंखों में जलन, सांस लेने में परेशानी और गले में जलन देखी गई।

इस दौरान मेडिकल कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. संगीता सक्सेना, जे.के. लोन अस्पताल की अधीक्षक डॉ. निर्मला शर्मा सहित अन्य डॉक्टर और प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहे।

संपादकीय .....

अश्विनी वैष्णव को रेल मंत्री पद से इस्तीफा देना चाहिए या नहीं?

नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ में 18 लोगों की मौत ही बड़ी खबर नहीं है। बड़ी खबर यह भी है कि रेलवे ने पिछले हादसों से कोई सबक नहीं सीखा है। बड़ी खबर यह भी है कि लोग यह समझ चुके हैं कि रेलवे में सुधार की बातें सिर्फ खोखली हैं। बड़ी खबर यह भी है कि तमाम लोगों को इस बात का पक्का विश्वास हो चला है कि पर्वों-त्योहारों और छुट्टियों के समय टिकट खरीदने से लेकर अपने गंतव्य तक पहुँचने तक रेल का सफर परेशान करेगा ही करेगा। बड़ी खबर यह भी है कि रेलवे स्टेशन पर या पटरी पर चलती ट्रेन के साथ कितनी बड़ी दुर्घटना हो जाये, रेल मंत्री कभी नैतिक जिम्मेदारी नहीं लेंगे। बड़ी खबर यह भी है कि दुर्घटना होने पर मुआवजे या जांच का ऐलान तुरंत ही करने वाले रेल मंत्री अपना इस्तीफा देना तो दूर कभी इस्तीफे की पेशकश तक नहीं करेंगे।

देखा जाये तो रेल मंत्री पद से अश्विनी वैष्णव का इस्तीफा मांगा जा रहा है तो इसमें कुछ गलत नहीं है क्योंकि बात सिर्फ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुए हादसे की ही नहीं है। आप रेलवे को समग्र रूप में देखेंगे तो पाएंगे कि कोई बड़ा सुधार कर पाने में अश्विनी वैष्णव पूरी तरह विफल रहे हैं। अगर महाकुंभ की ही बात कर लें तो भले रेल मंत्री ने प्रयागराज के लिए हजारों ट्रेनें चलाने के दावे किये हों लेकिन आप देशभर में सर्वे करा लें तो पाएंगे कि प्रयागराज के लिए ज्यादातर लोगों को ट्रेनों में टिकट मिले ही नहीं और जिनको टिकट मिले उनका सफर आरामदायक नहीं रहा। यही नहीं, हैरानी की बात यह भी रही कि प्रयागराज के लिए रेलवे की वेबसाइट और ऐप पर भले टिकट नहीं थे लेकिन मेकमाई ट्रिप जैसी ट्रैवल साइटों पर 500 रुपए की अतिरिक्ति फीस देकर उसी तारीख के रेलवे टिकट उपलब्ध थे। हम 2047 तक भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात कर रहे हैं लेकिन 2025 तक रेलवे को इतना भी आत्मनिर्भर नहीं बना पाये हैं कि उसकी ही वेबसाइट और ऐप पर सभी को कंफर्म टिकट मिल जायें। आज भी रेल यात्रियों को अपना टिकट कंफर्म कराने के लिए वीआईपी कोटा या रेलवे कोटा लगवाने के लिए नेताओं और अधिकारियों से मदद मांगनी पड़ती है जोकि शर्मनाक है।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ की घटना के जांच के आदेश तो दे दिये गये हैं लेकिन सवाल उठता है कि पहले की घटनाओं की जांच रिपोर्टों का क्या हुआ? पिछली घटनाओं के लिए कौन लोग दोषी ठहराये गये, उन्हें कौन-सी कड़ी सजा हुई? क्या इसका विवरण कभी रेल मंत्री देश के सामने रखने का साहस जुटाएंगे? देखा जाये तो नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ की घटना का प्रमुख कारण था ऐन समय पर ट्रेनों के प्लेटफॉर्म का बदला जाना। यह ऐसी चूक है जिसकी वजह से पहले भी दुर्घटनाएं हुई हैं लेकिन रेलवे ने कभी सबक नहीं सीखा। जब रेलवे स्टेशन का प्रबंधन यह देख रहा था कि वहां भारी भीड़ उमड़ी हुई है तो प्लेटफॉर्म बदलने का फैसला टाल कर क्या घटना को रोका नहीं जा सकता था?

बात सिर्फ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन की भी नहीं है। देश के तमाम शहरों से इस प्रकार की खबरें सामने आ रही हैं कि प्रयागराज जाने वाली ट्रेनों में लोग भारी भीड़ की वजह से चढ़ नहीं पा रहे हैं।

आखिर कौन, कैसे और कब तक पाएगा भीड़ से उत्पन्न भगदड़ पर काबू?

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 15 फरवरी शनिवार की रात प्रयागराज महाकुंभ जाने को उतावली भीड़ ने ऐसी भगदड़ मचाई कि लगभग डेढ़ दर्जन लोगों की जान चली गई, जबकि दर्जनाधिक घायल भी हुए। इस बार भी मृतकों में महिलाओं (10) और बच्चों (3) की संख्या ज्यादा रही, जबकि पुरुषों (2) की संख्या उनसे कम रही। वहीं, दर्जनाधिक घायलों में भी लगभग 14 महिलाएं समेत कुल 25 लोग शामिल हैं। ये महज आंकड़े नहीं हैं, बल्कि हमारी संवेदनाशून्य व्यवस्था की विफलता के नमूने मात्र हैं। ऐसी घटनाओं पर आखिर कौन, कैसे और कबतक काबू पाएगा, यह यक्ष प्रश्न ब्रेक के बाद पुनः समुपस्थित है।

ऐसा इसलिए कि भारत में पिछले कुछ वर्षों में भगदड़ के कई मामले सामने आए हैं। वहीं, इस बार तो महज एक महीने के अंदर ही भगदड़ के दो-दो मामले सामने आ चुके हैं, जो कि प्रशासन के लिए चिंता का विषय है। सवाल है कि जब महाकुंभ की तैयारियों को लेकर उत्तरप्रदेश प्रशासन लगातार डींगें हांक रहा था और केंद्र सरकार अपनी पीठ थपथपा रही थी, तब ऐसी हृदयविदारक घटनाओं का घटित होना उसकी तमाम व्यवस्थाओं पर सवालिया निशान लगा जाता है। सवाल यह भी है कि तमाम सकारात्मक राजनीतिक इच्छाशक्ति के बावजूद इतनी बड़ी प्रशासनिक चुकें कैसे हो गईं।

हैरत की बात तो यह है कि प्रारम्भिक तौर पर मीडिया माध्यमों में रेलवे के अधिकारी-कर्मचारी ऐसी किसी घटना व हताहतों के बारे में इंकार कर रहे थे, लेकिन सच्चाई अंत में उन्हें भी बयां करनी ही पड़ी। इससे समझा जा सकता है कि उनका सूचना तंत्र कितना विफल या फिर लोकहित विरोधी है। भले ही इन घटनाओं पर बड़े नेतागण और अधिकारियों के द्वारा खेद प्रकट किया गया हो, जिनके पास वैध टिकट होंगे, उन्हें रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल से मुआवजे भी मिल जाएंगे। लेकिन इससे उन परिवारों की व्यथा कम नहीं हो जाती, जिन्होंने अपने परिजनों को खोया है या फिर जिनके परिजन अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं।

बताया गया है कि सभी लोग नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में प्रयागराज के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए खड़े हुए थे। तभी ट्रेन सम्बन्धी उद्घोषणा के बाद प्लेटफार्म पर अफरातफरी और भगदड़ मच गई। ऐसे में सवाल है कि देश की राजधानी नई दिल्ली जैसे मुख्य रेलवे स्टेशन पर रेल प्रशासन ने

समुचित व्यवस्था क्यों नहीं की थी। अब भले ही इसकी जांच होगी, पर परिणाम ढाक के तीन पात जैसे ही होंगे!

जाहिर है कि भीड़ और भगदड़ में अन्योन्याश्रय का सम्बन्ध है। लेकिन इनके नियंत्रण के समुचित उपाय कब तक दिखेंगे, किनके नेतृत्व में सब होगा, कुछ पता नहीं। तब तक ब्रेक के बाद होने वाले हादसों पर सवाल उठाते रहिए, चुनाव दर चुनाव राजनीतिक नेतृत्व बदलते रहिए, लेकिन ये अधिकारी हैं, जिनका सिर्फ तबादला होगा। क्योंकि उनकी जानलेवा लापरवाहियों के बावजूद उन्हें जिम्मेदार ठहराने के कानूनी प्रबंध नदारत हैं।

बता दें कि गत 29 जनवरी 2025 को प्रयागराज में महाकुंभ मेला 2025 में मौनी अमावस्या से ठीक पहले भी एक दुःखद भगदड़ मची थी, जहां लगभग 30 लोगों की मौत हो गई थी और तकरीबन 60 लोग घायल हो गए थे।

दरअसल, महाकुंभ मेले में ये हादसा 29 जनवरी के तड़के हुआ था, जब सभी लोग संगम नोज की तरफ नहाने के लिए जा रहे थे। तब यहां भी लाखों लोगों की भीड़ बेकाबू हो चुकी थी। जिसके बाद आनन-फानन में वीवीआईपी व्यवस्था बदल दी गई और अखाड़ों ने भी मौनी अमावस्या के लिए अपने पारंपरिक %अमृत स्नान% को रद्द कर दिया और दोपहर बाद %अमृत स्नान% किया। इससे भी धार्मिक आयोजनों में भीड़ प्रबंधन सम्बन्धी सवाल उठे थे। यहां भी एक न्यायिक जांच आयोग का गठन करके प्रशासनिक खाना पूर्ति कर दी गई है। इसलिए भीड़ नियंत्रण सम्बन्धी विफलताओं पर जनसामान्य की चिंता ज्यादा बढ़ गई है।

वहीं, गत 8 जनवरी, 2025 को आंध्र प्रदेश के तिरुपति में मची भगदड़ में कम से कम 6 भक्तों की मौत हो गई थी, जबकि दर्जनों लोग घायल हो गए थे, क्योंकि सैकड़ों लोग तिरुमाला पहाड़ियों पर भगवान वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में वैकुंठ द्वार दर्शनम के लिए टिकट पाने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे। बताया गया था कि तब 10 जनवरी से शुरू होने वाले 10 दिवसीय वैकुंठ द्वार दर्शनम के लिए देश भर से सैकड़ों भक्त यहां आए थे। यदि आप पिछले कुछ वर्षों में भारत में हुई प्रमुख भगदड़ की घटनाओं की सूची खंगालेंगे तो पता चलेगा कि साल-दो साल बाद ऐसी घटनाओं की एक लंबी फेहरिस्त है। यदि पिछले दो दशकों की प्रमुख भगदड़ सम्बन्धी घटनाओं पर गौर करें तो 27 अगस्त, 2003 को महाराष्ट्र के नासिक में कुंभ मेले में भगदड़ के दौरान जहां 39 लोगों की मौत हो गई थी वहीं, 140 अन्य घायल हो गए थे। इसी प्रकार 25 जनवरी, 2005 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के वाई शहर स्थित मंधारदेवी मंदिर में भगदड़ के दौरान 300 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि 100 अन्य लोग घायल हो गए थे।

ये भगदड़ मंदिर तक जाने वाली सीढ़ियों में फिसलन भरी होने के कारण मची थी।

वहीं, 3 अगस्त, 2008 को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में नैना देवी मंदिर में भगदड़ के दौरान 162 लोगों की मौत हो गई थी। जबकि सैकड़ों की संख्या में लोग घायल हुए थे। तब यहां पहाड़ी की चोटी पर स्थित नैना देवी मंदिर में भूस्खलन की अफवाह के कारण मची भगदड़ मच गई थी। वहीं, 30 सितंबर, 2008 को राजस्थान के जोधपुर में चामुंडा देवी मंदिर में नवरात्रि के दौरान भगदड़ मचने पर 250 लोगों की मौत कुचले जाने से हो गई थी। क्योंकि इस दौरान भारी संख्या में तीर्थयात्री इकट्ठा हुए थे।

वहीं, 4 मार्च, 2010 को उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में कृपालु महाराज के राम जानकी मंदिर में 63 लोगों की मौत हो गई थी। इसमें अधिकतर बच्चे शामिल थे। इस मंदिर में मुफ्त भोजन और कपड़े के लिए हुई भारी भीड़ के कारण भगदड़ हुई थी। इसके अलावा, 15 जनवरी, 2011 को केरल के इडुक्की जिले के पुलमेडु में एक जीप के घर जा रहे तीर्थयात्रियों से टकरा जाने के कारण मची भगदड़ में कम से कम 104 सबरीमाला भक्त स्वर्गलोक सिधार गए थे, जबकि 40 से अधिक घायल हो गए थे।

इसके अलावा, 8 नवंबर, 2011 को उत्तराखंड के हरिद्वार में गंगा घाट स्थित हर-की-पौड़ी में 20 लोगों की मौत हो गई थी। जबकि 19 नवंबर, 2012 को पटना के अदालत घाट पर एक अस्थायी पुल पर भीड़ के चढ़ जाने से उसके ढह जाने से 20 लोगों की मौत हो गई थी। वहीं, फरवरी 2013 को उत्तर प्रदेश में कुंभ मेले के सबसे व्यस्त दिन प्रयागराज रेलवे स्टेशन में भगदड़ हो गई थी। इस हादसे में कम से कम 36 हिंदू तीर्थयात्रियों की जान चली गई थी। मृतकों में 27 महिलाएं थीं, जिनमें एक आठ साल की बच्ची भी शामिल थी।

वहीं, 13 अक्टूबर, 2013 को मध्य प्रदेश के दतिया जिले में रतनगढ़ मंदिर के पास मची भगदड़ में 115 लोगों की मौत हो गई थी और 100 से अधिक घायल हो गए थे। तब यहां मंदिर में देवी दुर्गा की नौ दिवसीय पूजा-अर्चना के लिए 1,50,000 से अधिक लोग एकत्रित हुए थे। वहीं, 3 अक्टूबर, 2014 को पटना के गांधी मैदान में 30 लोगों की मौत हो गई थी तथा 26 अन्य लोग घायल हो गए थे।

इसी प्रकार, 14 जनवरी, 2015 को आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में गोदावरी नदी के तट पर मची भगदड़ में 26 लोगों की मौत हो गई थी। जबकि 1 जनवरी, 2022 को जम्मू-कश्मीर में माता वैष्णो देवी मंदिर में एक दर्जन से अधिक लोगों की मौत ऐसी ही एक जानलेवा भगदड़ में हो गई थी। वहीं, 31 मार्च, 2023 को मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में रामनवमी समारोह के दौरान मची एक भगदड़ में लगभग 36 लोगों की मौत हो गई थी।

- कमलेश पाण्डेय

-ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं

समसामयिक

भारत-अमेरिका मैत्री से विकास के नये रास्ते खुलेंगे

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हाल में सम्पन्न हुई अमेरिका की दो दिवसीय यात्रा अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं मील का पत्थर बनकर प्रस्तुत हुई है। यह निश्चित है कि मोदी के नेतृत्व में एक नई सभ्यता और एक नई संस्कृति गढ़ी जा रही है। व्हाइट हाउस में संपन्न प्रधानमंत्री मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बातचीत कई मायनों में सकारात्मक एवं परिणामकारी रही। उसमें किसी तरह की तल्खी नजर नहीं आई, बल्कि मोदी-ट्रंप की दोस्ती ही नये विश्वास एवं संकल्प के साथ उभर कर सामने आयी है। यह निर्विवाद सत्य है कि अमेरिका हमेशा अपने कारोबारी हितों को ही प्राथमिकता देता है। इस मुलाकात में यही नजर आया कि ट्रंप दोनों देशों के व्यापार संतुलन का पलड़ा अमेरिका के पक्ष में करने को कटिबद्ध है। लेकिन मोदी ट्रंप की चतुराई को भी अपनी सादगी एवं सरलता से मात देते हुए भारत के हित में अनेक समझौते कर लिये हैं। यह तथ्य सर्वविदित है कि अमेरिका की नीतियां 'अमेरिका से शुरू होकर अमेरिका' पर ही समाप्त हो जाती हैं। दूसरी बार सत्ता में आए ट्रंप ने जिस आक्रामक तरीके से कनाडा, मैक्सिको व चीन आदि पर टैरिफ लगाए हैं, वैसी आक्रामकता उन्होंने भारत के प्रति नहीं दिखायी। यह अमेरिका की भारत के प्रति एक विशेष दृष्टि मोदी के प्रभाव का ही परिणाम है।

ट्रंप ने मोदी को अपनी तुलना में बेहतर सख्त वार्ताकार बताया। दोनों नेताओं ने वर्ष 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दुगुना करने तथा लाभप्रद व्यापार समझौते के लिये बातचीत करने का संकल्प भी जताया। भविष्य में व्यापार समझौता अमेरिका के पक्ष में न झुके, इसके लिये प्रधानमंत्री मोदी ने कूटनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया। भारत को नया बनने के लिए, स्वर्णिम बनाने के लिए, अनूठा बनाने के लिए और उसे विश्व की एक बड़ी ताकत के रूप में उभारने के लिये मोदी के प्रयास अनूठे भी हैं और विलक्षण भी हैं। यहां उल्लेखनीय है कि मोदी-ट्रंप मुलाकात में रक्षा और सुरक्षा क्षेत्र में बातचीत सकारात्मक रही। दोनों देशों ने एक दस वर्षीय रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। जिसमें प्रमुख हथियारों और प्लेटफार्मों के सह-उत्पादन को आगे बढ़ाने की महत्वाकांक्षी योजना का मार्ग प्रशस्त किया गया। वहीं दूसरी ओर यदि भारत को अमेरिकी एफ-35 स्टील्थ लड़ाकू विमानों की प्रस्तावित आपूर्ति परवान चढ़ती है तो पड़ोसी देशों की बेचैनी और बढ़ जाएगी और भारत की ओर देखने

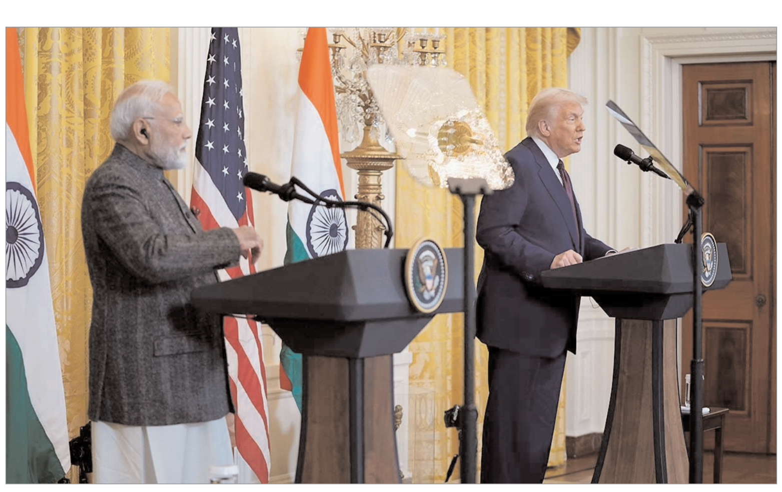

की उनकी हिम्मत नहीं होगी। मोदीजी का जादू एक बार फिर सिर चढ़कर बोला है। मोदी की इस यात्रा के पीछे इरादा केवल भावनात्मक रिश्तों की बुनियाद को मजबूत करना नहीं रहा है, बल्कि भारत के हक में अमेरिकी नीतियों को प्रभावित करने के लिए उनका सहयोग पाने की मंशा भी रहा है, जो सफल हुआ। संभव है इससे भारत और अमेरिका दोनों ही देशों में विकास के नये रास्तें खुलेंगे। इस यात्रा के दौरान महत्वपूर्ण घोषणा यह भी रही है कि 26/11 के साजिशकर्ता तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण को मंजूरी दे दी गई है। यह पाकिस्तान को चेतावनी भी है कि वह अपनी जमीन से आतंकवादियों को सीमापार आतंकी हमलों को अंजाम देने में मदद बंद करे। अब इस्लामाबाद पर मुंबई और पठानकोट के आतंक हमलों के साजिशकर्ताओं को सजा देने का दबाव भी बढ़ जाएगा। निस्संदेह, ट्रंप का 'टैरिफ आतंकवाद' निगलने वाली कड़वी गोली हो सकती है, लेकिन भारत की रक्षा तैयारियों में अमेरिका की बड़ी भूमिका एक आकर्षक प्रस्ताव होगा, जिससे भारत सैन्य मोर्चे पर सशक्त होकर उभरेगा। ट्रंप के साथ मुलाकात में भारत ने अवैध रूप से आए भारतीयों को वापस लेने की बात भी कही। पत्रकार वार्ता में मोदी ने कहा कि इस मुद्दे पर हमारे विचार एक जैसे हैं। यदि अमेरिका में अवैध भारतीय प्रवासियों की पुष्टि होती है तो हम उन्हें वापस लेने के लिये तैयार हैं। उन्होंने इसे मानव तस्करों की करतूत बताया।

मोदी की यह यात्रा दो बहुत अच्छे दोस्तों की बहुत ही नाजुक समझौतेवादी भूमिका को देखने का एक दिलचस्प एवं रोमांचक मौका बनी, प्रतिकूल लगते हालात को अनुकूल नतीजों की ओर मोड़ने का कौशल भी इस यात्रा में बेहतरीन अंदाज में नजर आया। दोनों नेता न केवल पहले से एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते रहे हैं बल्कि उनके बीच की व्यक्तिगत मित्रता एवं आत्मीयता भी चर्चित रही है। यह सुखद संयोग है कि दोनों नेता दुनिया के सबसे बड़े पुराने और सबसे विशाल लोकतंत्र के राष्ट्राध्यक्ष हैं। अमेरिका को पहले से ही दुनिया ग्लोबल लीडर मानती रही है। अब भारत नया और उभरता हुआ विश्वनेता बना है। ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी और ट्रंप की जोड़ी से दुनिया पर नये तरीके से आधिपत्य बदलता दिख रहा है। दोनों देशों के लगातार बेहतर होते रिश्तों की पृष्ठभूमि इस तथ्य को और महत्वपूर्ण बना रही थी। फिर भी यात्रा से पहले के घटनाक्रम ने इसकी कामयाबी पर भले ही संदेह की परतें चढ़ा रखी थी, लेकिन मोदी की कुशलता एवं कूटनीति से सभी वार्ताएं सौहार्दपूर्ण होकर सकारात्मक बनी। जिससे भारत एक बार फिर दुनिया के सामने सशक्त एवं ताकतवर बनकर ही प्रस्तुत हुआ है।ट्रंप के कतिपय सख्ती से बने तनाव को मोदी ने हावी नहीं होने दिया। प्रधानमंत्री मोदी पूरी तरह से अपने अजेंडे पर केंद्रित रहे। उन्होंने न केवल ट्रंप की तारीफ की बल्कि राष्ट्रपति ट्रंप के प्रिय नारे 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' (एमएजीए) की तर्ज पर अपना नारा पेश किया- 'मेक इंडिया ग्रेट अगेन' (एमआईजीए), और यह भी कहा कि जब एमएजीए और एमआईजीए साथ आते हैं तो बन जाता है एमईजीए जो दोनों देशों की शानदार साझेदारी की कहानी कहता है। इस तरह दोनों देश ने दुनिया के बॉस होते हुए अपने वर्चस्वी होने को व्यक्त किया। अमेरिका तो इस भूमिका में रहा है, लेकिन अमेरिका भारत को भी इस भूमिका में मानता है तो निश्चित ही यह भारत की दुनिया में मजबूत होती स्थिति को ही बयां कर रहा है।

-ललित गर्ग

-ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं

ट्रंप ने मोदी को अपनी तुलना में बेहतर सख्त वार्ताकार बताया। दोनों नेताओं ने वर्ष 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दुगुना करने तथा लाभप्रद व्यापार समझौते के लिये बातचीत करने का संकल्प भी जताया। भविष्य में व्यापार समझौता अमेरिका के पक्ष में न झुके, इसके लिये प्रधानमंत्री मोदी ने कूटनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया। भारत को नया बनने के लिए, स्वर्णिम बनाने के लिए, अनूठा बनाने के लिए और उसे विश्व की एक बड़ी ताकत के रूप में उभारने के लिये मोदी के प्रयास अनूठे भी हैं और विलक्षण भी हैं। यहां उल्लेखनीय है कि मोदी-ट्रंप मुलाकात में रक्षा और सुरक्षा क्षेत्र में बातचीत सकारात्मक रही। दोनों देशों ने एक दस वर्षीय रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। जिसमें प्रमुख हथियारों और प्लेटफार्मों के सह-उत्पादन को आगे बढ़ाने की महत्वाकांक्षी योजना का मार्ग प्रशस्त किया गया। वहीं दूसरी ओर यदि भारत को अमेरिकी एफ-35 स्टील्थ लड़ाकू विमानों की प्रस्तावित आपूर्ति परवान चढ़ती है तो पड़ोसी देशों की बेचैनी बढ़ जाएगी और भारत की ओर देखने की उनकी हिम्मत नहीं होगी। मोदीजी का जादू एक बार फिर सिर चढ़कर बोला है।

शख्सियत

महान साधक थे रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं। 19 वीं शताब्दी में श्री रामकृष्ण परमहंस एक रहस्यमयी और महान योगी पुरुष थे। जिन्होंने काफी सरल शब्दों में अध्यात्मिक बातो को सामान्य लोगो के सामने रखा। जिस समय हिन्दू धर्म बड़े संकट में फंसा हुआ था उस समय श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म में एक नयी उम्मीद जगाई।

रामकृष्ण के जीवन में अनेक गुरु आये पर अन्तिम गुरुओं का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। एक थी भैरवी जिन्होने उन्हे अपने कापालिक तंत्र की साधना करायी और दूसरे थे श्री तोतापुरी उनके अन्तिम गुरु। गंगा के तट पर दक्षिणेश्वर के प्रसिद्व मंदिर में रहकर रामकृष्ण मां काली की पूजा किया करते थे। गंगा नदी के दूसरे किनारे रहने वाली भैरवी को अनुभुति हुई कि एक महान संस्कारी व्यक्ति रामकृष्ण को उसकी दीक्षा की आवश्यकता हैं। गंगा पार कर वो रामकृष्ण के पास आयी तथा उन्हे कापालिक दीक्षा लेने को कहा। रामकृष्ण ने भैरवी द्वारा बतायी पद्धति से लगातार साधना कर मात्र तीन दिनों में ही सम्पूर्ण क्रिया में निपुण हो गये। रामकृष्ण के अन्तिम गुरु तोतापुरी थे जो सिद्ध तांत्रिक तथा हठ योगी थे। उन्होने रामकृष्ण को दीक्षा दी। रामकृष्ण को दीक्षा दी गई परमशिव के निराकार रुप के साथ पूर्ण संयोग की। पर आजीवन तो उन्होने मां काली की आराधना की थी। वे जब भी ध्यान करते तो मां काली उनके ध्यान में आ जाती और वे भावविभोर हो जाते। जिससे निराकार का ध्यान उनसे नहीं हो पाता था।

तोतापुरी ध्यान सिद्ध योगी थे। उनको अनुभव हुआ कि रामकृष्ण के ध्यान में मां काली प्रतिष्ठित हैं। उन्होने शक्ति सम्पात के द्वारा रामकृष्ण को निराकार ध्यान में प्रतिष्ठित करने के लिये बगल में पड़े एक शीशे के टुकड़े को उठाया और उसका रामकृष्ण के आज्ञाचक्र पर आघात किया जिससे रामकृष्ण को अनुभव हुआ कि उनके ध्यान की मां काली चूर्ण-विचूर्ण हो गई हैं और वे निराकार परमशिव में पूरी तरह समाहित हो चुके हैं। वे समाधिस्थ हो गये। ये उनकी पहली समाधी थी जो तीन दिन चली। तोतापुरी ने रामकृष्ण की समाधी टूटने पर कहा। मैं पिछले 40 वर्षो से समाधि पर बैठा हूं पर इतनी लम्बी समाधी मुझे कभी नही लगी।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में कामारपुकुर नामक गांव में 18 फरवरी 1836 को एक निर्धन निष्ठावान ब्राहमण परिवार में हुआ था। इनके जन्म पर ही ज्योतिषियों ने रामकृष्ण के महान भविष्य की घोषणा कर दी थी। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुन इनकी माता चन्द्रा देवी तथा पिता खुदिराम अत्यन्त प्रसन्न हुए। इनको बचपन में गदाधर नाम से पुकारा जाता था। पांच वर्ष की उम्र में ही वो अदभुत प्रतिभा और स्मरणशक्ति का परिचय देने लगे। अपने पूर्वजों के नाम व देवी- देवताओं की स्तुतियां, रामायण, महाभारत की कथायें इन्हे कंठस्थ याद हो गई थी।

1843 में इनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का पूरा भार इनके बड़े भाई रामकुमार पर आ पड़ा था। रामकृष्ण जब नौ वर्ष के हुए इनके यज्ञोपवीत संस्कार का समय निकट आया। उस समय एक विचित्र घटना हुई। ब्राह्मण परिवार की परम्परा थी कि नवदिक्षित को इस संस्कार के पश्चात अपने किसी सम्बंधी या किसी ब्राह्मण से पहली शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। एक लुहारिन जिसने रामकृष्ण की जन्म से ही परिचर्या की थी। बहुत पहले ही उनसे प्रार्थना कर रखी थी कि वह अपनी पहली भिक्षा उसके पास से प्राप्त करे। लुहारिन के सच्चे प्रेम से प्रेरित हो बालक रामकृष्ण ने वचन दे दिया था।

अतः यज्ञोपवीत के पश्चात घर वालों के लगातार विरोध के बावजूद इन्होने ब्राह्मण परिवार में प्रचलित प्रथा का उल्लंघन कर अपना वचन पूरा किया और अपनी पहली भिक्षा उस लुहारिन से प्राप्त की। यह घटना सामान्य नही थी।

विनीत कुमार सिंह ने बताया कवि कलश के रूप में एक योद्धा की भूमिका के लिए कैसे तैयारी की

छावा रिलीज हो गई है। इस ऐतिहासिक फिल्म में हैरान करने वाला तत्व अभिनेता विनीत कुमार सिंह हैं, जिन्होंने राजे के करीबी विश्वासपात्र चंदोगामात्य कवि कलश की भूमिका निभाई है। चंदोगामात्य, जैसा कि संभाजी महाराज ने भी पूरी फिल्म में उन्हें प्यार से संबोधित किया है, उन्होंने हर कदम पर साबित किया कि वे स्वराज के प्रति वफादार थे। जहां तक यह भूमिका निभाने वाले विनीत की बात है, तो उन्होंने खुलासा किया कि उन्होंने और बाकी कलाकारों ने फिल्म में प्रतिष्ठित मराठा योद्धाओं की भूमिका निभाने के लिए कितनी कठिन मेहनत की थी।

विनीत ने खुलासा किया, मैंने छावा के लिए व्यापक तैयारी की। और यह लगभग 11 महीने तक चली। उस समय, हमें पूरी तरह से प्रशिक्षित किया गया था कि मराठा योद्धा की बारीकियों को कैसे अपनाया जाए। मैंने घुड़सवारी, तलवारबाजी, लाठी चलाना और भाला चलाना आदि सीखा और ये प्रशिक्षण अवधि भी फिल्म की शूटिंग के साथ मेल खाती थी। अब आप कह सकते हैं कि मैं शास्त्र विद्या में थोड़ा प्रशिक्षित हूं। मुझे नई चीजें सीखना बहुत पसंद है। मुझे ये अवसर देने के लिए फिल्मों को धन्यवाद। लक्ष्मण उतेकर सर और मैडॉक फिल्म्स को धन्यवाद। काम के मोर्चे पर, विनीत जल्द ही सुपरबॉयज़ ऑफ़ मालेगांव में नज़र आएंगे, जहां वह एक भावुक लेखक की भूमिका निभाएंगे। 28 फरवरी को रिलीज होने के लिए तैयार, रीमा कागती निर्देशित इस फिल्म में अभिनेता महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आएंगे। इसके बाद उनके पास जाट है, जिसके लिए वह फिलहाल शूटिंग कर रहे हैं।

मुझे भी डिंपल मैम जैसा कुछ शानदार करना है

निर्देशक आनंद एल राय की फिल्म 'तेरे इश्क में' के पोस्टर में सुट्टा मारती नजर आई अभिनेत्री कृति सेनन का अभिनय फिल्म दर फिल्म निखरा है। वह मानती हैं कि उन्हें हिंदी सिनेमा की दमदार अभिनेत्रियों से काफी कुछ सीखने को मिला है। हाल ही में कृति सेनन से साझा कि उन्होंने बॉलीवुड की कुछ नामी, टैलेंटेड एक्ट्रेसेस से काफी कुछ सीखा है। वह इन्हें अपना आइडल मानती हैं। इन एक्ट्रेसेस में काजोल, तब्बू, डिंपल कपाड़िया और करीना कपूर शामिल हैं।

डिंपल मैम के रंग बिरंगे चश्मे

मुझे पता है कि ये इतना आसान नहीं होता लेकिन अभिनय मैंने दूसरों को देखकर ही सीखा है। अक्सर कहा जाता है कि अभिनेत्रियों के बीच सहज संवाद कम ही होता है पर मैंने जितनी भी हीरोइन के साथ काम किया, उनमें डिंपल (कपाड़िया) मैम का रुतबा सबसे अलग दिखा है। उनका क्या ही तो स्टाइल है, कमाल कॉन्फीडेंस और उनके रंग बिरंगे धूप के चश्मे, उफ़! एक दिन मैं भी उनके जैसे किरदार करना चाहूंगी।

करीना का करिश्मा

करीना कपूर को वैसे देखिए तो वह बहुत ही मस्तमौला टाइप की इंसान लगती है। लेकिन, सेट पर आते ही वह एकदम से बदल जाती हैं। कैमरे की नजरों में वह अलग ही दिखती हैं। हर सीन से पहले हर संवाद को तरह तरह से बोलकर याद करती हैं।

तब्बू मैम का ताव

तब्बू मैम का ताव हिंदी सिनेमा में सबसे अनोखा है। उनके किरदारों की पूरी एक फेहरिस्त मेरे पास है जिनको मौका मिले तो मैं तुरंत करना चाहूंगी। वह अपने अभिनय की आशुकवि हैं। उनके दिमाग में न जाने कहां से वह सब कैमरा ऑन होते ही आ जाता है। उनके चेहरे की एक मुस्कुराहट पूरे सीन का भाव बदल देती है।

काजोल की कलाकारी

काजोल मैम के साथ मैंने पहले फिल्म 'दिलवाले' की थी और फिर 'दो पत्ती'।

इतने साल अभिनय करने के बाद भी वह हर बार कुछ नया, कुछ बेहतर करने के लिए एक न्यूकमर की तरह लालायित दिखती हैं। अभिनय के प्रति उनका ये समर्पण अक्सर मुझे शाहरुख (खान) सर की याद दिलाता है।

स्टार किड्स से बेहतर काम कर रहे हैं बाहरी कलाकार

साल 2016 में आई फिल्म सनम तेरी कसम को सिनेमाघरों में री-रिलीज किया गया। इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर आई नई फिल्मों से ज्यादा फैंस का प्यार मिल रहा है। फिल्म को लेकर सोशल मीडिया पर भी काफी चर्चा हो रही है। इस फिल्म को देख फैंस की मांग बढ़ गई है कि अभिनेता को बड़ी फिल्मों में कास्ट किया जाए। हर्षवर्धन राणे इन दिनों इंडस्ट्री में स्ट्रगल कर रहे हैं।

चर्चा से ज्यादा है काम पर विश्वास

बातचीत में हर्षवर्धन ने बताया कि कैसे उन्हें इंडस्ट्री में चल रहे भाई-भतीजावाद से परेशानी है। हर्षवर्धन ने कहा कि ईमानदारी से कहूं तो मैं उन लोगों में से हूं जो अपने आस-पास चल रही आवाजों से ज्यादा काम करने में विश्वास करता हूं। कहा जाता है कि स्टार किड्स को बेहतर काम मिला है, लेकिन जब मैं लिस्ट देखता हूं, तो इसमें से कुछ लोग पहले ही अपने काम से हट चुके हैं।

बाहर से आए लोग कर रहे बेहतर काम

हर्षवर्धन राणे ने कहा कि स्टार किड्स से ज्यादा इंडस्ट्री के लोग बेहतर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम उनकी सफलता पर नजर क्यों नहीं डालते हैं। उन्होंने कहा कि इंडस्ट्री से ही नहीं अगर हमें किसी भी चीज पर संशय हो तो हमें उसके नोट्स बनाकर रख लेने चाहिए, इसमें कोई बुराई नहीं है।

बाहरी कलाकार कर रहे हैं अच्छा काम

हर्षवर्धन ने कहा, मैं कहता हूं कि स्टार किड्स से ज्यादा बाहर से आए लोग बेहतर काम कर रहे हैं। स्टार किड्स को इंडस्ट्री बाहर से आए कलाकारों से कम ही काम मिल रहा है। इंडस्ट्री से कोई ताल्लुक न रखने वाले कलाकार ही बेहतर काम कर रहे हैं।

प्रोड्यूसर का मिला प्यार

अभिनेता ने इस बातचीत में कहा कि मैं चाहता हूं कि इंडस्ट्री मुझ पर विश्वास करे। सनम तेरी कसम फिल्म को लेकर हर्षवर्धन ने कहा, मुझे उन्होंने एक बेहतर कहानी दी, जिसे मैंने बहुत अच्छे तरीके से लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की। मैं आखिरी में प्रोड्यूसर को खुश देखना चाहता हूं। उन्होंने मुझे जोर से गले लगा लिया था, जब ये फिल्म रिलीज हुई थी। मुझे फिल्म के कारण बहुत सारे फैंस का प्यार भी मिला है, जो मेरे लिए बहुत महत्व रखता है।

कावेरी कपूर ने बॉबी और ऋषि की लव स्टोरी का गाना खुद गाया और लिखा है?

बॉबी और ऋषि की लव स्टोरी कावेरी कपूर के लिए हमेशा खास रहेगी। सिर्फ इसलिए नहीं कि यह उनका बॉलीवुड डेब्यू है, बल्कि इसलिए कि उन्होंने फिल्म के लिए एक खूबसूरत गाना गाया और कंपोज किया। फिल्म का गाना एक धागा तोड़ा मैंने एक खूबसूरत धुन है, जो जीवन के उस उथल-पुथल में खुद को खोजने के बारे में है, जो कभी-कभी जीवन बन जाता है। यह इस के बारे में है कि जीवन के घटित होने के बाद जीवन का क्या अर्थ है। यह आगे बढ़ने के बारे में है चाहे कुछ भी हो। और जो चीज़ गाने के पीछे के अर्थ की सुंदरता में जान डाल देती है, वह है कावेरी की भावपूर्ण आवाज़।

यह गाना कैसे बना, इस बारे में बात करते हुए कावेरी ने बताया कि जब वह केवल 15 साल की थीं, तब उन्होंने यह गाना लिखा था। यह उन्होंने एक याद के रूप में लिखा था। लेकिन जैसे गाने में बताया गया है, कावेरी का जीवन और उनके प्लान उस समय बदल गए जब उन्हें बॉबी और ऋषि की लव स्टोरी का प्रस्ताव मिला और कुछ बदलावों के बाद इसे फिल्म के साउंडट्रैक में इस गाने को शामिल किया गया। कावेरी ने कहा, यह गाना कभी भी हिंदी गाना नहीं था और मेरी इसे किसी फिल्म में शामिल करने की कोई योजना नहीं थी। जब मैं 15 साल की थी तब मैंने यह गाना बनाया और लिखा था। लेकिन जब फिल्म बनी और कुणाल कोहली और निर्माता मोहन नादर ने इसे सुना, तो उन्हें यह इतना पसंद आया कि उन्होंने मुझसे इसे शामिल करने के लिए कहा। गाना, जिसे दरअसल पहले ए.आर. रहमान और कावेरी ने अंग्रेज़ी में रिकॉर्ड किया था।

गीतकार प्रसून जोशी द्वारा केवल दो दिनों में हिंदी में फिर से तैयार की गई और ए. आर. रहमान द्वारा निर्मित की गई, जिसमें मूल रचना और गायन का श्रेय स्वयं कावेरी को दिया गया।

स्क्रिप्ट अच्छी हो तो बाकी चीजें मायने नहीं रखती

पंचायत फेम एक्टर जितेंद्र कुमार इन दिनों अपने नए गाने 'कह दो ना' को लेकर चर्चा में हैं। ये गाना हाल ही में रिलीज हुआ है। इस गाने में उनके साथ मनप्रीत कौर भी हैं। अब जीतेंद्र ने गाने और अपने इंडस्ट्री के सफर के बारे में बातचीत की। उन्होंने बताया कि फिल्ममेकिंग में राइटिंग सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। अगर स्क्रिप्ट अच्छी हो तो बाकी चीजें मायने नहीं रखती है।

गाने की शूटिंग का अनुभव कैसा रहा?

जब मैंने पहली बार गाना सुना, तो मुझे यह नहीं पता था कि इसे किसने बनाया है। लेकिन रेखा मैम (रेखा भारद्वाज) की आवाज ने मुझे आकर्षित किया। जब मैं क्रिएटिव टीम से मिला और उन्होंने जिस तरीके से ब्रीफ किया मुझे बहुत अच्छा लगा। शूटिंग के दौरान, जब भी मस्ती और मजाक का मौका मिलता, हम इसका आनंद लेते थे और इस दौरान कुछ नई दोस्तियां भी बनीं।

आप अपनी जर्नी को किस तरह से देखते हैं?

मेरी जर्नी काफी रोचक रही है। मुझे बहुत अच्छे मौके मिले और मैं कई दिलचस्प किरदारों का हिस्सा बना। मुझे खुशी है कि मैं उन कहानियों का हिस्सा बना जो अलग और यूनिक थीं। मैं चाहता हूं कि मैं और भी नई कहानियां और किरदार करूं, जो लोगों ने पहले नहीं देखे हों।

अब राइटिंग के काम को किस तरफ से देखते हैं?

फिल्ममेकिंग में सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा राइटिंग है। वही लोग जो फिल्म बना रहे हैं, उन्हें पता होता है कि क्या होने वाला है, कौन से किरदार होंगे और स्क्रीन पर क्या दिखाई देगा। राइटर और डायरेक्टर की कल्पना बहुत जरूरी है। अब एक्टर्स भी अच्छे राइटर्स के साथ काम करना चाहते हैं क्योंकि अगर स्क्रिप्ट अच्छी हो, तो बाकी सारी चीजें सेकेंडरी हो जाती हैं। इसलिए राइटिंग को सबसे ज्यादा महत्व दिया जा रहा है।

ओटीटी कैसा प्लेटफॉर्म है?

7-8 साल पहले जो साधारण कंटेंट था, वह अब बदल चुका है। अब लोग ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर बहुत तरह के कंटेंट देख रहे हैं, जो रोमांटिक, थ्रिलर और फैंटेसी जैसी शैलियों में होते हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने फिल्म मेकर्स को ज्यादा स्वतंत्रता दी है, जिससे वे अपना कंटेंट ज्यादा प्रयोगात्मक तरीके से बना सकते हैं। अगर कंटेंट अच्छा होता है, तो लोग उसे पसंद करते हैं और यह हिट हो जाता है।

डिसएग्रीमेंट्स को कैसे हैंडल करते हैं?

ऐसी स्थितियां आती हैं जब डिसएग्रीमेंट्स होते हैं और उस समय लगता है कि सबसे बुरा हो गया है। कई बार यह निगेटिव एनर्जी देती है और आगे बढ़ने में रुकावट डालती है। मुझे लगता है कि ऐसी स्थिति में हमें कुछ भी दिल पर नहीं लेना चाहिए, क्योंकि जिंदगी बहुत छोटी है। किसी के साथ बिना कुछ कहे अगर आप कुछ रखते हैं, तो वह सिर्फ आपका नुकसान है। इसलिए, हमेशा खुलकर अपनी बात कहनी चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए।

बजट की वजह से ऋतिक की कृष 4 में हो रही देरी

तिक रोशन की फिल्म ऋकृष भारतीय सिनेमा की सबसे सफल फ्रेंचाइज फिल्मों में से एक है। अब इसका चौथा पार्ट आने वाला है। राकेश रोशन ने फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट दिया है। उन्होंने फिल्म स्केल और बजट को लेकर चिंता जाहिर की है। उन्होंने कहा... मुझे पता है कि लोग लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं। लेकिन अब तक किसी तरह फिल्म के बजट को सही तरीके से तय नहीं कर पाए हैं। यह फिल्म लार्ज स्केल पर बननी है। अब अगर मैं बजट को कम करने के लिए इसके स्केल को कम करता हूं, तो यह एक साधारण फिल्म की तरह लगती है। अब दुनिया छोटी हो गई है। इन दिनों, बच्चों को कई तरह की सुपरहीरो फिल्में दिखाई जा रही हैं। ऐसे में छोटी से छोटी गलती भी पकड़ में आ जाएगी और उसकी आलोचना होगी।

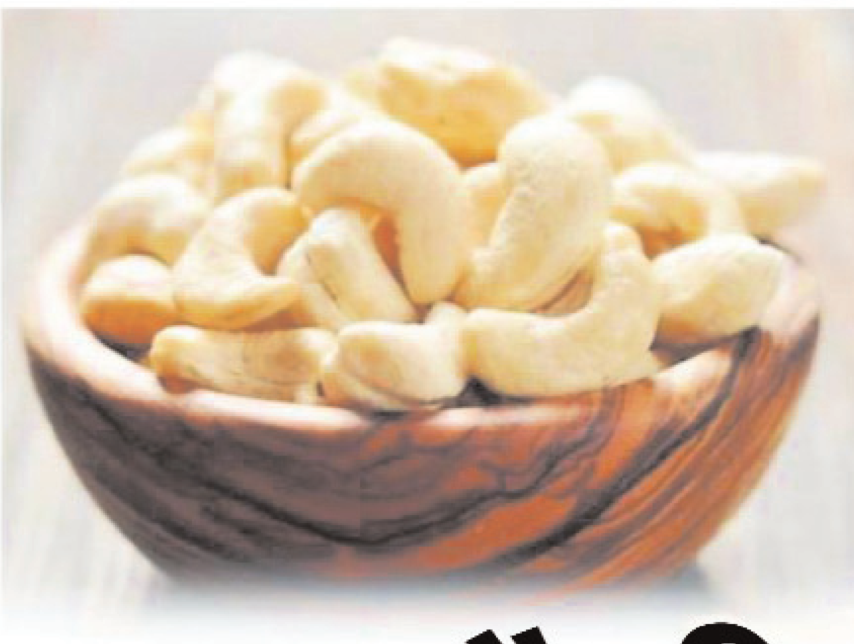

उत्तम औषधि है काजू

मेवे का प्रयोग उत्तम औषधि के रूप में किया जाता है। क्योंकि मेवा स्वाद की नहीं बल्कि सेहत की दृष्टि से भी उतनी ही फायदेमंद हैं। काजू में मैग्नीशियम पाया जाता हैं जो उच्च रक्तचाप को कम करने में और दिल के दौररे को रोकने में मदद करता है। काजू कोलेस्ट्रॉल के स्तर को भी संतुलित रखता है। काजू में प्रोटीन की मात्रा काफी होती है जो बॉडी व हड्डियों को मजबूत बनाती है। चाहे मिठाई में काजू कतली हो या फिर दूसरे पकवानों में काजू का इस्तेमाल। काजू किसी भी आम डिश को शाही बना सकता है। अब जब काजू हमें इतना पसंद ही है तो इससे होने वाले लाभ के बारे में भी जान लेना चाहिए। काजू में प्रोटीन, खनिज लवण, लौह, फाइबर, फोलेट, मेग्नीशियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, और तांबा का अच्छा स्त्रोत है। काजू का तेल, स्कर्वी मस्सा और रिंगवर्म के उपचार के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आप प्रतिदिन 7–10 काजू का सेवन कर सकते हैं। काजू खाने से मसूड़ों और दांतों को स्वस्थ रखता है। काजू में मोनो सैचुरेटड फैट होता है जो की दिल को स्वस्थ रखता है ओर दिल की बीमारियों के खतरे को कम करते में मदद करता है। काजू में एंटी ओक्सिडेंट भी होते हैं जो कैंसर से बचाव करता है। काजू पाचन शक्ति को बढाता है। इससे भूख भी कहीं अधिक लगती है। आंतों में भरी गैस कम किया जा सकता है। काजू में पाए जानवाले फाइटो–केमिक्लस कैंसर और दूसरे बीमारियों से सुरक्षा करते हैं। जिन महिलाओं को मेनोपॉज है उन्हें तनाव, स्ट्रेस होनो एक आम सा समस्या है। उन महिलाओं को रोजाना एक काजू खाना चाहिए। काजू में पर्याप्त मात्रा में मैग्नीशियम पाया जाता है। काजू में अधिक एनर्जी होती है और इसमें अधिक मात्रा में फाइबर होता है। इसलिए इसको खाने से शरीर का वजन संतुलित रहता है।

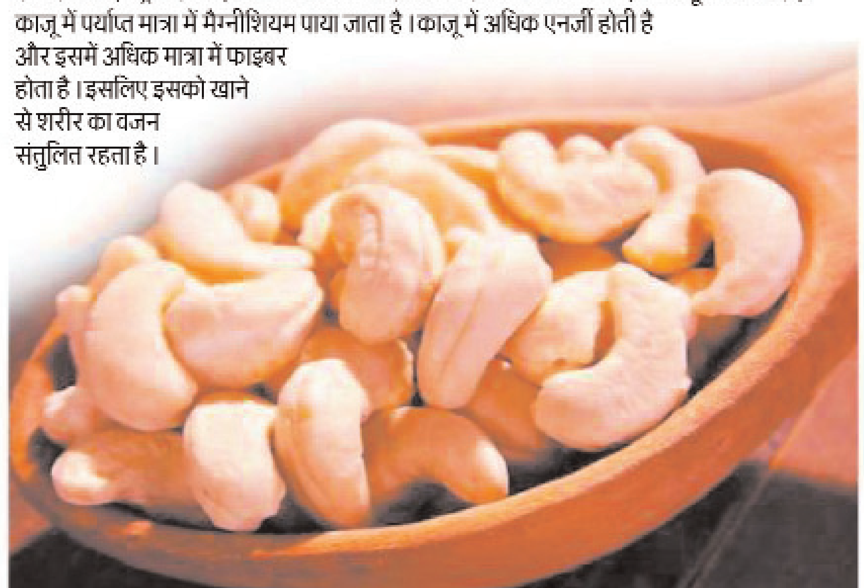

खीरे में हैं सेहत व सौन्दर्य के अनगिनत गुण

खीरा सेहत के लिए काफी लाभकारी माना जाता है। ये सेहत के साथ–साथ सौंदर्य में बहुत फायदेमंद होता है। कम फेट व कैलोरी से भरपूर खीरे का सेवन आपको कई रोगो से बचाने में सहायता करता है। खीरे को आप कई तरह से खा सकते हैं, जैसे सलाद, जूस, सैंडवीच, या यूं ही नमक छिडक कर भी खा सकते हैं। खीरे के स्वास्थ्यवद्र्धक और सौन्दर्यवद्र्धक गुण दोनों अनगिनत होते हैं जैसे आयुर्वेद के अनुसार खीरा, पित्त, रक्त पित्त दूर करने वाला तथा रक्तविकार और मूत्र कच्छ नाशक रूचिकर फल है। खीरे के प्रयोग से पेट तथा जिगर की जलन शांत होती है। खीरे का नियमित सेवन से मासिक धर्म में होने वाली समस्याओं से भी छुटकारा मिलता है। खीरा एक ऐसी सब्जी है जिसमें कोलेस्ट्रोल बिल्कुल नहीं होता। यह हृदय रोगी के लिए बहुत लाभकारी माना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार खीरा में जो स्टे्रराल नाम का योगिक होता है वह कोलेस्ट्रोल को कम करने में मदद करता है। खीरे में कैलोरी कम और फाइबर उच्च मात्रा में होता है। इसलिए मीडे डे में भूख लगने पर खीरा खाने से पेट देर तक भरा हुआ रहता है। आयुर्वेद के मुताबिक पेट में गर्मी होने के वजह से मुंह से बदबू निकलता है, खीरा पेट को शीतलता प्रदान करने में मदद करता है।

गर्भाशय में रसौली के लक्षण जान

इस तरह करें घरेलू उपचार

बिगड़ते लाइफस्टाइल में महिलाओं में कई समस्याएं देखने को मिलती है, इन्हीं में से एक फाइब्रॉइड यानी रसौली। फाइब्रॉइड या रसौली की गांठें महिलाओं के गर्भाशय में या उसके आसपास बनती है। इस बीमारी के ज्यादातर लक्षण न होने के कारण महिलाओं को इसका पता नहीं चल पाता। एक शोध के अनुसार लगभग 40 प्रतिशत महिलाएं रसौली का शिकार होती है। वैसे तो अक्सर यह समस्या 30 से 50 की उम्र में देखने को मिलती है लेकिन गलत खान-पान के कारण यह समस्या इससे कम उम्र में हो जाती है। मोटापे से ग्रस्त महिलाओं का एस्ट्रोजन हार्मोन स्तर ज्यादा होने के कारण उन्हें इसका खतरा सबसे अधिक होता है। इस बीमारी के कुछ सामान्य लक्षणों से इसकी पहचान करके आप इससे बच सकते है। तो आइए जानते है फाइब्रॉइड के लक्षण और इसे दूर करने के कुछ घरेलू उपाय।

फाइब्रॉइड या रसौली के लक्षण

पीरियड्स के दौरान भारी ब्लीडिंग
अनियमित पीरियड्स
पेट के नीचे के हिस्से में दर्द
प्राइवेट पार्ट से खून आना
कमजोरी महसूस होना
प्राइवेट पार्ट से बदबूदार डिस्चार्ज
पेट में अचानक दर्द कब्ज
पेशाब रुक–रुककर आना

फाइब्रॉइड या रसौली के घरेलू उपाय

केस्टर ऑयल

दिन में 2 बार केस्टर ऑयल और अदरक के रस को मिला कर लें। सुबह और रात में सोने से पहले इसका सेवन इस बीमारी को दूर करता है।

लहसुन

रसौली की समस्या होने पर खाली पेट रोज 1 लहसुन का सेवन करें। लगातार 2 महीने तक इसका सेवन इस समस्या को जड़ से खत्म कर देता है।

बरडॉक रूट

यह जड़ी–बूटी एस्ट्रोजन को डिटॉक्स कर गर्भाशय फाइब्रॉइड को कम करने में मदद करती है। एंटी–इंफ्लेमेंटरी गुण से भरपूर इस जड़ी–बूटी का सेवन इस समस्या और कैंसर के खतरे को कम करता है।

सेब का सिरका

गर्म पानी के साथ सुबह शाम सेब का सिरका पीने से फाइब्रॉइड की समस्या दूर होती है। इसके अलावा इसका सेवन फाइब्रॉइड से होने वाले पेट दर्द को भी दूर करता है।

चेस्टबेरी

यह हर्ब हार्मोन संतुलन करके एस्ट्रोजन के कम स्तर को बनाए रखने और सूजन को कम करने में मदद करता है। चेस्टबेरी हर्ब से बने मिश्रण की 25–30 बूंदों को दिन में दो से चार बार लेने से आपकी यह समस्या दूर हो जाएगी।

हल्दी

एंटीबॉयोटिक गुणों से भरपूर हल्दी का सेवन शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकाल देता है। यह फायब्रॉइड की ग्रोथ को रोक कर कैंसर का खतरा कम करता है।

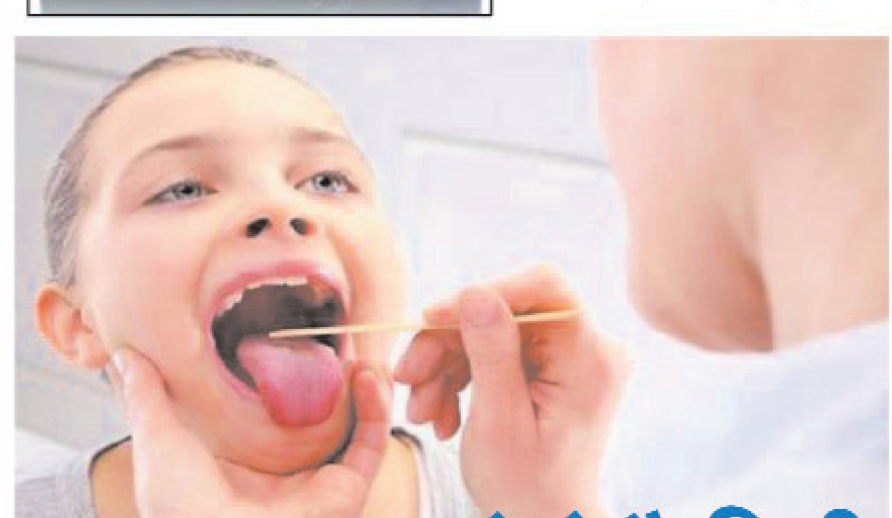

दांतों में कैविटी की समस्या को

इन तरीकों से करें दूर

सफेद और सुंदर दांत व्यक्ति की खूबसूरती को और बढ़ादेते हैं। इनके बिना खाना खाने का कोई मजा नहीं आता। ऐसे में दांतों की सही देखभाल करना बहुत ही जरूरी होता है। कुछ लोग के गलत खान-पान या सही तरीके से दांतों की देखभाल न करने पर इनमें कैविटी यानी कीड़ा लग जाता है। यह किसी भी उम्र के लोगों को हो सकता है। कई बार कीड़ा लगने से इतना दर्द होता है कि उसको सहन करना बहुत मुश्किल हो जता है। इस दर्द से छुटकारा पाने के लिए कई लोग दवाइयां और ट्रीटमेंट का सहारा भी लेते हैं। जो की बहुत महगा है। ऐसे में आप नैचुरल तरीके से भी दांतों में लगे कैविटी को आसानी से हटा सकते हैं। तो आइए जानते हैं उन तरीकों के बारे में।

क्या है कैविटी

शक्करयुक्त खाद्य पदार्थो यानि बिस्किट्स, चॉकलेट्स, आलु, केला को खाने से मुंह में अमल बनने लगते हैं। इससे दांतों में धीर–धीरे छोटे–छोटे से छिद्र बन जाते हैं। बाद में इन्हीं छिद्रों में कैविटी या कीड़ा लगत जाता है। इसके अलावा दांतों में संक्रमण होने पर भी कैविटी बन सकती है। इसका इलाज न करावाने पर दांतों के खराब होने का खतरा बढ़ जाता है। पीड़ित व्यक्ति को दांत खोने पड़ सकते हैं।

ऐसे करे कैविटी से बचाव

मिठाई, कैंडी और चॉकलेट खाना कम करें।
शक्करायुक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करने से बचें।
ज्यादा मिठ्ठा फल न खाएं।
सोडा न पीएं। इसमें 12 से 40 ग्राम चीनी की मात्रा होती है जो कि दांतों के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं होती। खाने के बाद कुल्ला करें।
तेल और मसालेदार भोजन न खाएं।
ज्यादा गर्म या ठंडा खाना खाने से बचें।

कैविटी लगे दांतों का घरेलू इलाज

नारियल या सूरजमुखी का तेल

कीड़ा लगे दांतों में तेल भरना सबसे बेस्ट घरेलू तकनीक है। इसके लिए आप नारियल तेल या सूरजमुखी का तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं। 1 चम्मच तेल को अपने मुंह में कम से कम 20 मिनट तक रखें। इसके बाद कुल्ला करें और ब्रश कर लें। कुछ दिनों तक ऐसा करने से आपको खुद ही फर्क दिखाई देने लगेगा।

फ्लोराइड

यह एक तरह का प्राकृतिक खनिज पदार्थ है। यह दांतों में किसी भी प्रकार का रोग नहीं होने देता है। दांतों को सुरक्षित रखने के लिए उस पानी का इस्तेमाल करें जिस में फ्लोराइड की मात्रा ज्यादा हो। इसके साथ ही टूथ पेस्ट से रोजाना दो बार ब्रश करें।

हींग

हींग का इस्तेमाल करने से भी दांतों के कीड़े खत्म हो जाते हैं। हींग के पाउडर को पानी में डालकर उबा लें। इसके ठंडा होने पर इस पानी से कुल्ला करें। रोजाना ऐसा करने से दांत के कीड़े खत्म हो जाएंगे। इसके साथ ही दांतों में होने वाले दर्द से भी छुटकारा मिलेगा।

प्याज के बीज

दांतों के कीड़े को नष्ट करने के लिए प्याज के बीजों का इस्तेमाल करें। इसके बीजों को चबाने से कीड़े जल्द ही खत्म हो जाते हैं। आप चाहें तो प्याज को बारिक काट कर भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। एक कटोरे बारिक कटा प्याज डालकर उसमे इसमें थोड़ा–सा तेल डालकर कम आंच पर गर्म करें। इससे निकलने वाले धुएं को मुंह में लेने से भी कीड़े मर जाते हैं।

खट्टे-मीठे बेर में समाएं कई गुण

आयुर्वेद के अनुसार बेर दिल की सेहत के लिए बहुत ही लाभकारी है। बेर खाने से कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल रहता है, जिससे दिल से जुड़ी बीमारियां होने की आशंका कम हो जाती है। बरे खाने से बार–बार प्यार लगने की शिकायत भी दूर होती है। खट्टे–मीठे बेर में पोटेशियम, कॉपर, आयरन, फॉस्फोरस और खनिज पदार्थ आदि भी होते हैं। इन सभी तत्वों से इम्यून सिस्टम मजबूत बनता है और शरीर में रोगों से लडने की क्षमता बढती है। गर्मियों में पौधे सुषुप्तावस्था में प्रवेश कर जाते हैं व उस समय पतियां अपने आप ही झड जाती हैं तब पानी की आवश्यकता नहीं के बारबर होती है। इस तरह बेर अधिक तापमान तो सहन कर लेता है लेकिन शीत ऋतु में पडने वाले पाले के प्रति अतित संवेदनशील होता है। क्योंकि इसमें कम पानी व सूखे से लडने की विशेष क्षमता होती है। जिस तरह नींबू और संतरे में विटामिन सी प्रचुर मात्रा पाई जाती हैं उसी तरह बेर में भी। बेर में अन्य फलों के मुकाबले विटामिन–सी और एंटीऑक्सीडेंट ज्यादा मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से त्वचा बढती उम्र तक जवां बनी रहती हैं। इसमें विटामिन सी की मात्रा खट्टे फलों से 20 गुना तक अधिक होती है। बेर की गुठली को घिसकर आंखों में काजल की तरह लगाने से कनीनिका प्रदाह ठीक हो जाता है। आंखों से बहने वाला पानी भी बंद हो जाता है। बेर के पत्तों को पानी में काफी समय तक उबालकर काढा बनाकर छानकर पीने से शरीर की बढती चर्बी कंट्रोल हो जाती है। चेचक में बेर के पत्तों का रस भैंस के दूध के साथ रोगी को देने से रोग का वेग कम होता है। बेर में 6 ग्राम पत्तों के चूर्ण को 2ग्राम गुड के साथ मिलाकर रोगी को खिलाने से भी 2–3 दिन में चेचक खत्म होने लगता है।

यथार्थ फाउंडेशन द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में प्रतिभावानों को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। गत दिवस यथार्थ फाउण्डेशन क्लासेज कम्प्यूटर सेंटर में प्रतिभावान व उत्कृष्ट परिणाम देने वाले विद्यार्थियों को सम्मान समारोह नपाध्यक्ष सावित्री देवी स्वामी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थापक जावेद मोहम्मद भाटी ने की। सम्मान समारोह में आरपीएससी में चयनित जूनियर अकाउंटेट मधु बारोलिया, अध्यापक राजेंद्र उजीनिया, दिल्ली पुलिस में चयनित मनोज सैनी, महेश सैनी, राजेंद्र चौधरी, महेंद्र सैनी, ईश्वर सैनी, संजय चौधरी, अग्निवीर- अजरूद्दीन, अविनाश प्रजापत, संदीप माली, थल सेना में चयनित इमरान, नर्सिंगकर्मी निराज नीलू, उत्कृष्ट प्ररिणाम देने के लिए 12 वीं कक्षा की छात्रा रिद्धिमा सोलंकी 91.40%, नगीना बानो 90.80%, योगिता सोलंकी 85.20%, तनु प्रजापत 79.80%, 10 वीं कक्षा की छात्रा मन्तसा 81.80% सहित अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम करने वाले विद्यार्थियों का मोमेंटो देकर सम्मान किया गया। व्यवस्थापक शाहरुख भाटी ने बताया कि इस दौरान विश्व हिन्दू परिषद के जिलाध्यक्ष डॉ. पुखराज स्वामी, बस स्टैंड व्यापार मंडल अध्यक्ष अनिल सोगानी, जयपुर ग्रामीण कांग्रेस उपाध्यक्ष हनीफ तंवर, पार्षद कालू योगी, खातून बेगम, राहुल पारीक, बबलू गहलोत चुन्नीलाल, कल्पना रानी बाबूदीन, इमरान शाह, अशफाक, रामेश्वर नीलू, जमील खान, मीनाक्षी, कमलेश उजीनिया, मनीष, दीपक आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

शिव परिवार की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर महिलाओं ने निकाली कलश यात्रा

जयपुर टाइम्स

पावटा(निसं.)। कस्बे के निकटवर्ती तुलसीपुरा के ढाणी पालमपुर में शिव पंचायत की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर सोमवार को सैकड़ो महिलाओं ने भव्य कलश यात्रा निकाली।वहीं आयोजनकर्ताओं ने जानकारी देते हुए बताया कि यह कार्यक्रम तीन दिवसीय है जिसके अंतर्गत मंगलवार को मूर्तियों को नगर भ्रमण करवाया जाएगा तथा बुधवार को मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा करवाई जाएगी इस दौरान भंडारे का भी आयोजन होगा। वहीं सोमवार को कलश यात्रा कुंदन दास बाबा के मंदिर से प्रारंभ होकर मुख्य मार्गो से गुजरते हुए कार्यक्रम स्थल तक पहुंची।इस दौरान महाराज मुकेश, निरंजन,शंकर, राहुल शास्त्री मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा करवाएंगे।इस दौरान कलश यात्रा आयोजन के अंतर्गत मुकेश, महेश ठेकेदार, मनोज गिठाला, कैलाश, विनोद, रेवतमल यादव, कैलाश यादव,रोहिताश यादव, राजू सैनी,लीलाराम, महेश, बनवारी, धोलूराम सहित अनेकों लोग मौजूद रहे।

संजय शर्मा ने किया अतिरिक्त जिला कलक्टर का पदभार ग्रहण

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निसं.)। संयुक्त शासन सचिव, कार्मिक (क-4) विभाग, राजस्थान जयपुर के आदेशानुसार आर.ए.एस. अधिकारी संजय शर्मा ने सोमवार को अतिरिक्त जिला कलक्टर सवाई माधोपुर का पदभार ग्रहण कर लिया है। पदभार ग्रहण करने पर कलेक्ट्रेट अनुभाग के विभागीय अधिकारियों एवं कार्मिकों ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अतिरिक्त जिला कलक्टर सवाई माधोपर संजय शर्मा को शुभकामनाएं दी। इससे पूर्व अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा ने महाप्रबंधक राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड जयपुर, उप निदेशक समेकित बाल सेवाएं जयपुर, शासन उप सचिव उच्च शिक्षा विभाग जयपुर, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी करौली सहित अन्य पदों पर अपनी सेवाएं दी है। उन्होंने कहा कि सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम छोर पर बैठे पात्र व्यक्ति तक पहुंचाना उनकी प्राथमिकता रहेगी।

लालराई में नशा मुक्ति अभियान के लिए जागरूक किया नशा मुक्त मनुष्य ही जीवन में सफलता पाता है : स्नेहा बहिन

जयपुर टाइम्स

बाली पाली(निसं.)। भारत सरकार के मिशन स्पंदन के तहत मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के सानिध्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय राजयोग संस्था बाली द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लालराई में छात्र-छात्राओं को नशा मुक्ति अभियान के लिए जागरूक किया। अभियान में ब्रह्मकुमारीज स्नेहा बहिन व दीप्ति बहिन ने नशे के दुष्प्रभाव पर चर्चा की एवं नशा नाश की जड़ है कि विस्तार से जानकारी देते हुए नशे के विरुद्ध नशा मुक्ति की शपथ दिलाई। बी के बहिन ने कहा कि नशा मुक्त मनुष्य ही जीवन में सफलता पाता है। नशे की लत से लोगों को गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ होती हैं। नशे से लीवर खराब होने, हृदय संबंधी रोग, सांस संबंधी समस्याएँ और शरीर में तंत्रिका तंत्र को हानि जैसे कई रोग हो सकते हैं। मादक द्रव्यों के सेवन को अक्सर अवसाद, चिंता और मनोविकृति जैसे मानसिक स्वास्थ्य विकारों से जोड़ा जाता है। यह पहले से मौजूद मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों को भी बढ़ा सकता है। नशे से लोगों व्यवहार में बदलाव हो सकते हैं, जिससे निर्णय लेने की क्षमता कमज़ोर हो सकती है और विकट परिस्थितियों में दुर्घटनाओं और चोटों की संभावना बढ़ सकती है। नशा मुक्ति इस समस्या से छुटकारा पाने का उपाय है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है संस्था प्रधान भगवान लाल ने सभी अतिथियो का स्वागत किया। इस मौके पर वीरमाराम, प्रमोद भाटी, जेठू सिंह, कालूराम, सोहनलाल चौधरी, सोहनलाल सुथार, रुपाराम, चेनाराम, ओमप्रकाश सीरवी, प्रहलाद सिंह मौजूद थे। बाली के निकट लॉरी विद्यालय में नशा मुक्ति की जानकारी देते हुए।

जनभागीदारी से प्लास्टिक मुक्त महाकुंभ-2025 की ऐतिहासिक पहल

जयपुर टाइम्स

प्रयागराज(निस) महाकुंभ 2025 को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए 'एक थैला, एक थाली' अभियान शुरू किया गया, जिसमें प्लास्टिक मुक्त आयोजन की ऐतिहासिक पहल की गई। इस अभियान के तहत डिस्पोजेबल प्लेट, गिलास और प्लास्टिक थैलियों के बजाय स्टील की प्लेटें और कपड़े के थैले वितरित किए गए। अभियान की सफलता नवंबर 2024 में शुरू हुए इस अभियान में 14.17 लाख प्लेटें, 13.46 लाख थैले और 2.63 लाख गिलास एकत्र किए गए। देश के 43 प्रांतों की भागीदारी से 7,258 संग्रह केंद्र स्थापित किए गए और 2,241 सामाजिक संगठनों ने इसमें सक्रिय योगदान दिया।

प्रभाव और लाभ

डिस्पोजेबल कचरा 80-85% तक कम हुआ, जिससे 29,000 टन अपशिष्ट उत्पादन रोका गया। खाद्य अपशिष्ट में 70% तक गिरावट आई। प्रति दिन 3.5 करोड़ की बचत, जिससे 40 दिनों में कुल 140 करोड़ का व्यय रोका गया।

इस पहल से न केवल महाकुंभ को स्वच्छ बनाया गया, बल्कि पूरे देश में पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया।

खेत पर जा रहे मिट्टी के डंपर को जब्त करने पर जताया विरोध

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां(निसं)। खनिज विभाग द्वारा किसान के खेत पर जा रही काली मिट्टी के डंपर को जब्त करने पर ऊपरमाल सेंड स्टोन विकास समिति के सदस्यों ने सहायक खनि अभियंता बंशीलाल सुथार से मिल कर उनके द्वारा की गई इस कार्रवाई का विरोध जताया।जानकारी के मुताबिक खदान से मिट्टी का डंपर उमाजी का खेड़ा स्थित खेत पर जा रहा था। जिसे सहायक खनिज अभियंता ने जब्त कर 15 फरवरी को खनिज विभाग कार्यालय में खड़ा करवा दिया और 1 लाख रुपए का जुर्माना लगाया। इस दौरान रॉयल्टी संग्रहण ठेकेदार द्वारा निर्धारित दर से अधिक रॉयल्टी वसूलने का मामला भी उठाया गया। समिति के सदस्यों ने दूरभाष पर विधायक गोपाल खंडेलवाल को स्थिति से अवगत कराया।जिस पर और उन्होंने शीघ्र कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। उदयपुर खनिज विभाग के उच्च अधिकारियों का कहना हैं कि मिट्टी पर किसी तरह का कार्रवाई करना नियमों में नहीं है।ज्ञापन देने वालों में अध्यक्ष नरोत्तम धाकड़ समेत समिति के पदाधिकारी व सदस्य मौजूद रहे।

धरा को बनाए हराः सागर विद्यालय में पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जयपुर टाइम्स

बाली/लुणावा(निसं.) सागर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में राजाराम जी महाराज, संत कृपाराम जी महाराज, बाल संत जगदीश महाराज और दिव्यांशु महाराज के सानिध्य में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संत कृपाराम जी महाराज ने विद्यार्थियों और ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा, "मनुष्य का असली मित्र तो पेड़ है, जो जीवनभर और अंत समय में चिता तक साथ देता है।" उन्होंने सभी से आह्वान किया कि धरा को हरा-भरा बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति कम से कम दो पौधे अवश्य लगाए और उनका पोषण करे। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ-साथ ग्रामीणों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर किशोर सोलंकी, कैलाश वैष्णव, भरत ओझा, प्रधानाचार्य हीराराम परमार, दिलीप वैष्णव, भुवनेश सिंह चारण, वक्ताराम, मयंक, विक्रम, सुरजनारायण वैष्णव, रूपेश, प्रमोद सिंह, नेती राम देवासी, हिन्दुराम, मोडाराम, नाथु सैन, अनिल सोमपुरा, हिरेंद्र वैष्णव, रुस्तम, रमेश रमेशा, विक्रम सिंह और राजू गर्ग सहित कई ग्रामीण उपस्थित रहे। इस आयोजन ने विद्यार्थियों और ग्रामीणों में पर्यावरण संरक्षण और पौधारोपण के प्रति जागरूकता पैदा की, साथ ही प्रकृति से प्रेम और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित की।

रेगिस्तान में अचानक पानी आ जाने से बाढ़ जैसी स्थिति, करीब 50 से ज्यादा घर जलमग्न

जैसलमेर(निस) राजस्थान के जैसलमेर में पिछले साल अचानक जमीन से पानी की तेज धारा निकलने की घटना ने सबका ध्यान आकर्षित किया था. यह घटना विलुप्त हो चुकी सरस्वती नदी के क्षेत्र में ट्यूबवेल की खुदाई के दौरान हुई थी, जिसमें जमीन से इतनी तेज और ऊंची पानी की धारा निकल रही थी कि कुछ ही घंटों में चारों तरफ पानी ही पानी नजर आने लगा. रेगिस्तान कहे जाने वाले जैसलमेर में सोमवार को ऐसी ही अचानक से पानी आ जाने के कारण इलाके में बाढ़ जैसी स्थिति हो गई. लोगों के घरों में करीब 4-5 फीट तक पानी भर गया. इसके बाद लोगों को ऊंचे स्थान पर जाना पड़ा. घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस-प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची है. दरअसल, चार शहर पोकरण, बालोतरा, सिवाना, नाचना के 550 गांवों को पेयजल आपूर्ति करने वाली 60 इंच की पाइपलाइन है. रामदेवरा में सोमवार दोपहर पोकरण-फलसूंड-सिवाना पेयजल परियोजना की 60 इंच की पाइप लाइन अचानक से फट गई. जानकारी के मुताबिक, रामदेवरा में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित नई बस्ती के पास पाइपलाइन फटी है।

कार्यालय नगर परिषद्, सरदारशहर (जिला चुरू)
Ph. 01564-220681, 220030 Email: eonpsdr@gmail.com

क्रमांक :— न.प.स./2024—25/3444—45 दिनांक :— 15.02.2025

सिमित निविदा सूचना सं. 27 वर्ष 2024—25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से नगर परिषद् सरदारशहर द्वारा 1 कार्य के लिए निविदा सूचना संख्या 27 वर्ष 2024—25 आमंत्रित की जाती है। जिनका विवरण निम्नानुसार है। विस्तृत विवरण वेबसाइट www.sppp.raj.nic.in पर तथा कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद् सरदारशहर के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकता है।

S.No.	निविदा संख्या	NIB CODE	UBN CODE
01	सिमित निविदा सूचना सं. 27 वर्ष 2024—25	DLB2425A5628	DLB2425SSOB17323

राज.संवाद/सी/24/11825 आयुक्त

राजस्थान—सरकार
कार्यालय नगरपरिषद चूरू (राज0)
राजकीय डेडराज भरतिया अस्पताल के पास, चूरू :— 331001
दूरभाष :— 01562—250318 ई—मेल :— npchuru@gmail.com
क्रमांक :— न.प.चूरू/विधुत शाखा/2024—25/13584499 दिनांक :— 13.02.2025

निविदा सूचना 119 वर्ष 2024—25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से नगरपरिषद, द्वारा 01 कार्य की एस.पी.पी. पोर्टल निविदा आईडी नम्बर **DLB2425A5619** आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण वेबसाइट www.sppp.raj.nic.in पर तथा कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगरपरिषद चूरू के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकता है।
UBN Code :- DLB2425WSOB17266
राज.संवाद/सी/24/11821 आयुक्त, नगरपरिषद, चूरू

सम्मन बनाम कायम मुकाम
(आर्डर 22 रूल 4 जाब्ता दीवानी)

अज अदालत- अपर जिला न्यायाधीश मुकाम रतनगढ
शान्तिदेवी आदि बनाम ग्राम पंचायत पड़िहारा आदि

दावा बाबत निरस्त किये जाने पट्टा
मुकदमा नम्बर 4 सन् 2013

बनाम-

मुसम्मी श्रीमती विमलादेवी पत्नी श्री चन्द प्रजापत निवासिनी मौहल्ला रेल्वे स्टेशन के पास, मैन बाजार रोड़, पोस्ट - लाडनूं, जिला नागौर, राजस्थान।

चूंकि श्रीमती शान्तिदेवी आदि ने इस अदालत में तारीख 17 माह फरवरी सन् 2013 को 1. एक दावा शान्तिदेवी आदि बनाम ग्राम पंचायत आदि प्रतिवादीगण दायर किया जिसकी सुनवाई के दौरान प्रतिवादी संख्या 3 मालचन्द फोत हो गया। और चूंकि शान्तिदेवी आदि वादीगण ने मजकूर के दरख्वास्त अदालत हाजा में यह जाहिर करने की आप मुतवफ्फी मालचन्द प्रतिवादी मजकूर के कायम मुकाम जायज हो और इस्तदुआ की है बजाय उससे आपको कायम मुकाम बनाये जावें।
लिहाजा बजरिये हाजा बगर्ज जवाब देही 1.
दिनांक 27 माह 2 सन् 2025 को अदालत हाजा में हाजिर होने के लिये तलब किया जाता है और तारीख मुकर्रर पर आपके हाजिर न होने पर मुकदमा आपकी गैर हाजरी में सुना व फैसल किया जावेगा।
बसन्त मेरे दस्तखत व मुहर अदालत के आज तारीख 17 माह 2 सन 2025 को जारी किया गया।

न्यायालय अपर जिला न्यायाधीश

नोटिस मजरिया अदालत अपर जिला न्यायाधीश, रतनगढ़ (चूरू)
न.मु. 03 सन् 2022
सुरेन्द्र कुमार नाहर बनाम सर्व साधारण आदि
प्रार्थना पत्र उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्राप्त करने बावत।

नोटिस बनाम- सर्वसाधारण

उपरोक्त अनुवानी प्रार्थना-पत्र उतराधिकार प्रमाण-पत्र अपने पिता स्व. बच्छराज नाहर व माता कानकंवरी देवी नाहर का प्राप्त करने बावत आवेदक सुरेन्द्र कुमार नाहर पुत्र स्व0 बच्छराज नाहर (ओसवाल) निवासी वार्ड नम्बर 14 जो राजलदेसर जिला चूरू (राज0) द्वारा न्यायालय वाला में प्रस्तुत किया है, विचाराधीन है। जिसमें आप अनावेदक के रूप में पक्षकार संयोजित है।

अतः आपको जरिये नोटिस आगाह किया जा रहा है कि यदि आपको कोई उजर आपति हो तो तारीख पेशी 27/02/2025 के रोज वक्त 10 एम. एम. पर स्वयं अथवा जरिये अपने अधिवक्ता उपस्थित होकर वजह जाहिर करें। इसके बावजूद भी आपके अनुपस्थित रहने पर उताधिकार प्रमाण-पत्र प्राप्ति का प्रार्थना-पत्र की एकतरफा सुनवाई की जाकर प्रार्थना-पत्र का फैसल कर दिया जावेगा।

नोटिस आज दिनांक 23/01/2025 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा लगाकर जारी किया गया।

न्यायालय की अज्ञान से
रीडर
न्यायालय अपर जिला न्यायाधीश, रतनगढ़

हर्षोल्लास से हो चूरू महोत्सव का आयोजनः सुराणा

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने सोमवार को डीओआईटी वीसी सभागार में आवश्यक सेवाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक व बीस सूत्री कार्यक्रम की समीक्षा बैठक में चर्चा कर अधिकारियों को निर्देश दिए। जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि हर्षोल्लास से चूरू महोत्सव का आयोजन हो। समस्त अधिकारी, कर्मचारी समयबद्ध ढंग से सभी तैयारियां सुनिश्चित करें। महोत्सव से जुड़े सभी आयोजन गरिमापूर्ण एवं रोचक अंदाज में संपन्न हों। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुरूप प्रत्येक नागरिक तक बेहतरीन सुविधाओं का लाभ पहुंचे और उनकी समस्याओं का त्वरित निस्तारण हो। इसलिए सभी अधिकारी सरकार की मंशानुरूप प्रकरणों का निस्तारण कर आमजन को संतुष्ट करें। उन्होंने सभी अधिकारियों से कहा कि सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों का समयबद्ध ढंग से निस्तारण सुनिश्चित करें। प्रकरणों के निस्तारण में निर्धारित समयसीमा का ध्यान रखें ताकि अनावश्यक पेंडेंसी न रहे। उन्होंने कहा कि उपखंड अधिकारी फार्मर रजिस्ट्री शिविरों की मॉनीटरिंग करें व निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करें। उपखंड अधिकारी व तहसीलदार किसानों को स्वयं गिरदावरी करने के लिए जागरूक करें। इसके लिए फील्ड स्तरीय मशीनरी को एक्टिवेट करें व सर्वेयर आदि नियुक्त करते हुए अपेक्षित प्रगति लाएं। इसी के साथ पशुपालन विभाग के अधिकारियों के साथ समुचित समन्वय से पशुपालकों को जागरूक कर मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना में पंजीकरण करवाते हुए पशुधन का बीमा करवाएं। पशुपालकों के हित को ध्यान में रखते हुए जिले का शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करें। सभी विकास अधिकारी पीएम आवास योजना में प्रस्ताव भिजवाएं व प्रथम किश्त के बाद कार्य पूरा करने वाले लाभार्थियों को दूसरी किश्त जारी करें। राजस्व अर्जन में तारानगर, चूरू व कातर छोटी तहसील के लक्ष्य पूरे करें। इसके लिए उपखंड अधिकारी रिव्यू करें। उन्होंने सबको बीमा अभियान -2047 को लेकर निर्देश देते हुए कहा कि ब्लॉक स्तर पर कमेटी का गठन कर बैठक आयोजित की जाए और आवश्यक कार्यवाही समयबद्ध ढंग से सुनिश्चित हो। उन्होंने सीएमएचओ से कहा कि पीसीपीएनडीटी एक्ट में कार्रवाई करें और नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही करें। जिला कलक्टर ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, स्वच्छता सर्वेक्षण, सड़क सुरक्षा, एनएफएसए, बीस सूत्री कार्यक्रम, जल भराव, पंचायतीराज व ग्रामीण विकास, पीएम आवास योजना, पालनहार व सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में वार्षिक सत्यापन, पीसीपीएनडीटी एक्ट, गिरदावरी, नामांतरण पेंडेंसी, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना, राजस्व अर्जन, सबको बीमा अभियान-2047 सहित विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा कर समुचित निर्देश दिए। इस दौरान एडीएम अर्पिता सोनी, सीईओ श्वेता कोचर, कोषाधिकारी प्रवीण सिंघल, प्रशिक्षु आरएएस साक्षी पुरी, कृषि संयुक्त निदेश मुकेश माथुर, पीएचईडी प्रोजेक्ट एसई राममूर्ति, सीडीईओ गोविंद सिंह राठौड़, डीटीओ नरेश कुमार, उद्योग महाप्रबंधक उजाला, चूरू नगरपरिषद आयुक्त अभिलाषा सिंह, सीपीओ भागचंद खारिया, कॉपरेटिव एमडी मदनलाल, एलडीएम अमरसिंह सहित सभी उपखंडों से वीसी के जरिए उपखंड स्तरीय अधिकारी जुड़े रहे।

चाणक्य प्रश्नोत्तरी का शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। स्थानीय बालिका आदर्श विद्या मंदिर, लक्ष्मणगढ़ में सोमवार को भारतीय संस्कृति को बढ़ाने के उद्देश्य से चाणक्य प्रश्नोत्तरी का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में साक्षी चमड़िया, श्रुति भोजक व भारतीय विद्या मंदिर, समिति लक्ष्मणगढ़ के व्यवस्थापक एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य ने कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में भामाशाह पूना प्रवासी पवन सर्राफ की ओर से विद्यालय को भेंट की गई 55 इंच एलइडी का अनावरण भी किया गया। कार्यक्रम में पुरुषोत्तम मिश्रा ने भी विद्या भारती के संस्कार केंद्रो की रूपरेखा सबके समक्ष प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार विद्या भारती के संस्कार केंद्र भारतीय संस्कृति को बढ़ाने में मील का पत्थर साबित हो रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों का विद्यालय का प्रतीक चिह्न भेंटकर स्वागत किया गया। अतिथियों का विद्यालय के प्रधानाचार्य विद्याधर शर्मा ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन शर्मिला मिश्रा ने किया। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को मिठाई वितरित की गई। इस मौके पर विद्यालय स्टाफ व विद्यार्थी मौजूद रहे।

घर पर एक महीने से खड़ी कार का टोल कटा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। झुंझुनूं के काजड़ा गांव में घर में खड़ी कार का टोल कटने का मामला सामने आया है। गाड़ी एक महीने से घर पर खड़ी थी। फिर भी 85 रूपए टोल कट गया। मोबाइल पर मैसेज आया तो कार हैरान हो गया। काजड़ा निवासी दयापाल कुमावत ने बताया कि उसके मारुति आल्टो कार है, जिसमें फास्टैग सुविधा है। गाड़ी एक महीने से घर पर खड़ी है। सोमवार सुबह करीब 3 बजे मोबाइल पर 85 रुपए टोल कटने का मैसेज आया था। यह टोल सुबह 10 बजकर 3 मिनट पर गुडगांव के खेरकी डोला में राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर स्थित टोल प्लाजा पर कटा है। 85 रूपए का मैसेज आया, एक महीने से घर पर खड़ी थी कार मैसेज देखकर दयापाल हैरान हो गए। उन्होंने बताया कि वे एक महीने से कही गए ही नहीं है। गाड़ी घर पर ही खड़ी है।फिर भी टोल कट गया। उन्होंने बताया कि संभावना है कि कोई उनकी गाड़ी की नंबर प्लेट का मिसयूज कर रहा है, अथवा यह कोई टेक्नोलॉजी संबंधित इश्यू भी हो सकता है। दयापाल की सूरजगढ कस्बे में हार्डवेयर की दुकान है। गौरतलब है कि इससे पहले भी जिले में इस तरह के कई मामले सामने आ चुके है।

सड़क क्षतिग्रस्त होने से वाहन चालक परेशान

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निस)। गांव बाजीसर से मंडावा सड़क जो की पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी है। लगातार ग्राम वासियों की ओर से विरोध किया जा रहा हैं। ग्राम पंचायत मेहरादासी में कलेक्टर की रात्रि चौपाल में भी इस समस्या को लेकर बताया गया तो उन्होंने कहा कि आपकी समस्या का जल्द से जल्द हल किया जाएगा। मंडावा से बाजीसर सड़क बहुत से गांव को जोड़ती है इनमें से गांव बाजीसर के मुख्य चौक से पीपल का बास, मेहरादासी, और गांव बाजीसर के मुख्य चौक से रूपनगर, सीगड़ा, सिगड़ी, तोलियासर कई गांव के लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस दौरान मौजूद सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा, मंगलाराम निर्मल, बनवारी लाल निर्मल, वार्ड पंच दिल किशोर निर्मल, बीरबल नायक, रावतमल निर्मल, नागरमल निर्मल, शक्ति नायक, रोहित नायक ,अंकित निर्मल, अनिल निर्मल, बाबू निर्मल आदि मौजूद रहे। सामाजिक कार्यकर्ता अमित मीणा ने बताया कि जल्द से जल्द इस समस्या को लेकर प्रशासन कोई कदम नहीं उठाता है तो मजबूरन होकर आंदोलन करना पड़ेगा।

भजन संध्या एवं सम्मान समारोह के पोस्टर का हुआ विमोचन

उप जिलाप्रमुख डागर ने भजन संध्या के पोस्टर का किया विमोचन

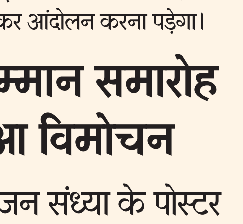

जयपुर/आमेर तहसील के ग्राम राजावास राधा गोविन्द गोशाला में 19 फरवरी 2025 को आयोजित होने वाली विशाल भजन संध्या एवं सम्मान समारोह के पोस्टर का विमोचन उप जिलाप्रमुख जयपुर मोहन डागर ने किया। राधा गोविन्द गौ सेवा समिति अध्यक्ष रमेश सुण्डा ने बताया कि इस दिवस को रात्रिकालीन भजन संध्या, प्रसादी वितरण सहित राजस्थान के सुप्रसिद्ध लोक कलाकारों का सम्मान समारोह का आयोजन होगा। इस दौरान गौ सेवा समिति अध्यक्ष रमेश सुण्डा, सरपंच प्रतिनिधि रामसिंह मीणा, मंडल अध्यक्ष मनिष गुलिया, रामलाल भावरिया, राजू जांगिड़, सुजाराम यादव, विमल जांगिड़, धनाराम सुण्डा मौजूद थे।

दीनी तब्लिगी इज्तिमा में शामिल हुए ढाई लाख लोग, मांगी अमन- चैन की दुआएं

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। दीनी तब्लिगी इज्तिमा का समापन हुआ। झुंझुनूं शहर के मलसीसर पर रोड़ पर चल रहे दीनी तब्लिगी इज्तिमा का सोमवार को दुआ के साथ समापन हुआ। आखिरी दिन करीब ढाई लाख लोग शामिल हुए। इससे पहले सुबह फजर की नमाज के बाद उलेमाओं की तकरीर हुई। फिर 11 बजे दुआ करवाई गई। मुंबई से आए मौलाना फारूक मुम्बई वाले ने दुआ करवाई। लाखों लोगों ने हाथ उठाकर खुदा से अमनो-चैन की दुआ मांगी। विश्व में शांति बनी रहे इसकी दुआ मांगी गई। इसी के साथ यहां से जमातों की रवानगी का सिलसिला शुरू हुआ। सामूहिक दुआ में शामिल होने के लिए लाखों धर्मावलंबियों की भीड़ के बीच आलम यह था कि जिसे जहां जगह मिली, उसने वहीं खड़े रह कर नमाज अदा की और दुआ पढ़ी। दुआ से पहले अपने बयान में उलेमाओं ने कहा कि अपने ईमान को कायम रखो। यकीन डगमगाने पर ही मुश्किलें बढ़ती हैं। जिंदगी गफलत में न गुजारें। पांचों वक्त की नमाज पढ़े, जकात अदा करें। रोडवेज बस स्टेंड पर भारी भीड़ रही। इज्तेमा का मकसद लोगों को मजहब और इल्म की राह पर ले जाने का है। दुआ सिर्फ अपने लिए नहीं, दुनिया के हर एक इंसान की बेहतरी के लिए करनी चाहिए। सोमवार को अलसुबह से ही इज्तेमा स्थल पर लोगों का पहुंचना शुरू हो गया था। सुबह के साढ़े 11 बजे तक इज्तेमा स्थल पूरी तरह भर चुका था। करीब 12 बजे दुआ समाप्त होने के बाद जब लोगों ने लौटने लगे। एक घंटे में पैदल जाने वाले लोगों को निकलने दिया गया। इसके बाद इज्तिमा की सभी पार्किंगों से दो पहिया वाहन निकालने दी गईं। फिर एक घंटे बाद पार्किंग से चार पहिया वाहन निकालने की इजाजत दी गई। इसके बाद हैवी व्हीकल निकाले गए। वहीं ट्रेनों से जाने वाले यात्रियों को सीधे गाड़ियों से स्टेशन पहुंचाया गया। बसों से जाने वालों को बस स्टैंड पहुंचाया। पैदल चलने वालों की भी इतनी बड़ी तादाद थी कि सड़कों पर से वाहनों का निकलना मुश्किल हो रहा था। हजारों जमातें निकली, देश के अलग अलग राज्यों से मेहमान शामिल हुए।

इन रास्तों पर रहा भारी ट्रैफिक

मलसीसर रोड़, चूरू, सीकर, दिल्ली रोड़ पर भारी संख्या में जनसमुदाय और वाहनों की आवाजाही के कारण यातायात का दबाव रहा। शहर से ट्रेफिक क्लियर होते होते 4 -5 घंटे लगे। रोडवेज बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन पर लोगो की भारी भीड़ है। रोडवेज प्रशासन की ओर से अतिरिक्त बस नहीं लगाने से लोगां को परेशानी का सामना करना पड़ा। लोग घंटों तक बसों का इंतजार करे। इससे रोडवेज बस स्टैंड पर भारी भीड़ हो गई। पुलिस प्रशासन और वालंटियर ने व्यवस्था सम्भाली।

अलग अलग राज्यों से लोग पहुंचे

झुंझुनूं पहली बार प्रदेश स्तरीय इज्तिमा हुआ है। इज्तिमा में देश के अलग अलग राज्य से मेहमान पहुंचे। निजामुद्दीन दिल्ली से उलेमा इकराम भी शामिल हुए। खाना पीने से लेकर सोने की 800 बीघा में व्यवस्था की गई थी। अस्थाई अस्पताल भी बनाया गया था। 6 हजार से ज्यादा वॉलंटियर खिदमत लगे हुए थे।

अन्तर्महाविद्यालय वाद -विवाद प्रतियोगिता में विजेताओं को किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। स्थानीय भगवानदास तोदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रविवार को 24 वीं राज्य स्तरीय अन्तर्महाविद्यालय वाद -विवाद प्रतियोगिता एनएसएस व रोजगार परामर्श केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई।कार्यक्रम की शुरुआत प्रबन्ध समिति सचिव आशकरण शर्मा व महाविद्यालय प्राचार्य डॉ एन एस नाथावत ने किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में एडवोकेट ओमप्रकाश वर्मा, माया शर्मा व अरविन्द भास्कर रहें। एन एस एस कार्यक्रम अधिकारी व संयोजक डॉ आनंद शर्मा ने बताया कि वाद-विवाद प्रतियोगिता के विषय "एक देश एक चुनाव राष्ट्रहित में है" में चूरू, सीकर, झुनझुनु व नागौर जिले के 14 महाविद्यालयों के 21 प्रतिभागियों ने पक्ष और विपक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में विषय के पक्ष में रघुनाथ बालिका महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ की दीपिका प्रजापत प्रथम, मरूधरा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय बासनी के सुनील कुमार गुर्जर द्वितीय और शेखावाटी बीएड महाविद्यालय डून्डलोद के भारतेन्दु तृतीय स्थान पर रहे। विषय के विपक्ष में भगवानदास तोदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ के मनीष कुमार सैन प्रथम, मोहिनी देवी गोयनका महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ की विनीता सोनी द्वितीय और जी बी पौद्दार महाविद्यालय नवलगढ़ की रुचिका दूलड़ तृतीय स्थान पर रहे। चल वैजयंती विजेता भगवानदास तोदी महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ रहा। लेकिन आयोजक महाविद्यालय होने के कारण द्वितीय स्थान पर संयुक्त रूप से रहे मोहिनी देवी गोयनका महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ व मरूधरा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ को चल वैजयंती प्रदान की गई। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे विजेताओ को पक्ष व विपक्ष में क्रमशः 5500, 3550 व 2550 रूपए का नकद पुरस्कार महाविद्यालय वार्षिकोत्सव पर प्रदान किए जाएगा। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ एन एस नाथावत, आशकरण शर्मा, माया शर्मा, ओमप्रकाश वर्मा व अरविन्द भास्कर ने भी विषय पर अपने विचार रखते हुए विद्यार्थियों को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ आनन्द शर्मा ने किया। कार्यक्रम के अंत में घनश्याम वर्मा व महेश कुमार अग्रवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

फायरिंग और लूट के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

नीमकाथाना/पाटन (निंस)। पुलिस थाना पाटन पर दर्ज मुकदमा संख्या 234/2024, 11 अक्टूबर के तहत हुई फायरिंग और लूट की घटना का खुलासा करते हुए नीमकाथाना पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह घटना 11 अक्टूबर 2024 की रात करीब 1.10 बजे हुई, जब तीन अज्ञात अपराधियों ने अपाची मोटरसाइकिल पर सवार होकर केशर के कांटा ऑफिस पर फायरिंग की और करीब 38-39 हजार रुपये लूटकर फरार हो गए थे। प्रार्थी मनीष कुमार निवासी खरौला, अलवर की ओर से दर्ज करवाई गई रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने मामले की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए विशेष टीम का गठन किया। उच्चाधिकारियों के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गिरधारीलाल शर्मा और सहायक पुलिस अधीक्षक रोशनलाल के मार्गदर्शन में टीम ने साइबर सेल और आसूचना संकलन का सहारा लेते हुए घटना का पर्दाफाश किया। जिसमें गिरफ्तार आरोपी रोहिताश (पुत्र इन्द्राज), उम्र 30 वर्ष, निवासी लूजोता, थाना नांगल चौधरी, हरियाणा,अजीत उर्फ कालू (पुत्र रामफल), उम्र 26 वर्ष, निवासी भेडेन्टी, थाना नांगल चौधरी, हरियाणा नरेन्द्र (पुत्र रामचन्द्र उर्फ पप्पू), उम्र 21 वर्ष, निवासी लूजोता, थाना नांगल चौधरी, हरियाणा है। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों से अन्य वारदातों के संबंध में भी जांच जारी है।

झुंझुनूं समेत राजस्थान के 20 जिलों में खुलेंगे एग्रो क्लिनिक

फसल संबंधी रोगों की हो सकेगी जांच, किसानों को मिलेगा फायदा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं में खुलेगा एग्रो क्लिनिक खोलने की तैयारी शुरू हो गई है। जिले के किसानों के लिए राहत की खबर है। पहली बार जिला मुख्यालय पर फसलों व बगीचों के लिए एग्रो क्लिनिक का निर्माण होगा। कृषि विभाग ने शुरूआती चरण में 20 जिलों में बनाए जाने वाले एग्रो क्लिनिक के लिए जगह का चयन करने के निर्देश जारी कर दिए हैं। आमतौर पर फसलों में होने वाले रोग कीट के कारण अक्सर किसानों को नुकसान हो जाता है। फिलहाल यह सुविधा केवल जयपुर और जोधपुर जिले में ही उपलब्ध है। जिला मुख्यालय पर यह सुविधा शुरू किए जाने से यहां के हजारों किसान फसलों में होने वाले संक्रमण व कीट रोगों की समय पर जांच करवा सकेंगे।

अंधाधुंध छिड़काव पर लगेगी लगाम

प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में विषय विशेषज्ञों की सुविधा है लेकिन जिला स्तर पर किसानों को इनकी सुविधाओं का लाभ नहीं मिल पाता है। ऐसे में अधिकांश अंधाधुंध उर्वरक व कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं। जिससे किसान को फायदा होने के साथ आमजन की सेहत को नुकसान होने लगता है। ऐसे में कृषि आयुक्तालय ने जिला स्तर पर विशेषज्ञों की सुविधा पहुंचाने के लिए एग्री क्लिनिक खोलने की कवायद शुरू की है। इसके लिए पौध व्याधि और कृषि अनुसंधान अधिकारी कीट के पद स्वीकृत कर दिए गए हैं।

11 लाख की आएगी लागत

एग्रो क्लिनिक पर करीब 11 लाख रुपए की लागत आएगी। क्लिनिक में विशेषज्ञ स्टाफ भी लगाया जाएगा। सबकुछ ठीक रहा तो इस वित्तीय वर्ष में किसानों को यह जांच सुविधा मिलनी शुरू हो जाएगी। कृषि विभाग की ओर से दूसरे चरण इस सुविधा से वंचित रहने वाले जिलों में यह जांच सुविधा शुरू की जाएगी।

यहां खुलेंगे एग्रो क्लिनिक

झुंझुनूं के अलावा चूरू, सीकर, जयपुर,अजमेर, अलवर, भीलवाड़ा, धौलपुर, दौसा, टोंक, बीकानेर, पाली, उदयपुर, हनुमानगढ़, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, करौली, जोधपुर, कोटा और श्रीगंगानगर में एग्रो क्लिनिक खोले जाएंगे।

गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए करें पानी आपूर्ति की व्यवस्थाएं: मीणा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिला कलक्टर रामावतार मीणा ने जलदाय विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे उच्च अधिकारियों से वार्ता कर मलसीसर डेम में पानी की आवक को बढ़ाने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि आगामी दिवसों में गर्मी के मौसम को देखते हुए डेम में पानी का स्टोक भी व्यापक रखें। उन्होंने सीएमएचओ को एनिमिया डीजीज के बचाव के लिए व्यापक प्रचार प्रसार करने और कैम्प लगाकर स्कूली बच्चों व गर्भवती महिलाओ की हिमोग्लोबिन जांच करने के निर्देश दिए। विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए जिला कलक्टर ने पीएम कुसुम योजना की प्रगति को बढ़ाने के निर्देश देते हुए कहा कि इसका प्रचार प्रसार करें, ताकि अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिल सकें। उन्होंने जिला रसद अधिकारी को खाद्य सुरक्षा योजना में पात्रा लोगों का नाम जोड़ने और अपात्रा लोगों का नाम हटाने के निर्देश दिए। बैठक में महिला अधिकारिता विभाग के उप निदेशक विप्लव न्यौला, उप रजिस्टार सहकारिता विभाग विभा खेतान, सीएमएचओ डॉ. छोटेलाल गुर्जर, जिला परिवहन अधिकारी डॉ. मक्खन लाल जांगिड, सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के उप निदेशक पवन पुनियां, जलदाय विभाग के राजपाल सहित संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

मंदिर सजावट के लिए बंगाल से आएगी टीम

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। बगड़ रोड़ स्थित बाबा गंगाराम धाम- श्रीपंचदेव मंदिर के स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में दो दिवसीय विशाल मेले का आयोजन होगा। कार्यक्रम में देश प्रदेश से हजारों प्रवासी शामिल हांगे। इस दौरान विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम हांगे। मेले का आयोजन आगामी 16 व 17 अप्रैल होगा। इसकी तैयारी को लेकर सोमवार को मंदिर ट्रस्टी कुमार मोदी की अध्यक्षता में बैठक हुई। उन्होंने बताया कि इस भव्य आयोजन में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों को आमंत्रित किया जा रहा है। विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में प्रवासी भक्त यहाँ पधारेंगे, जिनके लिए विशेष प्रबंध किये जा रहे है। मंदिर परिसर में बिजली की आकर्षक सजावट के लिए पश्चिम बंगाल की विश्वप्रसिद्ध विद्युत सज्जा की टीम आयेगी और कोलकाता के कारीगरों की ओर से विशेष सजावट की जाएगी। समारोह में भव्य शोभायात्रा, विशाल भजन संध्या, नृत्य नाटिकाएं, सामूहिक संगीतमय अमृतवाणी पाठ, लीला मंचन व बधाई उत्सव किए जाएंगे। इसके अलावा बनारस के पंडितों की ओर से सुविख्यात गंगा आरती का मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया जाएगा। मेले का शुभारम्भ विशाल शोभायात्रा से किया जाएगा, जो 16 अप्रैल को प्रातः 7 बजे श्री पंचदेव मंदिर परिसर से देवविग्रहों के आरती पूजन के पश्चात प्रारंभ होकर नगर परिभ्रमण करते हुए वापस मंदिर पहुंचेगी। शोभायात्रा में बाबा गंगारामजी, भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन व शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री की फूलों से सुसज्जित रथयात्रा, महिलाओं की कलश-यात्रा, ध्वज-यात्रा के अलावा केरल की सुप्रसिद्ध सजीव देव दर्शन झांकियां आकर्षण का केंद्र रहेगी। शोभायात्रा में पारंपरिक वेष-भूषा में बड़ी संख्या में महिलायें व पुरुष श्रद्धालु शामिल होंगे। बैठक के दौरान भव्य आयोजन की सुचारू व्यवस्था के लिए उप समितियों का गठन किया गया। जिनमे मुख्य रूप से ट्रस्टी प्रवीण कुमार मोदी, सुनील मोदी मुंबई, गिरीश सराफ़ मुंबई, संजय जालान हैदराबाद, पंकज सुरेका कोलकाता, संजय चिरानिया कोलकाता, संदीप मोदी कोलकाता, पीयूष मित्तल दिल्ली, प्रदीप मुंशी मुजफ्फरपुर, शैलेश सिंघानिया लखनऊ, शुभकरण अग्रवाल बेंगलोर, प्रमोद मोदी सूरत, वेदान्त खेमानी राउरकेला, विमल सिंघानिया नेपाल, अनिल झुंझुनूवाला पटना, प्रदीप मोदी सूरत ने भाग लिया।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
18 फरवरी, 2025

विप्र फाउण्डेशन की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। विप्र फाउण्डेशन की तहसील ईकाई की बैठक अध्यक्ष राजेश सुन्दरिया की अध्यक्षता में सेठिया गार्डन में आयोजित हुई। बैठक में कार्यकारिणी के सदस्यों ने अपना परिचय दिया। इसके पश्चात उपस्थित लोगों ने संगठन की मजबूती पर चर्चा करते हुए समाजबंधुओं से संपर्क कर उन्हें अधिक से अधिक विप्र फाउण्डेशन से जोडने पर सहमति बनी। बैठक में आगामी कार्यक्रमों के बारे में भी चर्चा की गई। इस दौरान फाउण्डेशन की महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष जयश्री दाधीच, विद्याधर पारीक, सुभाष पारीक, हरिप्रसाद चोटिया, विमल मिश्रा, उपाध्यक्ष डॉ. कमला पारीक, महामंत्री मनोज दाधीच, महामंत्री विनय माटोलिया, मंत्री एड. पार्थ नवहाल, संगठन मंत्री हरिशंकर दाधीच, अभिषेक दाधीच, दुलीचंद शर्मा, अर्पिता शर्मा, राजकुमार चोटिया, बसंत पारीक, कमल दाधीच, गोविन्द शर्मा, गजानन्द दाधीच सहित कार्यकारिणी सदस्य मौजूद रहे।

डॉ. अमृता चौधरी दिल्ली में सम्मानित

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। आठवें एफएमसी अवार्ड समारोह का आयोजन ऑडिटोरियम 1 भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम में पूरे भारत देश में केवल 16 लोगों को ही सम्मानित किया गया। जिसमें सुजानगढ़ की दिशा शेखावाटी महिला व बालिका विकास संस्थान की सचिव डॉ. अमृता चौधरी को यह अवार्ड प्रदान किया गया। दिशा शेखावाटी संस्थान ने देश-विदेश में कपड़े पर शीबोरी और बंधनी के काम के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई है और महिलाओं के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए काम करती है। डॉ. अमृता चौधरी को यह पुरस्कार केंद्रीय कपड़ा मंत्री पाबित्रा मार्गेरिटा, सचिव नीलम शामी राव, राकेश महर्षि ने प्रदान किया। डॉ. अमृता चौधरी को यह अवार्ड मिलने पर संस्थान के आर्टिजन व पदाधिकारी ने खुशी जाहिर की है।

श्याम महोत्सव की तैयारियों पर की चर्चा

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। नया बास स्थित श्री श्याम शखा मंडल की ओर से आयोजित श्री श्याम महोत्सव 2025 की तैयारियों को लेकर पदाधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें श्याम महोत्सव की तैयारियों पर चर्चा करते हुए 10 व 11 मार्च को श्याम महोत्सव मनाए जाने का निर्णय लिया गया। बैठक में नरेंद्र शर्मा, रामावतार मंत्री, किशन सोनी, महेश सोनी, निखिल शर्मा, गिरधारी लाल जांगिड़, रमेश स्वामी आदि लोग मौजूद रहे।

पुत्री पाठशाला की छात्राओं ने किया क्षेत्र का शैक्षिक भ्रमण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजकीय सर्वहितकारिणी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (पुत्री पाठशाला) की व्यवसायिक शिक्षा की छात्राओं को सोमवार को क्षेत्र का शैक्षिक भ्रमण कराया गया। प्रधानाचार्य निशा अजमेरा ने बताया कि इस दौरान छात्राओं ने महर्षि फूड लाइन, सुराणा आईस फैक्ट्री व ख्यालीराम हलवाई के कारखाने का अवलोकन किया और वहां की कार्यशैली का बारीकी से अध्ययन किया। इस दौरान उन्होंने भोजन किस प्रकार तैयार किया जाता है, मिठाई किस प्रकार बनाई जाती है और बर्फ कैसे बनती है, इसका बारीकी से अध्ययन किया। इस भ्रमण दल में विद्यालय की 40 छात्राएं शामिल थी। इस दौरान कौशल मित्र विद्याधर शिवरान ने छात्राओं को रुचि पूर्वक जानकारी दी और पाठ कौशल के बारे में बताया। इस दौरान प्रधानाचार्य निशा अजमेरा, उप प्रधानाचार्य महावीर प्रसाद, सुभाष चंद्र, राजकुमार सिंह, पवन कुमार मोदी, परमेश्वर महर्षि, उषा सैनी, उषा देवी आदि उपस्थित रहे।

मलसीसर में मेला स्थल विकसित करने का निर्णय

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती ग्राम पंचायत मलसीसर के नीमखेड़ा में अखिल भारतीय खिलेरी जाट समाज का प्रथम महासम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम में समाज मे व्याप्त कुरीतियों को छोड़ने, नशे की प्रवृति से समाज को दूर रखने व शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने पर जोर दिया गया। सम्मेलन में समाज के वीर महापुरुष भुणोजी की मूर्ति भव्य मंदिर निर्माण के साथ स्थापित करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। सम्मेलन में प्रदेश के अलावा पंजाब, हरियाणा के खिलेरी जाट समाज के लोगों ने शिरकत की। उपस्थित समाज के लोगों ने समिति का गठन कर प्रतिवर्ष मेले के आयोजन करने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस दौरान मंदिर निर्माण के लिए पांच बीघा भूमि दान करने वाले रावताराम, नानूराम व चौधरी जालूराम खिलेरी का स्वागत किया गया। सम्मेलन के दौरान समाज के भामाशाहों ने 51 लाख रुपए की सहयोग राशि एकत्रित कर प्रस्तावित मेला क्षेत्र में विकास कार्य करवाने की नींव प्रशस्त की। ग्राम हरासर के हेतराम खिलेरी ने बताया कि खिलेरी जाट समाज की उत्पति

स्थल मलसीसर गांव का नीमखेड़ा स्थल है, जहां समाज के वीर भुणोजी ने कालांतर में विदेशी आक्रांताओं से युद्ध कर गाय, गोचर व संस्कृति की रक्षा की। बलराम खिलेरी ने आयोजकीय पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए ग्राम मलसीसर की स्थापना में वीर भुणोजी के पुत्र मलसोजी के योगदान व जीवन परिचय से उपस्थित लोगों को अवगत करवाया। इस अवसर पर तुलछीराम जोगलिया, चुनाराम आकोदा, लक्ष्मणराम खिलेरी, नोपाराम, देबुराम, तिलोकाराम, खिराजराम सुखवासी, बाबुलाल चोमू, भोमाराम ढिगाल, पन्नाराम झोरड़ा, पूर्णमल सीकर, विनोद, भंवरलाल नागौर, ओमप्रकाश सुजानगढ़, राहुल आकोदा, शेराराम बाडेला, कानाराम निम्बीजोधा, मुकनाराम, भंवरलाल पड़िहारा, मांगीलाल, पूर्व सरपंच डूंगरमल खिलेरी, चुन्नीलाल हरासर, माणक चन्द, लक्ष्मणराम हरासर, कालूराम मलसीसर, सुगनाराम, देवाराम हेमासर, संदीप सिरसा, मनदीप पंजाब, भींवाराम नोखा, तोलाराम आदि मौजूद रहे।

ब्राइट माइंड पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय ब्राइट माइंड पब्लिक स्कूल में सोमवार को वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी प्रदीप शर्मा रहे। वहीं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भागीरथ शर्मा, श्याम सुंदर शर्मा, राजेश मंडावेवाला, विनोद अग्रवाल, विमल सिंह राठौड़, ओमप्रकाश तंवर व वाहिद अली रहें। कार्यक्रम का शुभारम्भ आगंतुक अतिथियों ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान विद्यालय के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर विद्यालय के गत वर्ष के परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति-पत्र व प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रदीप सरावगी ने कहा कि शिक्षा ही समाज का अहम अंग है। शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। उन्होंने कहा कि अभिभावक अपने बच्चों के कैरियर के लिए थोड़ा समय निकालें, ताकि वह भविष्य का निर्माण कर सकें। प्रधानाचार्य सत्यपाल ने विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विद्यालय स्टाफ सदस्यों ने कार्यक्रम में सहयोगी भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन प्रेमलता शर्मा व मुस्कान तलवानी ने किया।

पिंजरापोल गौशाला की पराली में आग से जला चारा

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। चूरू रोड पर स्थित पिंजरापोल गोशाला के चारागृह में सोमवार दोपहर को पराली में आग लग गई। घटना के बाद अफरा-तफरी मच गई। चारागृह से धुआं उठता देख गोशाला के कर्मचारी मौके पर एकत्रित हो गए और नगरपालिका प्रशासन को सूचना दी। वहीं अपने स्तर पर भी लोडर व पानी का टैंकर मंगवाकर आग बुझाने का प्रयास किया। गोशाला के मंत्री अंजनी चोटिया ने बताया कि चारागृह में लगभग 10 ट्रक पराली थी। चारागृह के अंतिम छोर पर नीचे की ओर पराली में आग लग गई, जिससे दो ट्रक पराली जलकर नष्ट हो गई, जिसका बाजार मूल्य लगभग डेढ़ लाख रुपए है। चोटिया ने बताया कि लोडर से जली हुई पराली को चारागृह से बाहर फिंकवाया गया है, वहीं शेष चारे को सुरक्षित किया गया है। घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ लग गई।

निशुल्क नेत्र जांच शिविर में 87 मरीजों के आंखों का ऑपरेशन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के लायंस क्लब सरदारशहर डायमंड व अंधता निवारण समिति जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में निशुल्क नेत्र जांच व दवाई वितरण शिविर स्वर्गीय मानिकचंद कौशल्यादेवी प्रदीप कुमार कर्वा चेरिटेबल ट्रस्ट के स्थानीय सौजन्य से अर्जुन क्लब राजकीय चिकित्सालय में लगाया गया। मीडिया प्रभारी लायन अंजना भोजक ने बताया कि शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर के नेत्ररोग विशेषज्ञ पवन चौधरी ने 9 फरवरी को ऑपरेशन किए गए 87 मरीजों की जांच कर उन्हे दवाई वितरित की गई। शिविर को सफल बनाने में लायन सुशील भोजक, महेन्द्र निर्वाण, डॉ पूनमचंद भाटी, फूसदास स्वामी, गिरधारीलाल ने सहयोग किया।

शिव चरित्र और शिव विवाह का सुनाया प्रसंग

कथा में झांकियां रही आकर्षण का केंद्र

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के ताल मैदान में गुरु गोरखनाथ जी जाहरवीर जी गोगाजी गौशाला समिति मीतासर की ओर से चल रही 9 दिवसीय श्रीराम कथा के तीसरे दिन सोमवार को कथावाचक शंकर दास जी महाराज ने भगवान शिव चरित्र व शिव विवाह का प्रसंग सुनाया। कथा के दौरान चार जनों की ओर से 4 लाख रुपये गौशाला के लिए गुप्त दान के रूप में प्राप्त हुआ। इसके अलावा गांव मीतासर के किशोरसिंह अभयसिंह राजवी की ओर से 1 लाख 21 हजार रुपये, नंदराम पुत्र भगवानाराम सारण परिवार की ओर से 1 लाख 11 हज़ार रुपये, बिशनसिंह राजपुरोहित की ओर से 31 हजार रुपए, गोमटिया के रणजीतसिंह पुत्र मालसिंह द्वारा 21 हजार रुपये, ओमप्रकाश पुत्र लालूराम सारण की ओर से 21 हजार रुपए, खेतुलाल डागा की ओर से 11 हजार रुपये, डॉ रणवीर भांभू की ओर से 11 हजार रुपये का सहयोग गौशाला में गायों के लिए किया गया। कथा के दौरान भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह का जीवंत चित्रण करने के लिए भव्य झांकी सजाई गई। शिव परिवार की अद्भुत रूप

की झांकी ने उपस्थित भक्तों का मन मोह लिया। मंच पर गणेश जी और शिव विवाह की झांकी ने भक्तिमय वातावरण को और भी दिव्य बना दिया। झांकियां विशेष रूप से भक्तों के लिए एक आकर्षक केंद्र बन गई। कथावाचक शंकरदास जी महाराज ने कहा कि एक बार त्रेता युग में भगवान शिव माता सती के साथ अगस्त ऋषि के यहां राम कथा सुनने के लिए कैलाश पर्वत से दक्षिण में दंडकारण्य में थे। तब वहां अगस्त ऋषि ने भगवान शंकर को थोड़े देर बाद प्रणाम किया। माता सती ने उसका गलत अर्थ समझ लिया। शंकरदास जी महाराज ने कहा कि जब प्यास लगी हो तो पानी कहीं भी मिले प्यासा पहुंच जाता है। भगवान शंकर भी राम कथा का रसपान करने के लिए ऋषि अगस्त के पास पहुंचे थे। वहां नौ दिनों तक कथा सुनने के बाद उन्होंने भगवान राम के दर्शन किए। तब भगवान शंकर के साथ माता सती थीं। उन्होंने भगवान राम की परीक्षा ली और सीता का रूप धारण कर उनके पास पहुंचीं। जब यह बात भगवान शंकर को पता चली तो उन्होंने सती का त्याग कर दिया। महाराज जी ने कहा कि किसी भी समस्या का समाधान प्यार से हो जाता है। छल कपट से किसी की परीक्षा लेना गलत है। इस अवसर पर दीपू जैसनसरिया ने गौशाला में गायों के लिए सहयोग करने वाले भामाशाहों का आभार जताया। कथा समिति की ओर से भामाशाहों का सम्मान किया गया। कथा श्रवण में हरनाथ, भंवरसिंह, मनीराम पारीक, पंकज सेवदा, श्यामसिंह राजवी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

किचन गार्डन के पांच सौ किट वितरण

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। पीएमश्री श्री यूनियन क्लब राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजलदेसर के सुरम्य हाल में विशेषज्ञ वार्ता का आयोजन रखा गया। वार्ता कार सिविल सोसायटी चूरू के जिला अध्यक्ष एडवोकेट रामेश्वर लाल प्रजापति रहे। प्रजापति ने अपने उद्बोधन में बालिकाओं को हर प्रकार से उत्साहवर्धन करते हुए जीवन उन्नति करने के टिप्स बताते हुए लिए हर पहलू पर सारपूर्ण तरीके से बताया।हर घर आर्गेनाइजेशन हो इसके घरेलू उपाय अपनाकर जीवन सुखमय बनाने पर जोर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शाला प्रधान मोहनलाल ने की। एडवोकेट रामेश्वर लाल प्रजापति को प्रधानाचार्य की ओर से माला पहनाकर व व्याख्याता इंद्रसिंह फगेड़िया ने शोल ओढ़ाकर स्वागत सत्कार किया। एडवोकेट रामेश्वर लाल प्रजापति की ओर से विद्यालय की सभी बालिकाओं को पांच सौ किचन गार्डन किट वितरण किए। कार्यक्रम में व्याख्याता सरिता शर्मा, रश्मि महर्षि, रमेश कुमार, ओए प्रमोद कुमार, वरिष्ठ अध्यापक शिशपाल,अध्यापक नानूराम, धर्म पाल बुगालिया, अनिता मारू, कन्हैयालाल जांगिड़, वरिष्ट लिपिक अशोक जाट,मनिष शर्मा, ऋषिका सहारण, योगिता पुरोहित, आरती शर्मा, रतना कुमारी आदि शाला स्टाफ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता रिखा राम तालणिया ने किया।

अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में उत्कृष्ट छात्रा का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मालजी के कमरे के पास स्थित गीतांजली पब्लिक सी.सै. स्कूल में अखिल भारती विद्यार्थी परिषद की ओर से आयोजित परीक्षा में स्कूल की कक्षा 6 की छात्रा चांदनी पुत्री राधेश्याम सैनी को उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम आने पर पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संस्था के प्रबंन्ध निदेशक विनय गौतम ने बताया कि बच्चो को स्कूल की पढाई के साथ-साथ अन्य कार्यक्रमों मे भी भाग लेना चाहिए। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन दामोदर गौतम ने बच्चों से कहा कि इसी तरह मेहनत करके अपने समाज, स्कूल और परिवार का नाम रोशन करें। संस्था के निदेशक गौरव गौतम ने छात्रा को परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर प्रोत्साहित किया। चांदनी ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता व विद्यालय के गुरुजनों को दिया।

औद्योगिक प्रशिक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। आरयूआईडीपी की ओर से सोमवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान के विद्यार्थियों को सीवरेज परियोजना की जानकारी दी। आरयूआईडपी के एक्सईएन आरडी गर्ग के निर्देशन में जनसहभागिता इकाई के प्रवीणसिंह राठौड़ ने सीवरेज परियोजना की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि हमारे घरों के स्नानघर, रसोई व शौचालय सीवरेज लाइन से जुड़ने के बाद कार्य पूर्ण होगा, जिससे शहर में स्वच्छता के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव होंगे। उन्होंने परियोजना के लाभ बताते हुए विद्यार्थियों को व्यक्तिगत स्वच्छता, घरेलू साफ-सफाई के लिए जागरूक किया। कंपनी की ओर से आयोजित सीलवर जुबली फोटोग्राफी व रील प्रतियोगिता के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में संस्थान के रतनलाल, अनिलकुमार, सुरेंद्र, अरविंद, विशाल, सिकंदर, अशोक शामिल रहे। समूह अनुदेशक राजेंद्रप्रसाद ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में एलएडंटी कंपनी की अनिता स्वामी ने भी भाग लिया।

पांच मेडिकल स्टोर्स के अनुज्ञापत्र निलंबित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। जांच के दौरान विभिन्न अनियमितताएं पाए जाने पर पांच मेडिकल स्टोर्स के अनुज्ञापत्र निलम्बित किए गए हैं व एक को चेतावनी आदेश जारी किए गए हैं। अनुज्ञापन प्राधिकारी व सहायक औषधि नियंत्रक देवेंद्र कुमार केदावत ने बताया कि बंगलानगर, शिव शक्ति गैस गोदाम के पीछे स्थित जनता हेल्थ केयर का अनुज्ञापत्र दो दिनों के लिए, बीकमपुर स्थित श्रीराम मेडिकल एंड जनरल स्टोर, दुलचासर स्थित मां मेडिकल एंड जनरल स्टोर के अनुज्ञापत्र 17 से 26 फरवरी तक 10 दिनों के लिए, जयमलसर स्थित वीर मेडिकल स्टोर का अनुज्ञापत्र 15 फरवरी से 4 मार्च तक व करणीसर भाटियान स्थित करणी मेडिकल स्टोर का अनुज्ञापत्र 25 फरवरी से 14 मार्च तक 18 दिनों के लिए निलंबित और सादुल कॉलोनी स्थित मेडिसिन पॉइंट को अनियमितता के मध्यनजर चेतावनी आदेश जारी किए किए गए हैं।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, मंगलवार
17 फरवरी, 2025

सुजानगढ़ की भाविका अग्रवाल का क्लिवलैंड में डंका

मारवाड़ी एसोसिएशन ओहायो की अध्यक्ष बनी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। मारवाड़ी एसोसिएशन ओहायो (क्लिवलैंड) ने 2026 के लिए भाविका अग्रवाल को अध्यक्ष चुना है। भाविका सुजानगढ़ ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रदीप कुमार व पार्षद निर्मला तोदी की पुत्री हैं और उनके नेतृत्व में एसोसिएशन अपनी 35 वर्षों की परंपरा को और मजबूत करेगी। क्लिवलैंड में बसे लगभग 500 मारवाड़ी परिवारों को जोड़ने के उद्देश्य से यह संस्था प्रति वर्ष सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है, जिससे समुदाय को अपनी परंपराओं से जुड़े रहने का अवसर मिलता है। भाविका के पति सचिन अग्रवाल, जो सरदारशहर निवासी हैं, ऐरोस्पेस इंजीनियर हैं। भाविका की इस उपलब्धि पर समुदाय में हर्ष का माहौल है और उनसे नए कार्यकाल में एसोसिएशन को और ऊंचाइयों तक ले जाने की उम्मीद की जा रही है। भाविका अग्रवाल के अध्यक्ष बनने पर महावीर बगड़िया, माणकचंद सर्राफ, नवरतन भेभराजका, सुरेश शोभासरिया, दिनेश पंसारी, डॉ. योगिता सक्सेना, जितेंद्र मिरणका, हरी मोदी, मदन मोहन मंगलूणिया, पवन दादलिका सहित अनेक लोगों ने खुशी जाहिर करते हुए उन्हें बधाई दी है।

करोड़ों रुपए की मादक पदार्थ तस्करी में लिप्त वाहन मालिक गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। कस्बे में मेगा हाईवे पर मालासर टोल नाका के पास पौने तीन करोड़ की जब्त डोडापोस्त प्रकरण में पुलिस ने मादक पदार्थ की तस्करी के उपयोग में लिए जा रहे वाहन मालिक को प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया है। मामले की जांच कर रहे राजलदेसर थानाधिकारी कमलेश कुमार ने भीलवाड़ा के बिगोद निवासी 27 वर्षीय सोजीराम मीणा को मध्यप्रदेश की मंदसौर जेल से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि प्रकरण में आर्थिक सहयोग करने वाले 30 वर्षीय भीलवाड़ा निवासी भैरूलाल जाट को 27 जनवरी को गिरफ्तार किया था। आरोपी हनुमानगढ़ के संगरिया थाने में चार साल से व गुजरात के हरनी थाना में करीब एक वर्ष से मादक पदार्थ की तस्करी के आरोप में वांछित चल रहा था। प्रकरण के अनुसार 17 जनवरी को पुलिस ने खाद से भरे एक ट्रक से 97 कट्?टों डोडापोस्त छिलका बरामद किया, जिसका वजन एक हजार 905 किलो 650 ग्राम था, जिसका बाजार मूल्य करीब पौने तीन करोड़ रुपए था। प्रकरण में गिरफ्तार ट्रक चालक 21 वर्षीय भैरूलाल मीणा से पूछताछ शुरू की गई, तो सामने आया कि वह, ट्रक मालिक सोजीराम व भैरूलाल जाट की ओर से उक्त डोडा ली गई थी, जिसे पंजाब लेकर जा रहे थे कि मालासर टोल के पास रतनगढ़ पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। घटना में भैरूलाल मीणा चालक था, भैरूलाल जाट ने उन्हें आर्थिक सहयोग प्रदान किया और सोजीराम ने उन्हें ट्रक उपलब्ध करवाया था। पुलिस ने इस प्रकरण में एक नाबालिग को निरुद्ध भी किया था।

टायर फटने से चारे से भरी पिकअप पलटी

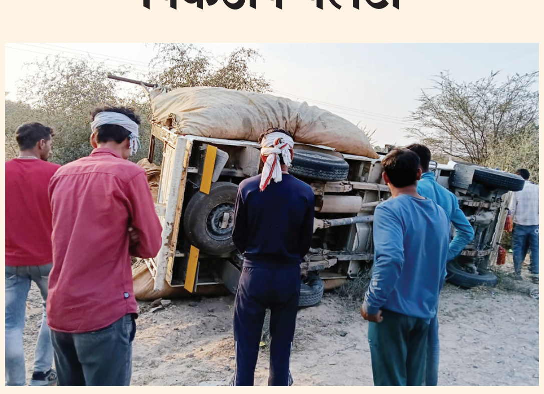

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। मेगा हाईवे पर पशु चारे से भरी पिकअप का सोमवार को अचानक टायर फट गया। घटना के बाद सड़क पर दौड़ती पिकअप अनियंत्रित होकर पलटी खा गई। हादसे की सूचना पर कांग्रेस नेता रामवीरसिंह राईका एवं बुधवाली सरपंच प्रतिनिधि बाबूलाल स्वामी मौके पर पहुंचे और पिकअप में फंसे 27 वर्षीय चालक को बाहर निकालकर पुलिस को सूचना दी। वहीं चालक को उपचार के लिए अस्पताल लेकर आए। घटना तहसील के गांव चैनपुरा के पास की है। मामले के अनुसार सारसर निवासी 27 वर्षीय पालाराम पुत्र सोहनलाल लुहार पिकअप में पशु चारा भरकर रतनगढ़ से सरदारशहर की तरफ आ रहा था कि गांव चैनपुरा के पास दौड़ती पिकअप का अचानक टायर फट गया और अनियंत्रित होकर सड़क पर पलटी खा गई। घटना में पालाराम के चोट आई है, जिसे गोगासर सीएचसी में भर्ती करवाया, जहां पर प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी। वहीं मौके पर पहुंची हाईवे पुलिस ने घटना की जानकारी ली।

दलित, आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन विशेष जागरूकता शिविर आज

बीकानेर(निस)। औद्योगिक विकास में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्गों की प्रभावी भागीदारी के लिए डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजस्थान दलित, आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना के तहत विशेष जागरूकता शिविर का आयोजन मंगलवार प्रातः 11 बजे जिला उद्योग व वाणिज्य केन्द्र रानीबाजार चौपड़ा कटला में किया जाएगा। जिला उद्योग व वाणिज्य केन्द्र की महाप्रबन्धक मंजू नैण गोदारा ने बताया कि शिविर में पात्र व्यक्तियों को उद्यम की स्थापना, विस्तार, विविधिकरण व आधुनिकीकरण के लिए विभिन्न प्रकार की वित्तीय सहायता, अनुदान एवं अन्य सुविधाओं संबंधी प्रावधान से संबंधित जानकारी दी जाएगी।

सहकारिता सामाजिक एकता और समृद्धि की कुंजीः सुराणा

जिला कलक्टर ने किया अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष - 2025 का पोस्टर विमोचन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने सोमवार को डीओआईटी वीसी सभागार में अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष - 2025 के अवसर पर पोस्टर का विमोचन किया। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि सहकारिता केवल आर्थिक विकास का माध्यम ही नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और समृद्धि की कुंजी भी है। उन्होंने 'सहकार से समृद्धि' के संदेश को दोहराते हुए सहकारी संस्थाओं से आपसी सहयोग को बढ़ावा देने की अपील की। दी चूरू सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक के प्रबंध निदेशक मदन लाल ने बताया कि बैंक किसानों, दुग्ध उत्पादकों और ग्रामीण उद्यमियों को बेहतर बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि 'सहकारिता में सहकार' के तहत सभी सहकारी संस्थानों को परस्पर सहयोग कर गांव-गांव तक आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करना चाहिए। उन्होंने बताया कि इस पहल का उद्देश्य सहकारी आंदोलन को सशक्त बनाना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करना है। इस अवसर पर 'म्हारो खातो म्हारो बैंक' अभियान को और प्रभावी बनाने पर बल दिया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य दुग्ध उत्पादक समितियों और सहकारी बैंकों के बीच समन्वय स्थापित करना है, जिससे किसानों और दुग्ध उत्पादकों को सहज एवं सुलभ वित्तीय सेवाएं उपलब्ध हो सकें। इस पहल के तहत ग्रामीण उद्यमियों को भी सहकारी बैंकिंग सुविधाओं से जोड़ा जा रहा है, जिससे वे सस्ती और सुविधाजनक ऋण योजनाओं का लाभ उठा सके। कार्यक्रम में गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना पर विशेष चर्चा की गई। यह योजना दुग्ध उत्पादकों के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता योजना है, जिसके अंतर्गत उन्हें कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराई जाती है। यह पूंजी पशु आहार, दवा, देखभाल आदि पशुपालन संबंधी आवश्यकताओं के लिए उपयोग की जा सकती है। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि इस योजना से ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों की आय में वृद्धि होगी और पशुपालन व्यवसाय को नई दिशा मिलेगी। कार्यक्रम में ग्राम सेवा सहकारी समितियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की गई। ये समितियां ग्रामीण किसानों को उर्वरक, बीज, कीटनाशक, कृषि यंत्र और वित्तीय सहायता प्रदान कर स्थानीय स्तर पर कृषि और सहकारिता के विकास में योगदान दे रही हैं। जिला प्रशासन और सहकारी बैंक मिलकर इन समितियों को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं, ताकि हर गांव तक सहकारी सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित की जा सके। इस दौरान एडीएम अर्पिता सोनी, सीईओ श्वेता कोचर, कृषि संयुक्त निदेशक मुकेश माथुर, सहकारिता उप रजिस्ट्रार डॉ सुनील मांड़िया, सहकारी बैंक के अधिकारी व अन्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी ने सहकारिता आंदोलन को और अधिक प्रभावी बनाने और सहकारी संस्थाओं को सुदृढ़ करने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लिया।

बीकानेर भामाशाहों की नगरी, शहरी क्षेत्र के विकास में इनकी अहम भूमिकाः व्यास

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास ने कहा कि बीकानेर भामाशाहों की नगरी है। शहर के विकास में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान रखते हुए 'मेरी मातृभूमि-मेरी जिम्मेदारी' अभियान प्रारम्भ किया गया है। विधायक ने सोमवार को सूचना केन्द्र सभागार में आयोजित समारोह के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि अभियान से प्रेरित होकर रोटरी क्लब की ओर से जनसंपर्क कार्यालय को कम्प्यूटर, प्रिंटर, एसी सहित अन्य सामग्री उपलब्ध करवाई गई है। इससे कार्यालय के कार्य सम्पादन को और गति मिलेगी। उन्होंने बताया कि अभियान के माध्यम से स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी कार्यालयों में आधारभूत सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं। इस दौरान विधायक व्यास ने कहा कि सूचना केन्द्र सभागार को अत्याधुनिक कांफ्रेंस हॉल के रूप में विकसित किया जाएगा। उन्होंने उपनिदेशक (जनसंपर्क) को इसके प्रस्ताव मुहैया करवाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उन्होंने रोटरी क्लब के पदाधिकारियों का सम्मान किया।

रोटरी क्लब के अध्यक्ष सुनील सारड़ा ने कहा कि क्लब की ओर से सामाजिक सरोकारों के कार्य निरंतर किए जा रहे हैं। उन्होंने अब तक की गतिविधियों के बारे में बताया। जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद पचीसिया ने अभियान की रूपरेखा के बारे में बताया और कहा कि इसके लिए देशभर में रहने वाले प्रवासी बीकानेर वासियों से संपर्क किया जा रहा है। रोटेरियन मनमोहन कल्याणी ने सूचना केन्द्र को युवाओं के लिए उपयोगी बताया और कहा कि भविष्य में भी यहां विभिन्न आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई जाएगी। वरिष्ठ साहित्यका राजेन्द्र जोशी ने सूचना केन्द्र में संचालित साहित्यिक गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यहां कांफ्रेंस हॉल विकसित होने से इनमें और गति आएगी।

जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक हरि शंकर आचार्य ने विधायक की ओर से संचालित अभियान और रोटरी क्लब का आभार जताया। इस दौरान जनसंपर्क अधिकारी सुरेश बिश्नोई, रोटरी क्लब सुप्रीम के अध्यक्ष पृथ्वी राज रतनू, राजेन्द्र भार्गव, रोटरी क्लब के मुकेश व्यास, मनीष तापड़िया, किशन मूंधड़ा, सुशील आचार्य, अमित व्यास, किशन चौधरी, जोगेन्द्र शर्मा और मुरली व्यास सहित जनसंपर्क कार्यालय के कार्मिक मौजूद रहे।

जिला पुलिस अधीक्षक ने अपराध गोष्ठी में दिए अपराधों की रोकथाम के प्रभावी दिशा-निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। रिजर्व पुलिस लाइन सभागार में सोमवार को जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव की अध्यक्षता में अपराध गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एसएसपी यादव ने अपराध गोष्ठी में सर्किल तथा थाना क्षेत्र में होने वाले अपराधों व उनकी रोकथाम के लिए किए गए प्रयासों की जानकारी दी और अपराधों की रोकथाम के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत सरकार की ओर से नए आपराधिक कानून बीएनएस व बीएनएसएस के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राजस्थान राज्य को मॉडल स्टेट बनाया जाना है, इस सम्बन्ध में जिले के समस्त पुलिस अधिकारियों को राजस्थान मॉडल के अनुरूप नए आपराधिक कानून 2023 के सफल क्रियान्वयन के निर्देश दिये। यादव ने गुण्डा एक्ट 170 बीएनएसएस, राजपासा व अन्य अपराधियों के खिलाफ ऑनलाईन डाटा अपडेट करने तथा प्रत्येक कार्यवाही विवरण को सीसीटीएनएस मॉड्युल पर निरन्तर अपडेट करने के लिए निर्देशित किया। इसके साथ ही मालखाना में जप्त माल व धारा 52ए एनडीपीएस एक्ट में जप्त माल व वाहनों के निस्तारण के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में अन्य राज्य व जिले से जो संदिग्ध व्यक्ति, किरायेदार, नौकर व अपराधी चूरू में निवास कर रह रहे हैं, उनको चैक करने व होटल, ढ़ाबा, डेरों आदि स्थानों पर रहने वाले नौकर व किरायेदारों की सम्बन्धित थानों से तस्दीक करवाने के लिए जिला स्तर पर विशेष अभियान चलाया गया है, जिसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक निर्देश दिये गये। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक चूरू, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुजानगढ़, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजगढ़, व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एसआईयूसीएडब्ल्यू चूरू सहित जिले के समस्त वृताधिकारी व थानाधिकारी उपस्थित रहे।

लूणकरणसर विधानसभा क्षेत्र में 4 करोड़ 20 लाख रुपए की सड़कें स्वीकृतः गोदारा

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। खाद्य व नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने कृषि विपणन निदेशालय के माध्यम से लूणकरणसर विधानसभा क्षेत्र में 4 करोड़ 20 लाख रुपए की सड़कें स्वीकृत करवाकर क्षेत्रवासियों को बड़ी सौगात दी है। मंत्री गोदारा ने बताया कि गांव सुंई से खोड़ाला तक 6 किलोमीटर सड़क के लिए 2 करोड़ 10 लाख, रामसर से मूंडसर (कस्वां ढाणी से मेघवालों की ढाणी) 3 किलोमीटर व गुसाईसर से शेरेरा 3 किलोमीटर सड़कों के लिए 2 करोड़ 10 लाख रुपए स्वीकृत हुए हैं। उन्होंने बताया कि सूंई से खोड़ाला सड़क निर्माण होने से क्षेत्र के 30-35 गांवों को आवागमन में सुलभता होगी तथा समय व धन की बचत होगी। गौरतलब है कि सूंई से खोड़ाला सड़क निर्माण होने से क्षेत्र के 30-35 गांवों का पल्लू, हनुमानगढ़, सरदारशहर से सीधा जुड़ाव होगा। पशुधन बाहुल्य लूणकरणसर क्षेत्र में हनुमानगढ़, पल्लू से बड़ी मात्रा में पशु चारा आयातित होता है। ऐसे में किसानों, पशु चारा ढोने वाले वाहनों को सड़क निर्माण होने से सीधा लाभ मिलेगा। मंत्री सुमित गोदारा ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को शीघ्र कार्य शुरू करवा कर गुणवत्तापूर्ण तरीके से समय पर कार्य पूरा करवाने के निर्देश दिए हैं। मंत्री सुमित गोदारा ने कहा कि प्रदेश सरकार विकास के लिए संकल्पबद्ध है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र और राज्य सरकार सबका साथ सबका विकास की नीति पर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सरकार प्रदेश के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है और जनता को सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयास रहता है। मंत्री सुमित गोदारा ने बताया कि विधानसभा क्षेत्र में सड़कों का जाल बिछाकर परिवहन सुविधाओं को बेहतर करने का काम लगातार जारी है। क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पानी, बिजली के क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार कर शिक्षित लूणकरणसर विकसित लूणकरणसर के संकल्प को पूरा करने कि दिशा में लगातार तेज गति से काम किया जा रहा है। सड़कों की स्वीकृति मिलने पर सुंई, खोड़ाला, रामसर, मूण्डसर, गुंसाईसर, शेरेरा के ग्रामीणों ने आतिशबाजी कर जश्न मनाया तथा कैबिनेट मंत्री सुमित गोदारा का आभार प्रकट करते हुए खुशी जताई।

बस स्टैंड पर बसों के ठहराव की मांग, ज्ञापन देकर लगाई गुहार

सरदारशहर(निस)। तहसील के गांव हरियासर घड़सोतान के ग्रामीणों ने बस स्टैंड पर सरकारी और लोक परिवहन बसों के न रुकने की समस्या को लेकर उपखंड अधिकारी डॉ दिव्या चौधरी को ज्ञापन सौंपा। ग्रामीणों का कहना है कि पिछले कई वर्षों से बस स्टैंड पर कोई बस नहीं रुक रही है। जिससे विद्यार्थियों, महिलाओं और बुजुर्ग नागरिकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि इस मुद्दे को लेकर पहले भी कई बार मुख्य प्रबंधक को अवगत कराया गया। लेकिन कोई सुनवाई नहीं की गई। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि अगले दो दिनों में इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो सभी ग्रामवासी हरियासर घड़सोतान बस स्टैंड पर विरोध प्रदर्शन करेंगे। इस प्रदर्शन से जयपुर से श्रीगंगानगर के बीच यातायात बाधित हो सकता है। ज्ञापन सौंपने के दौरान धर्मवीर शर्मा, भेरू सिंह राठौड़, भंवर सिंह राठौड़, गोविंद सिंह, अनिल शर्मा, हेमंत शर्मा, प्रताप और श्याम लाल शर्मा सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों ने एसडीएम से परिवहन विभाग पर त्वरित कार्रवाई करने की मांग की है ताकि उनकी समस्या का जल्द हल हो सके।

किसानों को कृषक कल्याण योजनाओं का समुचित लाभ मिलेः सुराणा

जिला कलक्टर ने ढाणी बड़ी व नेशल ग्राम पंचायत में फार्मर रजिस्ट्री शिविर का किया अवलोकन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने सोमवार को सिद्धमुख तहसील की ढाणी बड़ी व राजगढ़ तहसील की नेशल ग्राम पंचायत में चल रहे फार्मर रजिस्ट्री शिविर का अवलोकन किया तथा नेसल में बालिकाओं के लिए बनाई गई लाइब्रेरी में व्यवस्थाएं देखी। इस अवसर पर जिला कलक्टर सुराणा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की कृषक समृद्धि की मंशानुरूप किसानों को कृषक कल्याण योजनाओं का समुचित लाभ मिले। शिविरों में आने वाले किसानों को फैसिलिटेट करते हुए उनकी फार्मर आईडी बनाएं। इसके लिए कांउटरों पर समुचित प्रबंधन किया जाए। उन्होंने कहा कि पीएम किसान सम्मान निधि के लाभार्थी किसानों को आमंत्रित करते हुए शत प्रतिशत फार्मर आईडी बनाएं। किसानों को स्वयं गिरदावरी करने के बारे में भी जानकारी दें और प्रयास करें कि अधिकतम किसान स्वयं गिरदावरी करें। इसी के साथ अन्य विभागों के अधिकारी, कर्मचारी भी शिविरों में आने वाले आमजन से उनकी समस्याएं सुनें और यथासंभव त्वरित निस्तारण करें। उन्होंने उपस्थित आमजन से कहा कि खाद्य सुरक्षा योजनांतर्गत पोर्टल खोला गया है। इसलिए पात्रता रखने वाले आमजन आवेदन करें। इसी क्रम में पीएम आवास योजनांतर्गत पंचायतीराज अधिकारियों के माध्यम से आवेदन करें। पशुपालक मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना अंतर्गत आवेदन कर अपने पशुधन का बीमा करवाएं। सुराणा ने शिविर में प्रत्येक काउंटर पर जाकर फार्मर आईडी बनाने की प्रक्रिया की जानकारी ली और शिविर का अवलोकन किया और किसानों को फार्मर आईडी का सत्यापन प्रमाण-पत्र प्रदान किया। इसी के साथ उन्होंने आभा आईडी, स्वच्छता, जल भराव सहित विभिन्न बिन्दुओं के बारे में भी जानकारी दी। एसडीएम मीनू वर्मा ने व्यवस्थाओं की जानकारी देते हुए किसानों को शिविरों व योजना के बारे में किसानों को जागरूक किया। इस अवसर पर सिद्धमुख तहसीलदार कालूराम, बीडीओ राजेन्द्र कुमार, ढ़ाणी बड़ी सरपंच मनोज देवी सहित अन्य किसान उपस्थित रहे। नेशल में जिला कलक्टर ने ग्रामीण विकास योजनाओं, स्वच्छता, पीएम आवास योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम सहित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। तहसीलदार धीरज झाझड़िया ने शिविर व्यवस्थाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर जिला कलक्टर ने बालिकाओं के लिए ग्राम पंचायत की ओर से बनाई गई लाइब्रेरी का अवलोकन कर व्यवस्थाएं देखी। उन्होंने लाइब्रेरी में अध्ययन कर रही बालिकाओं से संवाद करते हुए गाइडेंस दिया। इस दौरान एसडीएम मीनू वर्मा, नेसल सरपंच सुभिता कड़वासरा सहित अन्य अधिकारी, जनप्रतिनिधि व किसान उपस्थित रहे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।